Delhi Postal Regd. No. DL© -01/1272/2021-23 R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

भिक्षु वाणी

मछ गलागल लोक में,
सबला ते निबलां नें खाय।

लोक में मत्स्य न्याय चल रहा है। सबल निर्बल को खा रहा है।

नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 52 • 02 अक्टूबर - 08 अक्टूबर, 2023 | प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 06-10-2023 • पेज 16 | ₹10 रुपये

आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे संतों का मिलना देश की जनता का सौभाग्य : मोहन भागवत

राष्ट्रधर्म और अध्यात्म की सेवा करते रहें भागवतजी : आचार्यश्री महाश्रमण

२१ सितम्बर २०२३
नन्दनवन, मुम्बई

ऑनलाईन पढ़ने के लिए terapanthtime.com

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाया ने कि प्रश्न होता है कि जीवन क्यों जीयें? उद्देश्य क्या है? जीवन तो सभी जीव जीते हैं पर मानव एक विशिष्ट प्राणी होता है। आदमी के पास चिंतन की क्षमता अपने-अपने स्तर की होती है। जीवन उद्देश्यपूर्ण हो। अनेक संदर्भों में अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित किया जा सकता है लेकिन मानव जीवन में पूर्व कर्म क्षय करने का भी एक लक्ष्य हो। आत्मवाद का सिद्धान्त है कि आत्मा शाश्वत है। भगवद् गीता में भी बताया गया है कि आत्मा अक्लेद्य, अशोष्य, अदाह्य है। आत्मा नया जन्म धारण करती रहती है। आत्मा के जन्मों में कर्मों का बंधन होता है। मानव जीवन का परम लक्ष्य कर्मों को काटने का होना चाहिये। भारत में संत परंपरा में साधु बनने का लक्ष्य कर्म काटने का ही होता है। अहिंसा, संयम और तपस्या की साधना कर्म काटने के लिए की जाती है। आत्मा विशुद्धि को प्राप्त कर सकती है।

अभी पर्युषण पर्व के अंतर्गत संवत्सरी महापर्व आया था। कल क्षमायाचना का दिन था। तेरापंथ धर्मसंघ को शुरू हुए २६३ वर्ष हो चुके हैं। आचार्य भिक्षु हमारे प्रथम आचार्य थे। अष्टम् आचार्य कालूगणी का आज ही के दिन भाद्रव शुक्ला षष्टम् को ८७ वर्ष पूर्व महाप्रयाण हुआ था। उनके दो शिष्य आचार्य बने थे। आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञजी। पूज्य कालूगणी के समय ही जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा का प्रादुर्भाव हुआ था। लगभग राष्ट्रीय स्वयं सेवक का भी उस समय प्रादुर्भाव हुआ था। भगवान महावीर एक उच्च पुरूष थे जो सर्व मानव जाति के उद्धारक थे। जैन शासन के वे अंतिम तीर्थंकर थे। उनके निर्वाण का २५५०वां वर्ष भी चल रहा है।

दुनिया में अनेक महापुरूष राह बताने वाले होते हैं। भारत में अनेक ग्रंथ हैं, जिनसे अध्यात्म का शिक्षण मिलता रहे। ग्रंथ, पंथ और संत-संपदा का अच्छा लाभ उठाने का प्रयास किया जाये। संतों के मार्गदर्शन से समाज भी स्वस्थ रह सकता है। गृहस्थ जीवन में भी अच्छा जीवन जीयें। आचार्य तुलसी द्वारा प्रारंभ किये गये। अणुव्रत आन्दोलन का भी ७५वां वर्ष मनाया जा रहा है। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम जीवन में हो। मनुष्य जन्म दुर्लभ बताया गया है। उसका हम अच्छा उपयोग करें। जिनको साधुत्व प्राप्त हो जाता है। वह तो बहुत ऊंची बात हो जाती है। गृहस्थ जीवन में भी एक सीमा तक अहिंसा रहे। संकल्पपूर्वक हिंसा न हो।

आज के कार्यक्रम में विशेष रूप से समागत राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे राष्ट्रसंत के समक्ष बोलना मैं आवश्यक नहीं समझता, किन्तु आचार्यश्री की आज्ञा का पालन करते हुए बोल रहा हूं। धर्म की भाषा कोई भी हो, सद्-असद् का मापदंड सबका समान है। संत हमें हमेशा पथदर्शन देते रहते हैं। कल्याण त्याग में है, भोग में नहीं। छोड़ने से अमरत्व की प्राप्ति होती है। हमारा देश सौभाग्यशाली है कि हमें आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे संत मिले हैं। हमें सदाचार से परमार्थ करते हुए अणुव्रत का पालन करना चाहिये। अच्छे मनुष्य तो बुराई में से भी अच्छाई निकाल लेते हैं। परिवार समाज की ईकाई है। असत्यता की दुनिया में सत्य को निष्कासित किया जा रहा है। संतों की प्रेरणा से सदाचार के साथ मनुष्य जीवन का सही उपयोग करना सीखें। आचार्यश्री जैसे संत जगह-जगह विचरण कर जीवन का सार बतायेंगे तो लोगों का कल्याण हो सकता है। भय का निवारण धर्म से ही हो सकता है। मैं अपनी आध्यात्मिक ऊर्जा को चार्ज करने के लिए आचार्यश्री महाश्रमणजी के पास आता हूं।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर-संघचालक मोहन भागवत को संबोधित करते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि आज मोहनजी भागवत का समागमन हुआ है। आज के कार्यक्रम में भागवतजी का भी संभाषण हुआ। विशिष्ट व्यक्तित्व विशिष्ट स्थान पर हो, फिर मनीषी हो, चिन्तन की प्रधानता हो, व्यवहार से भी लगे कि एक महान व्यक्तित्व है। ऐसे व्यक्तियों के भाषण से मार्गदर्शन मिल सकता है। प्रचारक का भी जीवन कुछ अंशों में साधु जैसा ही संयमी होता है। ज्ञानी पुरुषों के संपर्क से नया चिन्तन नया पथदर्शन प्राप्त हो सकता है। आप राष्ट्र, धर्म की खूब सेवा करते रहें। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अच्छा धार्मिक आध्यात्मिक कार्य करता रहे।

पूज्यवर से तपस्वियों ने अपने धारणानुसार तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। आचार्य महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति अध्यक्ष मदनलाल तातेड़ ने मोहनजी भागवत के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी एवं साहित्य भेंट कर मोहनजी भागवत का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

पर्युषण पर्व के शिखर दिवस भगवती संवत्सरी महापर्व का भव्य आयोजन

आचार्यश्री महाश्रमण ने संवत्सरी को किया 'भगवती' अलंकरण से अलंकृत

जैन धर्म में नहीं होता संवत्सरी जैसा कोई पर्व : आचार्यश्री महाश्रमण

१९ सितम्बर २०२३
नन्दनवन, मुम्बई

ऑनलाईन पढ़ने के लिए terapanthtime.com

अध्यात्म जगत के शिखर पुरुष महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पर्युषण पर्व के शिखर दिवस 'संवत्सरी महापर्व' पर नन्दनवन में श्रद्धालुओं से जनाकीर्ण बने तीर्थंकर समवसरण में पावन देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आज जैन धर्म का पावन महापर्व संवत्सरी है, जो वर्ष भर में एक बार आता है। वर्ष भर में संवत्सरी जैसा कोई पर्व नहीं होता है। आज के दिन प्रायः सभी चारित्रात्माएं एवं समणी वर्ग चौविहार उपवास करते हैं। श्रावक-श्राविका समाज व कितने-कितने बच्चे उपवास-पौषध की आराधना करते हैं। आज का दिन क्षमा और मैत्री से जुड़ा दिन भी है। पर्युषण-संवत्सरी कितना आध्यात्मिक महोत्सव का दिन है। लगभग नौ दिन का यह कार्यक्रम हो जाता है।

अध्यात्म साधना के महापर्व पर्युषण का शिखर दिन है- संवत्सरी महापर्व। आज संवत्सरी को 'भगवती' के अलंकरण से अलंकृत किया जाता है। आज से संवत्सरी को भगवती संवत्सरी कहा जा सकता है। भगवती संवत्सरी आराधनीय है। आज के दिन जैसी धर्माराधना संभवतः किसी अन्य दिन में देखने को नहीं मिलती है। जैन शासन में नमस्कार महामंत्र का भी अलग महत्व है। नमस्कार महामंत्र को धारण करने वाला, जप करने वाला जैन होता है। श्रावकों में जैनत्व रहे, जैन जीवन शैली रहे।

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा को आगे बढ़ाते हुए फरमाया कि प्रणत देवलोक का आयुष्य पूर्ण कर नयसार की आत्मा २७वें भव में प्रवेश कर रही है। चौथे आरे के ७५ वर्ष १० महीने शेष थे। आषाढ़ शुक्ला छठ के दिन प्रभु महावीर की आत्मा देवलोक से च्युत हुई और इसी भरत क्षेत्र में वैशाली नगरी के उपनगर ब्रह्मकुण्ड ग्राम के ऋषभदत्त की भार्या देवानन्दा ब्राह्मणी की कुक्षी में वह आत्मा प्रविष्ट होती है। भावी तीर्थंकर की माता होना कितने बड़े सौभाग्य की बात है। कुछ समय बाद ही देवताओं द्वारा उनके गर्भ को त्रिशला के गर्भ में हस्तांतरित किया गया। इस दौरान त्रिशला ने चौदह दिव्य स्वप्न देखे। गर्भ काल के दौरान माता को कष्ट होता देख कर शिशु ने गर्भ में हलन-चलन बंद कर दिया। इससे त्रिशला माता अधिक दुखी हो गई। शिशु ने पुनः हलन-चलन प्रारंभ किया और गर्भ में ही यह संकल्प कर लिया की माता-पिता के रहते हुए मैं दीक्षा नहीं लूंगा।

शेष पृष्ठ १५ पर ...

दु:खों से छुटकारा पाने का उपाय है अध्यात्म की आराधना करना, आत्म निग्रह की साधना करना, साधु बनना और उसका यावज्जीवन पालन करना।

- आचार्यश्री महाश्रमण

मुख्य प्रवचन

पर्युषण पर्वाराधना का सप्तम दिवस : ध्यान दिवस

जैन जगत एवं अध्यात्म जगत में तीर्थंकर का स्थान सर्वोच्च : आचार्यश्री महाश्रमण

१८ सितम्बर २०२३
नन्दनवन, मुम्बई

ऑनलाईन पढ़ने के लिए terapanthtime.com

पर्वाधिराज पर्युषण के सातवें दिन ध्यान दिवस पर ध्यान योगी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा के अंतर्गत फरमाया कि जैन जगत एवं अध्यात्म जगत में तीर्थंकर का स्थान सर्वोच्च होता है। भौतिक दुनिया में सबसे बड़ा पद चक्रवर्ती का होता है। उनके बाद वासुदेव का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है।

वीर प्रभु की आत्मा वासुदेव के रूप में त्रिपृष्ठ नाम वाले व्यक्तित्व के रूप में अभी मनुष्य का जीवन जी रही है। एक बार वासुदेव त्रिपृष्ठ रात्रि में संगीत सुन रहे होते हैं। वे अपने सेवक को उनके सो जाने के पश्चात् उन्हें नींद आने पर संगीत को बंद करने का आदेश देते हैं, किन्तु सेवक द्वारा ऐसा नहीं किए जाने पर आक्रोशित त्रिपृष्ठ ने अपने सेवक के कानों में गर्म शीशा डलवा दिया और वह सेवक तड़पकर मृत्यु को प्राप्त हो गया। उस समय पोतनपुर में तीर्थंकर श्रेयांसनाथ पधारते हैं। उनका प्रवचन होता है। एक दिन त्रिपृष्ठ और अचल ने भगवान की देशना सुनी। प्रवचन के प्रवाह में श्रोता बह जाता है। वह प्रवचन भीतर को छू जाता है, जिससे प्रेरणा प्राप्त हो जाये तो जीवन में उत्थान हो जाये। देशना सुनने से त्रिपृष्ठ को सम्यक्त्व प्राप्त हुआ। कुछ समय बाद वह सम्यक्त्व चला भी गया।

अनेक हिंसक कार्य करते हुए त्रिपृष्ठ अपना आयुष्य पूर्ण कर सातवें नरक में पैदा हुए। कर्म किये हैं तो उनका फल तो भोगना ही होता है। तीर्थंकरों को भी कर्म का फल भोगना पड़ता है। क्रूर कर्म से प्रभु की आत्मा सातवें नरक में उत्पन्न हुई। प्रभु की आत्मा उसके बाद तिर्यन्च गति में उत्पन्न होती है। वहां से आयुष्य पूर्ण कर बीसवें भव में सिंह के रूप में पैदा हुई। उसके बाद प्रभु की आत्मा चौथे नरक में पहुंच गई। २२वें भव में नयसार की आत्मा मनुष्य रूप में जन्म लेकर राजकुमार विमल के रूप में राजा प्रियमित्र के यहां उत्पन्न होती है। विमल कुमार बड़े नीति-निपुण और करुणाशील होते हैं। उन्होंने एक बार शिकारी को धर्म की बात समझाते हुए हिरणों को मारने से बचा दिया और शिकारी को भी हत्या के पाप से बचा लिया। धर्म की प्रेरणा देना, किसी को हत्या का त्याग करा देना कितना कल्याणकारी होता है।

२३वें भव में भगवान की आत्मा पश्चिमी महाविदेह में मुकानगरी में चक्रवर्ती के रूप में राजा धनंजय के घर प्रिय मित्र के रूप में जन्म लेती है। इस भव में प्रभु की आत्मा चक्रवर्ती का सम्मान प्राप्त कर २४वें भव में सातवें देवलोक में उत्पन्न होती है। वहां से आयुष्य पूर्ण कर फिर वह आत्मा २५वें भव में राजकुमार नंदन के रूप में राजा जीतशत्रु के यहां जन्म लेती है। नंदन राज्य सत्ता भोगकर संयम ग्रहण करते हैं। लंबी तपस्याएं करते हुए एक लाख वर्ष के संयम पर्याय में निरंतर ११ लाख ६० हजार लगभग मासखमण कर तीर्थंकर नाम गौत्र का उपार्जन कर लेते हैं। राजर्षि नंदन ने दो मास का अनशन कर दसवें देवलोक में देवगति का आयुष्य बंध किया और वहां से वह आत्मा २६वें भव में प्राणत देवलोक में उत्पन्न हो जाती है। वहां बीस सागरोपम का आयुष्य पूर्णता के निकट है।

परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी के युवाचार्य मनोनयन दिवस के संदर्भ में पूज्यवर ने फरमाया कि आज भाद्रव शुक्ला तृतीया है। परम पूज्य कालूगणी ने आज ही के दिन मुनि तुलसी को युवाचार्य पद प्रदान किया था। दायित्व की चद्दर ओढ़ाई गई थी। आचार्य के लिए युवाचार्य मनोयन दिवस महत्वपूर्ण होता है। मैं आचार्यश्री तुलसी का श्रद्धा के साथ स्मरण करता हूं।

ध्यान दिवस पर पाथेय प्रदान कराते हुए ध्यान योगी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि साधु संयम जीवन में स्वाध्याय करे, सेवा करे और तपस्या करे। महाप्रज्ञ श्रुताराधना तत्व ज्ञान का बढ़िया पाठ्यक्रम है और भी पाठ्यक्रम चलते हैं। स्वाध्याय से ज्ञान वृद्धि का क्रम चलता रहे। बाल मुनि-साध्वियां धर्मसंघ की पौध है, खूब विकास करें। अपना समय स्वाध्याय, अध्ययन में लगाने का प्रयास करें। इसके साथ-साथ अच्छे संस्कारों का विकास हो। सेवा में भी संकोच न हो। तपस्या करके भी आत्म-कल्याण किया जा सकता है। ध्यान करना भी अच्छा है।

पूज्यवर ने संवत्सरी महापर्व के संदर्भ में प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाया कि इस पर्युषण पर्व का उच्चतम दिवस संवत्सरी महापर्व आ रहा है। इस दिन साधु-साध्वियां, समणियां तो उपवास करती ही हैं। गृहस्थ भी यथासंभव उपवास करने का प्रयास करें। बच्चों को भी उपवास कराने या जितनी देर संभव हो, उतना त्याग कराने का प्रयास करना चाहिए।

साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी, मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी, साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने ध्यान दिवस पर वक्तव्य व गीत के माध्यम से प्रेरणा प्रदान करवायी। साध्वी संगीतप्रभाजी आदि साध्वीवृंद ने ध्यान दिवस के संदर्भ में गीत का संगान किया। पूज्यवर ने वनिता बाफना को ८० दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान एवं अन्य तपस्वियों को उनकी धारणा के अनुसार तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमारजी ने किया।

पर्युषण पर्वाराधना का छठा दिवस : जप दिवस

नमस्कार महामंत्र के जप की साधना चलती रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

१७ सितम्बर २०२३
नन्दनवन, मुम्बई

ऑनलाईन पढ़ने के लिए terapanthtime.com

पर्युषण महापर्व के छठे दिवस पर मंत्र प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा के अंतर्गत उनके अठारहवें भव में पोतनपुर के राजा प्रजापति के पुत्र वासुदेव त्रिपृष्ठ के भव विवेचन कराते हुए फरमाया कि प्रति वासुदेव अश्वग्रीव अपना भविष्य जानने के लिए ज्योतिष को बुलाता है। ज्योतिष के द्वारा बताया गया कि वह आपके दूत का अपमान करेगा और शेर के आतंक को समाप्त कर देगा। इसके बाद सतर्क होकर अश्वग्रीव अपने दूत चण्डवेग को अन्य राजाओं को अपना संदेश देने के लिए भेजता है। दूत यात्रा करते-करते जब पोतनपुर पहुंचता है तो वहां संगीत का कार्यक्रम चल रहा होता है। कार्यक्रम के मध्य दूत को देखकर त्रिपृष्ठ नाराज हो जाता है और दूत का अपमान करता है। दूत वापस आकर अश्वग्रीव को संवाद बताता है। वह दूत विशेष योग्य होता है जो मौका देखकर बात करता है। दूत वाक्पटु होना चाहिये। अश्वग्रीव को ज्योतिष द्वारा की गई भविष्यवाणी सही होने के संकेत नजर आते हैं। कुछ समय बाद अश्वग्रीव के क्षेत्र में शेर का आतंक होता है। राजा का काम होता है प्रजा की रक्षा करना। वह ग्रामीणों की सुरक्षा के लिये सभी राजाओं की बारी लगाता है। इस क्रम में पोतनपुर के राजा प्रजापति की बारी आती है। राजा के पुत्र त्रिपृष्ठ अपने पिता के स्थान पर स्वयं ग्रामीणों की सुरक्षा के लिये जाते हैं। रथ और शस्त्र को छोड़कर त्रिपृष्ठ निहत्थे शेर से लड़ते हैं और शेर को मार डालते हैं। यह समाचार प्राप्त कर अश्वग्रीव त्रिपृष्ठ को समाप्त करने की योजना बनाता है। अंततः अश्वग्रीव और त्रिपृष्ठ के बीच युद्ध होता है। त्रिपृष्ठ अश्वग्रीव का वध कर वासुदेव बन जाते हैं। हथियार उठाना मजबूरी की बात हो सकती है पर हमारे जीवन में प्राणी मात्र के प्रति मैत्री भाव रहना चाहिये, अहिंसा का भाव रहना चाहिये।

जप दिवस पर श्रद्धालुओं को उद्बोधन प्रदान करते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि आज जप दिवस है। सभी को नमस्कार महामंत्र की एक माला प्रतिदिन फेरने का प्रयास करना चाहिए। जितना संभव हो, नमस्कार महामंत्र आदि के जप में समय लगाने का प्रयास करें तो अच्छा काम हो सकता है। संवत्सरी के संदर्भ में प्रेरणा प्रदान कराते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि परसों संवत्सरी है। सभी को परिवार में छोटे, युवा, बच्चों को संवत्सरी के उपवास की प्रेरणा देनी चाहिये। उपवास के साथ पौषध भी किया जा सकता है। पूज्यवर ने पौषध की विधि व नियमों की जानकारी फरमायी।

साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी, मुख्य मुनिश्री महावीरकुमारजी, साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने जप दिवस पर प्रेरणाएं प्रदान करवायी। मुनि रजनीशकुमारजी एवं मुनि पारसकुमारजी ने अपने भाव व्यक्त किए। साध्वी वैभवप्रभाजी ने जप दिवस के संदर्भ में गीत का संगान किया। पूज्यवर ने तपस्वियों को उनकी धारणा के अनुसार तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमारजी ने किया।

पर्युषण पर्वाराधना का कार्यक्रम

कालू

साध्वी उज्ज्वलरेखाजी एवं सुदीर्घजीवी शतायुपार साध्वी बिदामांजी के पावन सान्निध्य में कालू तेरापंथी सभा द्वारा पर्युषण आराधना का आयोजन बहुत ही उत्साह एवं उमंग के साथ संपन्न हुआ। पर्युषण प्रारंभ के अवसर पर साध्वी उज्ज्वलरेखाजी ने कहा कि पर्युषण पर्व जैन संस्कृति का एक महान पर्व है। यह आत्म शुद्धि का पर्व है। पर्युषण का अर्थ है- अपने आप में स्थित होना, बाहरी दौड़ से हटकर भीतर की ओर मुड़ना, भेदभाव को भूलकर वैमनस्य की दीवारें तोड़कर मैत्री की निर्मल धारा में अभिस्नात होना। पर्युषण पर्व अध्यात्म और श्रद्धा का पर्व है।

खाद्य संयम दिवस- पर्युषण के प्रथम दिन पर खाद्य संयम के महत्व को प्रतिपादित करते हुए साध्वीश्री ने कहा- 'हमारे शरीर में दो मुख्य तंत्र है- पाचन तंत्र और उत्सर्जन तंत्र। हमें भोजन करने से पहले इन दोनों पर ध्यान देना जरूरी है। यह दोनों तंत्र यदि स्वस्थ है तो शरीर की प्रत्येक क्रिया सम्यक रूप से गतिशील रहती है। पाचन तंत्र यदि ठीक है तो जो भोजन किया जाता है, उसका सम्यक पाचन होगा, फलस्वरुप व्यक्ति शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक व्याधियों से मुक्त रहेगा। पाचन तंत्र का संबंध है उत्सर्जन तंत्र से। यदि उत्सर्जन तंत्र स्वस्थ है तो शरीर हल्का एवं मन और इंद्रिय प्रसन्न रहेगी, चिंतन स्वस्थ होगा। उत्सर्जन तंत्र की गड़बड़ी से कब्ज व अपान वायु दूषित हो जाती है।' कार्यक्रम का प्रारंभ महावीर स्तुति से किया गया। साध्वी अमृतप्रभाजी ने चतुर्थ आचार्य जीतमलजी के जीवन पर प्रकाश डाला। साध्वी स्मिथप्रभाजी ने पर्युषण के विषय में अपने विचार व्यक्त किये।

स्वाध्याय दिवस- पर्युषण पर्व का दूसरा दिन स्वाध्याय दिवस के रूप में मनाया गया। साध्वीश्रीजी ने कहा- 'पर्युषण पर्व पुरुषार्थ का पर्व है, दूसरे शब्दों में यह वासनाओं को उखाड़ फेंकने का पर्व है। पर्युषण पर्व सिखाता है आत्म जगत में फिर से नई क्रांति उत्पन्न करना, इंद्रिय भोगों पर अंकुश लगाना। पर्युषण पर्व बाहर से हटकर भीतर प्रवेश का द्वार है।' साध्वीश्री ने कालचक्र का वर्णन करते हुए बताया कि कालचक्र जागतिक ह्रास और विकास के क्रम का प्रतीक है। काल का पहिया नीचे की ओर जाता है तब भौगोलिक परिस्थिति तथा मानवीय सभ्यता और संस्कृति ह्रासोन्मुखी और काल का पहिया जब ऊपर जाता है तब वह विकासोन्मुखी होती है। काल की ह्रासोन्मुखी गति को अवसर्पिणी और विकासोन्मुखी गति को उत्सर्पिणी कहा जाता है। प्रत्येक अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी में छह-छह काल विभाग होते हैं। पूरा कालचक्र २० कोटि-कोटि सागर का होता है। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वियों के द्वारा स्वाध्याय गीत के सामूहिक संगान से हुआ। साध्वी अमृतप्रभाजी ने स्वाध्याय के बारे में अपने विचार व्यक्त किए।

सामायिक दिवस- पर्युषण पर्व का तीसरा दिवस सामायिक दिवस के रूप में मनाया गया। साध्वी उज्ज्वलरेखाजी ने कहा कि पर्युषण पर्व को मनाने की विधियां, तौर-तरीके अनेक हो सकते हैं। यह पर्व बाह्य दर्शन का नहीं है बल्कि आत्मलक्षी बनकर धर्माराधना करने का अनूठा पर्व है। साध्वीश्रीजी ने कुलकर व्यवस्था के बारे में बताते हुए कहा कि यौगलिक व्यवस्था जब धीरे-धीरे टूटने लगती है एवं तब तक दूसरी कोई व्यवस्था जन्म नहीं पाई। अपराध और अव्यवस्था ने एक नई व्यवस्था के निर्माण की प्रेरणा दी। उसके फलस्वरुप कुल व्यवस्था का विकास हुआ। लोग कुल के रूप में संगठित होकर रहने लगे। उन कुलों का एक मुखिया होता वह 'कुलकर' कहलाता। यह शासन तंत्र का आदि रूप था। कुलकर व्यवस्था में सात कुलकर हुए। साध्वीश्रीजी ने आगे कहा कि आज का दिवस सामायिक दिवस है। यह हमारे लिए अन्तरदर्शन की प्रेरणा लेकर आया है। सामायिक का अर्थ है- समता का आचरण। सामायिक अभिव्यक्ति नहीं अनुभूति का क्षण है, प्रदर्शन नहीं दर्शन की प्रक्रिया है। सामायिक योगक्षेम की यात्रा है। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीवृंद के द्वारा सामयिक गीत के संगान से हुआ। साध्वी नम्रप्रभाजी ने सामायिक के विषय में जानकारी दी। तेयुप द्वारा अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया गया, जिसमें लगभग लोगों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

वाणी संयम दिवस- साध्वी उज्ज्वल रेखाजी ने कहा कि मानसिक उच्चता का प्राण बिंदु है धर्म। कालचक्र के तीसरे और के अंतिम समय में जब मानव जगत की अनिवार्य आवश्यकता की पूर्ति में कठिनाई पैदा होनी शुरू हो जाती है ऐसी स्थिति में महामानव का अवतार होता है, जिन्हें जनमानस भगवान ऋषभ के रूप और नाम से पुकारता है। वह इस युग के आदि कर्ता, आदि राजा, आदि गुरु हैं। साध्वी स्मितप्रभाजी ने पर्युषण आराधना के अंतर्गत मौन व्रत की चर्चा करते हुए कहा कि मौन का सामान्य अर्थ है- नहीं बोलना। आध्यात्मिक दृष्टि से मौन का प्रयोजन है- अंतरदृष्टि का विकास करना। मौन प्रत्येक दृष्टि से जीवन के लिए हितकारी है। अवसर को पहचान कर बोलना मौन की सबसे बड़ी कला है।

अणुव्रत दिवस- साध्वी उज्ज्वल रेखाजी के सान्निध्य में पांचवा दिन अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया गया। सभा को संबोधित करते हुए साध्वीश्रीजी ने कहा- 'अणुव्रत का अर्थ है- छोटे-छोटे व्रत। मानवीय आचार संहिता का नाम ही है- अणुव्रत। इन छोटे-छोटे संकल्पों से बहुत बड़ी क्रांति घटित हो सकती है। अणुव्रत ने देश के सभी वर्गों को जीवन मूल्यों से जोड़ा। अणुव्रत के अंतर्गत विद्यार्थी, शिक्षक, कर्मचारी आदि सभी के लिए आचार संहिता बनी हुई है। यह नैतिक क्रांति का आंदोलन है। इस आचार संहिता का पालन करने वाला ही अणुव्रती बन सकता है। इसमें शब्द, जाति, लिंग, रंग आदि का कोई भेद नहीं है।' कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वियों के द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। साध्वी हेमप्रभाजी ने अणुव्रत के विषय में अपने विचार व्यक्त किये।

जप दिवस- पर्युषण आराधना के छठे दिवस पर जप के महत्व को उजागर करते हुए साध्वीश्रीजी ने कहा- 'वर्णमाला का हर अक्षर मंत्र है। जगत में ऐसा कोई अक्षर नहीं है, जो मंत्र ना हो। ऐसी कोई वनस्पति नहीं है, जो औषधि ना हो। अपेक्षा यह है कि उसकी सम्यक संयोजना हो। व्यक्ति आत्म आराधना, कष्ट निवारण, रोग निवारण, इच्छा प्राप्ति, सुख-समृद्धि आदि अनेक कारणों से मंत्र आराधना करता है। नमस्कार महामंत्र जैनियों का सर्वमान्य व सर्वोत्कृष्ट मंत्र है। मंत्र के सतत जप से अनजाने में ही इतने लाभ मिलते हैं, जिसका कोई हिसाब नहीं है। मंत्रों को आत्मविकास के लिए ही अपनाना चाहिए। पर-अनर्थ के लिए मंत्र जपना हानिकारक है, ऐसा करने वाला स्वयं पतन के गर्त में गिरता है।' कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वियों के मंगलाचरण से हुआ। साध्वी अमृतप्रभाजी ने जप के विषय में अपने विचार प्रस्तुत किये।

ध्यान दिवस- परिषद् को संबोधित करते हुए साध्वी उज्ज्वलरेखाजी ने कहा- 'पर्युषण महापर्व सुख-शांति और आनंद की राह दिखाता है। यह बाहर से हटकर आत्मदर्शन का संदेश वाहक आध्यात्मिक पर्व है, आत्म शुद्धि का पर्व है। आत्म शुद्धि का सबसे सुंदर उपक्रम है- आलोचना। दूसरे की नहीं, स्वयं की आलोचना। आलोचना के द्वारा गुरुमुख से प्रायश्चित करके आदमी हल्का, निर्भार हो सकता है। आज ध्यान दिवस हमें गहराई से आत्मावलोकन की प्रेरणा दे रहा है। बाहुबली ने बहिन ब्राह्मी व सुंदरी की प्रेरणा पाकर भीतर में छिपे अहं के शल्य को निकाला और केवलज्ञान प्राप्त कर लिया।' साध्वी अमृतप्रभाजी ने प्रेक्षाध्यान के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वियों के प्रेक्षाध्यान गीत के संगान के साथ हुआ।

संवत्सरी महापर्व - साध्वी उज्ज्वल रेखाजी व सुदीर्घजीवी साध्वी बिदामांजी के सान्निध्य में संवत्सरी महापर्व मनाया गया। जनमेदिनी को संबोधित करते हुए साध्वी उज्ज्वलरेखाजी ने फरमाया- 'यह जैन धर्म का महापर्व शिखर दिन है। यह एक ऐसा पर्व है, जिसमें त्याग और संयम को महत्व दिया जाता है। अन्य पर्वों में व्यक्ति विविध पकवान आदि खाकर मौज-मस्ती से मनाते हैं लेकिन संवत्सरी महापर्व का संदेश त्यागने का है, भोगने का नहीं। छोटे-छोटे बच्चे भी निर्जल उपवास और पौषध की आराधना कर साहस का परिचय देते हैं। यह दिन अपने आपमें निवास करने का दिन है।' साध्वीश्री ने भगवान महावीर की भव परंपरा का उपसंहार करते हुए उनके जीवन के विशिष्ट पहलुओं को उजागर किया।

क्षमापना दिवस- साध्वी उज्ज्वल रेखाजी ने कहा कि क्षमापना दिवस दिन वर्ष भर में हुई भूल के परिमार्जन का दिन है। यह दिन आत्मावलोकन का दिन है। इस दिन व्यक्ति वर्ष भर में हुई भूलों को समता के जल से सफाई कर स्वयं को निर्मल व पवित्र बनाता है। चौरासी लाख जीवयोनि से क्षमा मांग कर अपनी आत्मा को निर्मलतम बनाया जाता है। साध्वीश्रीजी ने सभी से खमत-खामणा किया एवं उपस्थित परिषद् ने भी साध्वीवृंद से खमत-खामणा किया। सभा-संस्थाओं की ओर से खमत-खामणा के संदर्भ में विचाराभिव्यक्तियां की गई।

जयाचार्य का १४३वां निर्वाण दिवस मनाया

सिकन्दराबाद

तेरापंथ भवन, सिकन्दराबाद में साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में श्रीमद् जयाचार्य का स्वर्गारोहण दिवस मनाया गया। इस पर साध्वीश्रीजी ने कहा- 'एक शताब्दी के विरोध के पश्चात् श्रीमद् जयाचार्य ने तेरापंथ का नवनिर्माण किया। परम पूज्य जयाचार्य ने तेरापंथ को अपनी प्रज्ञा से संबुद्ध बनाया। वे व्यवस्था पुरुष, अनुशासन पुरुष और मर्यादा पुरुष थे। तेरापंथ के प्रभावक आचार्यों की परम्परा में उनका नाम तेजस्वी सूर्य की तरह चमकता है। ऐसा लगता है, जिनशासन की प्रभावना के लिए ही उनका अवतरण हुआ था। जन्म से ही दैविक सहयोग सम्बधी उनके जीवन से अनेक घटनाएं जुड़ी हुई हैं, जिनका गौरवशाली इतिहास रहा है।'

साध्वीश्रीजी ने कहा- 'जिनशासन के प्रखर व्यक्तित्व के रूप में उनको हम प्रणाम करते हैं। जयपुर में बनी श्रीमद् जयाचार्य की समाधि भी चमत्कारी है, शक्तिशाली है, देवसेविक समाधि है। जयाचार्य के द्वारा संघ को विकास का शिखर प्राप्त हुआ है। वे एक मंत्रवादी, मंत्र साधक, सिद्धिप्रदायक, समयज्ञ आचार्य थे। उनकी पवित्र विचारधारा ने लाखों-लाखों लोगों का उद्धार किया। उनके प्रति जन-जन में अगाध श्रद्धा भाव है। जयाचार्य का नाम-स्मरण ही विघ्न विनाशक और संकट निवारक है। ऐसे युग पुरुष, प्रज्ञा पुरुष को हम श्रद्धासिक्त नमन कर रहे हैं।'

साध्वी शौर्यप्रभाजी ने कहा- 'जयाचार्य का व्यक्तित्व अनेक विशेषताओं का समवाय था। उनका अगाध समर्पण, श्रुत साधना और श्रुत सम्पदा प्रणम्य है। ऐसे महान व्यक्तित्व को सदियां याद करेगी।'

साध्वीवृंद के द्वारा आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा रचित जयाचार्य अष्टकम् से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। साध्वीवृंद ने सामूहिक गीत का संगान कर अपने श्रद्धा भाव समर्पित किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सिद्धियशाजी ने किया।

वंश वृक्ष प्रतियोगिता

हैदराबाद

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद के अंतर्गत हैदराबाद कन्या मंडल द्वारा वंश वृक्ष प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में १० कन्याओं ने वंश वृक्ष बनाकर भाग लिया। साध्वीश्री डॉ. मंगलप्रज्ञाजी वंश वृक्ष का अवलोकन किया और कन्याओं को जीवन में आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी। हैदराबाद महिला मंडल की अध्यक्षा कविता आच्छा ने सभी कन्याओं को बधाई दी। इन वंशावली की निर्णायिका हैदराबाद ज्ञानशाला क्षेत्रीय संयोजिका संगीता गोलछा और कला की जानकार ममता सिंघवी थी। इस अवसर पर सिकंदराबाद तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मण्डल, तेरापंथ किशोर मंडल, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएं आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल प्रभारी शीतल कोठारी व कन्या मण्डल सह- प्रभारी रेखा संकलेचा ने किया।

आंख बहुत उपयोगी होती है, उसका संयम करना चाहिए।

-आचार्यश्री महाश्रमण

पर्युषण पर्वाराधना के विभिन्न आयोजन

काकीनाड़ा

परमाराध्य आचार्य प्रवर की महती कृपा से काकीनाड़ा क्षेत्र में नवाह्निक पर्युषण आराधना हेतु उपासिकाद्वय सरोज सुराणा एवं रीता सुराणा का आगमन हुआ। पर्युषण पर्व का नवाह्निक आराधना कार्यक्रम व्यवस्थित एवं सुचारू रूप से चला एवं सभी श्रावक-श्राविकाओं के लिए उपयोगी एवं उत्साहवर्धक रहा। उपासिका द्वय ने अपने समय का समुचित नियोजन एवं प्रतिदिन के कार्यों का व्यवस्थित निर्धारण कर आठ दिनों की पर्युषण आराधना को सफल बनाया। विशेषकर संवत्सरी के दिन प्रातः ६:०० से दोपहर १:३० बजे तक कार्यक्रम चला, जिसमें समाज के बच्चे, युवक, महिलाएं, बुजुर्ग आदि कार्यक्रम के अंत तक उपस्थित रहे। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों एवं तेरापंथ कन्या मंडल की कन्याओं द्वारा शिक्षाप्रद कार्यक्रमों का मंचन व तेरापंथी सभा एवं तेरापंथ महिला मंडल सदस्यों द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दी गई। क्षमापना दिवस पर काकीनाड़ा का पूरा समाज उपस्थित रहा व सामूहिक खमत-खामणा का कार्यक्रम उपासिकाद्वय की समुपस्थिति में संपन्न हुआ।

उपासिकाद्वय द्वारा प्रतिदिन प्रातः वंदना के पश्चात मुख्य उद्‌बोधन का कार्यक्रम प्रातः ८:३० से प्रातः ९:३० बजे तक चला, जिसमें निर्धारित आठों दिवसों पर प्रेरणा के साथ-साथ श्रमण महावीर के सभी भवों का विस्तार से विवेचन किया गया। तेरापंथ धर्मसंघ के यशस्वी आचार्यों की जीवन झांकी प्रस्तुत की गई। सायंकाल प्रतिक्रमण एवं तत्व परिचर्चा एवं रात्रिकालीन कार्यक्रम में अर्हत वंदना के पश्चात तत्व चर्चा, ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तरी, ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता आदि उपयोगी कार्यक्रम रखे गये। उपासिकाद्वय ने अपने अनुभव का उपयोग करते हुए धार्मिक चेतना एवं जागरूकता के लिए श्रम का नियोजन किया। श्रावक-श्राविकाओं में तत्व चर्चा का कार्यक्रम आकर्षित व उपयोगी रहा। समय की उपलब्धता के अनुसार धार्मिक परिचर्चा भी रखी गई। परिवारों की सार-संभाल उपक्रम भी साथ साथ चलता रहा। एक दिन में दो परिवारों की सार-संभाल का लक्ष्य रखा गया। वर्तमान में यहां श्रद्धा के चौदह परिवार प्रवासित हैं, सभी परिवारों की सार-संभाल का उपक्रम व्यवस्थित रहा। श्रावक समाज के व्यवसायिक प्रतिष्ठानों के अवलोकन में सभी को छोटे-छोटे संकल्प दिलवाए गये व जीवन में प्रतिदिन कुछ ना कुछ संयम करने की प्रेरणा दी गई। उपासिकाद्वय की प्रेरणा से पर्युषण काल के दौरान कतिपय तपस्याएं भी हुई। सभी श्रावक-श्राविकाओं ने कार्यक्रमों में समय पर उपस्थित होकर लाभ लेने का प्रयास किया।

ईरोड

परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमणजी की आज्ञानुसार समागत प्रवक्ता उपासक अर्जुन मेड़तवाल (उधना) एवं सहयोगी उपासक गहरीलाल बाफणा (सूरत) के निर्देशन में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, ईरोड के तत्वावधान में पर्वाधिराज पर्युषण मनाया गया। पर्युषण का प्रथम दिवस खाद्य संयम दिवस, दूसरा दिन स्वाध्याय दिवस, तीसरा दिन सामायिक दिवस, चतुर्थ दिवस वाणी संयम दिवस, पंचम दिवस अणुव्रत चेतना दिवस, छठा दिवस जप दिवस, सातवां दिवस ध्यान दिवस, आठवां दिवस संवत्सरी महापर्व एवं नौवां दिवस मैत्री दिवस के रूप में बड़े सुंदर तरीके से मनाया गया। संवत्सरी के दिन अष्टप्रहरी २२, छहप्रहरी ६ एवं चतुष्प्रहरी २५ पौषध हुए।

इस अवसर पर अपना वक्तव्य देते हुए प्रवक्ता उपासक अर्जुन मेड़तवाल ने कहा- 'पर्युषण पर्व लौकिक नहीं लोकोत्तर पर्व है। इस पर्व में मनोरंजन को स्थान नहीं बल्कि आत्मरंजन की बात बताई जाती है। आज मनुष्य दुनिया के हर कोने से संपर्क बनाए हुए है। वह सबको जानता है लेकिन अपने आपसे अनभिज्ञ है। संवत्सरी महापर्व ग्रंथि विमोचन का पर्व है। इस पर्व पर हमारे भीतर जमे हुए कषाय रूपी कचरे को, भीतर में जमे हुए मैल को, शल्यों को बाहर निकाल कर परस्पर क्षमा का आदान-प्रदान किया जाता है। एक तरह यह गंगा स्नान का पर्व है। पर्युषण पर्व के सात दिनों में भगवान महावीर के २७ भवों का वाचन किया गया। साथ ही भगवान महावीर के गृहस्थ काल, साधना काल एवं सर्वज्ञता काल का रोचक वर्णन दोनों उपासकों द्वारा सुंदर ढंग से किया गया।

सहयोगी उपासक गहरीलाल बाफणा ने प्रतिदिन के निर्धारित दिवसों के विषयों पर महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए। पूर्व उपासक भंवरलाल चोपड़ा ने भी समय-समय पर अपने भावों की प्रस्तुति दी। तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा सामायिक दिवस के दिन अभिनव समायिक का कार्यक्रम आयोजित किया गया। महासभा उपाध्यक्ष नरेंद्र नखत ने अपने विचार रखे। नवाह्निक कार्यक्रम के प्रारंभ में तेरापंथी सभा अध्यक्ष सुरेंद्र भंडारी ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। तेरापंथी सभा मंत्री दुलीचंद पारख, तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष महेंद्र भंसाली, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा पिंकी भंसाली ने समय-समय पर अपने भावों की प्रस्तुति दी। वरिष्ठ श्रावक धरमचंद बोथरा एवं मंजुदेवी बोथरा ने पारस्परिक खमत-खामणा का कार्यक्रम सुंदर ढ़ंग से संचालित किया। व्यवस्था कार्य में तेरापंथी सभा उपाध्यक्ष दिलीप हिरण का उल्लेखनीय योगदान रहा।

रायचूर

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन आशीर्वाद से एवं महासभा उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक सूर्यप्रकाश सामसुखा के निर्देशानुसार रायचूर कर्नाटक में पर्युषण आराधना करवाने हेतु हैदराबाद से दो उपासिका बहिनें रंजू बैद व अंजू बैद उपस्थित हुई। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रायचूर के तत्वावधान में पर्युषण के सभी दिवसों के कार्यक्रमों को बहुत ही उत्साह के साथ व्यवस्थित रूप में आयोजित किया गया। सर्वप्रथम तेरापंथी सभा के अध्यक्ष माणकचन्द मरोठी ने उपासिकाओं का स्वागत किया। उपासिका बहिनों के साथ सभी परिवारों की परिचय गोष्ठी रखी गई। रायचूर में तेरापंथ के १० परिवार प्रवासित हैं। सभी देव-गुरु-धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठावान व श्रद्धाशील हैं।

पर्युषण पर्व का शुभारंभ जप-तप से किया गया। गुरुदेव द्वारा निर्देशित आठों दिवसों के बारे में उपासिका बहिनों ने जानकारी दी। प्रतिदिन किये जाने वाले कार्यक्रमों की संक्षिप्त रुपरेखा उपासिका रंजू बैद ने उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं के बीच रखी। महासभा द्वारा निर्देशित उपासक आचार-संहिता व श्रावक-निष्ठा पत्र का वाचन उपासिका अंजू बैद ने किया। प्रवचन के समय उपासिका रंजू बैद ने तीर्थंकर परम्परा के अन्तर्गत कालचक्र, छह आरे, तीर्थंकर परंपरा व भगवान महावीर के सताईस भवों एवं सात दिन तक जैन जीवन शैली के नौ सूत्रों की क्रमशः बहुत सुंदर व्याख्या करते हुए सारगर्भित वक्तव्य दिये। इसी क्रम में प्रतिदिन के निर्धारित विशेष आठों दिवसों के विषयों पर उपासिका अंजू बैद ने प्रभावी प्रस्तुति दी एवं ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित आख्यान सुनाये।

प्रतिदिन प्रेक्षाध्यान का अभ्यास व विषय पर गीत संगान करवाया जाता। प्रातः गुरु वंदना, दोपहर में तत्वज्ञान की कक्षाएं व सायंकाल में प्रतिक्रमण व रात्रि में विशेष प्रवचन शृंखला का बहुत ही सुन्दर व ज्ञानवर्धक क्रम रहा। तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों ने गीतिकाओं का संगान किया। ज्ञानशाला संयोजिका कुसुम नाहर के नेतृत्व में ज्ञानार्थियों ने रात्रिकालीन कार्यक्रमों में आकर्षक प्रस्तुति दी। ध्यान दिवस के दिन स्थानीय प्रेक्षा प्रशिक्षक रेणु मरोठी ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाये। जप दिवस के दिन श्रावक-श्राविकाओं ने १३ घंटे का अनुष्ठान रखा। पर्युषण के दौरान एक अठाई, संवत्सरी को लगभग ७० उपवास व ६ पौषध हुए। सामूहिक खमत-खामणा का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें उपासिकाओं के प्रति आभार ज्ञापन किया गया।

सिरियारी

महापर्व, पर्वाधिराज आदि अनेक नामों से संबोधित व ज्ञापित पर्युषण जिसे हर्षोल्लास से सकल जैन समाज के द्वारा मनाया जाता है। वर्ष भर में धर्मस्थान पर न आने वाले भी आठ दिन भरपूर धर्म का लाभ लेते हैं व त्याग-प्रत्याख्यान करते हैं। इस अष्टान्हिक पर्व में मुख्य रूप से भगवान महावीर का जीवन चित्रण, उत्तरवर्ती आचार्य परंपरा का विश्लेषण एवं वर्तमान आचार्य परंपरा का अनुशीलन किया जाता है।

संवत्सरी महापर्व के दिन शासनश्री मुनि मणिलालजी स्वामी ने भगवान महावीर के युग को सर्वप्रथम साध्वी प्रमुखा चंदनबाला के जीवन को बेहद रोचक व जीवंत तरीके से प्रस्तुत किया। ८७ वर्ष की आयु में भी इतनी सक्रियता के साथ लगभग साढ़े तीन घंटों तक मुनिश्री ने लगातार प्रवचन देकर सभी को अध्यात्म का रसपान करवाया।

मुनि आकाशकुमारजी ने भगवान ऋषभ, पार्श्व के उल्लेखनीय घटना प्रसंगों को बताते हुए भगवान महावीर का सम्पूर्ण जीवन चरित्र प्रस्तुत किया। उन्होंने जैन धर्म के प्रभावशाली आचार्यों का जीवन चरित्र एवं व्यक्तित्व-कर्तृत्व के बारे में भी विशद अवगति दी। मुनि हितेन्द्रकुमारजी ने तेरापंथ के ११ आचार्यों के बारे में विस्तार से समझाया कि कैसे हमारे पूर्वाचार्यों ने अत्यधिक संघर्षों को कठिनाईयों को सहन कर हमें यह सुंदरतम तेरापंथ दिया है। हमें हमारी परंपरा का गौरव होना चाहिए व गण-गणपति के प्रति सदैव श्रद्धाशील होना चाहिए।

पर्युषण के आठों ही दिन नियमित रूप से प्रतिक्रमण तथा प्रवचन का कार्यक्रम चला। अन्त में सामूहिक क्षमायाचना के कार्यक्रम के साथ अष्टान्हिक पर्व सम्पन्न हुआ। सिरियारी संस्थान परिवार ने भी प्रवचन का लाभ उठाया।

आत्म शुद्धि का सौपान- पर्युषण महापर्व

श्याम नगर, जयपुर

साध्वी मंगलप्रभाजी के पावन सान्निध्य में पर्युषण महापर्व की आराधना बहुत ही सुचारु रूप से संपन्न हुई। अपनी सुमधुर सरल वाणी से साध्वीश्री ने इन आठ दिनों में सारगर्भित प्रवचन द्वारा एक-एक दिन की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हम पर्युषण महापर्व क्यों मनाते हैं, इसे कैसे मनाना चाहिए तथा इन आठ दिनों में क्या करणीय है, क्या अकरणीय है। इसके साथ ही आपने विविध राग-रागनियों में भगवान महावीर के पूर्व भवों का विवेचन आचारांग सूत्र के आधार पर किया, जो श्रोताओं के आकर्षण का केन्द्र रहा। केन्द्र द्वारा निर्दिष्ट पर्युषण साधना के बिन्दुओं पर भी आपने प्रकाश डाला।

संवत्सरी महापर्व के पावन प्रसंग पर साध्वी मंगलप्रभाजी ने संवत्सरी का हार्द कुछ घटना प्रसंगों द्वारा बताते हुए सभी को निशल्य बनने की प्रेरणा दी। क्षमायाचना के महत्व को समझाते हुए विशाल परिषद् से आह्वान किया कि इस महापर्व पर सबको शुद्ध अन्तःकरण से क्षमायाचना करनी है, ताकि सभी अपने सम्यक्त्व को सुरक्षित रख सकें। संवत्सरी महापर्व पर लगभग आठ घंटे तक प्रवचन का क्रम अनवरत चला। साध्वीजी के साथ-साथ साध्वी सुमनकुमारीजी, साध्वी समप्रभाजी, साध्वी प्रणवप्रभाजी ने भी विविध विधाओं में संवत्सरी के इतिहास के साथ जैन धर्म तथा तेरापंथ के इतिहास की जानकारी दी। केन्द्र द्वारा आठों दिन के निर्दिष्ट विषयों पर साध्वी समप्रभाजी व प्रणवप्रभाजी ने प्रकाश डाला। आगम के आधार पर साध्वी प्रणवप्रभाजी ने उपदेश दिया।

भिक्षु साधना केन्द्र के पदाधिकारी, तेरापंथी सभा के संगठन मंत्री सुरेन्द्र सेठिया, तेयुप से अभिषेक, मनीष आदि सदस्यों ने तथा तेरापंथ महिला मण्डल, सी स्कीम की बहिनों ने पूरी जागरुकता से कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना योगदान दिया। प्रतिदिन का मंगलाचरण प्रत्येक कॉलोनी से तेरापंथ महिला मण्डल की महिलाओं तथा तेरापंथ युवक परिषद् के युवकों ने किया। रात्रिकालीन कार्यक्रमों के अन्तर्गत तेरापंथ का इतिहास साध्वी समप्रभाजी व साध्वी प्रणवप्रभाजी के द्वारा सुनाया गया।

तेयुप बेंगलुरु के तीसरे एवं भारत के ७४वें आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर का शुभारंभ

बेंगलुरु

तेयुप बेंगलुरु के तीसरे एवं भारत के ७४वें आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर का पैलेस गुट्टहल्ली, बेंगलुरु में शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर दानदाताओं, पूर्व अध्यक्षों, सभा संस्थाओं के पदाधिकारी एवं श्रावक-श्राविकागण की उपस्थिति रही। जैन संस्कारक विक्रम दूगड़ एवं अमित भंडारी ने मंगल मंत्रोच्चार एवं विधि-विधान से उद्घाटन कार्यक्रम को जैन संस्कार विधि से पूर्ण करवाया।

मंचीय कार्यक्रम एवं सम्मान समारोह निकटवर्ती स्थान में नमस्कार महामंत्र के साथ प्रारंभ हुआ। अध्यक्ष रजत बैद ने सभी का स्वागत किया एवं दानदाताओं तथा विशेष कार्यकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त किया। अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत ने तेयुप बेंगलुरु के श्रम की सराहना करते हुए आगे बढ़ते रहने की मंगलकामना व्यक्त की। उन्होंने इस अवसर पर उपस्थित अभातेयुप परिवार का परिचय प्रस्तुत किया।

अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया ने आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के इतिहास एवं अब तक की यात्रा पर अपनी अभिव्यक्ति देते हुए युवा शक्ति को नित नए आयाम स्थापित करने हेतु प्रोत्साहित किया। अभातेयुप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रमेश डागा ने सभी अनुदानदाताओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए तेयुप बेंगलुरु के प्रति मंगलकामनाएं व्यक्त की एवं अभातेयुप के मानव सेवा के आयामों एटीडीसी, एमबीडीडी, नेत्रदान, आचार्य तुलसी जैन हॉस्टल आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

डायग्नोस्टिक सेंटर में सहयोग हेतु दानदाता परिवारों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में दानदाता परिवार, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष कमलसिंह दूगड़, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा रिजुबाला डूंगरवाल, तेरापंथ ट्रस्ट अध्यक्ष प्रकाश बाबेल, गौतम मुथा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष देवराज रायसोनी आदि पदाधिकारीगण, तेयुप बेंगलुरु के अनेकों पूर्व अध्यक्ष, मंत्री, वर्तमान पदाधिकारी, कार्यसमिति सदस्य, एटीडीसी के पूर्व संयोजकगण, श्रावक-श्राविकाएं आदि उपस्थित थे।

विकास बाबेल, ऋषभ सेठिया, विनोद कोठारी, जीवन कोठारी, मुदित कोठारी ने दिन-रात श्रम कर इस कार्य को पूर्ण किया। आभार ज्ञापन विनोद कोठारी ने किया।

५१ की तपस्या का तप संपूर्ति अनुष्ठान

दिल्ली

आचार्यश्री महाश्रमणजी के ५० वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष में साध्वी अणिमाश्रीजी की विशेष प्रेरणा से सुजानगढ़ निवासी दिल्ली प्रवासी हनुमानमल सेठिया द्वारा ५१ की तपस्या की गई। उनकी ५१ की तपस्या का तप संपूर्ति अनुष्ठान जैन संस्कार विधि द्वारा परिवारिकजनों की उपस्थिति में उपासक व श्री संस्कारक विमल गुनेचा व संस्कारक अशोक सिंघी ने उत्साहवर्धक जैन मंत्रोच्चार से संपादित करवाया। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार महामंत्र से हुई। तत्पश्चात महावीर स्वामी की स्तुति का सामूहिक संगान किया गया। संस्कारक अशोक सिंघी ने तपस्वी भाई के ५१ के तप की अनुमोदना करते हुए सभी से यह आग्रह किया कि इस अल्पारम्भ व अल्पपरिग्रह से युक्त जैन संस्कार विधि को सभी अपने घरों में ज्यादा से ज्यादा अपनाएं साथ ही बहुत ही सुंदर तरीके से तप की महत्ता परिवारिकजनों को अवगत करवाई। तत्पश्चात श्री संस्कारक विमल गुनेचा ने मंगलभावना यंत्र की महत्वपूर्ण जानकारी से सभी को अवगत कराते हुए उपस्थित पारिवारिक-जन को अपने परिवार में वर्ष भर में एक कार्यक्रम जैन संस्कार विधि द्वारा संपादित करवाने की प्रेरणा दी। संस्कारकों ने सेठिया परिवार एवं उपस्थित सभी पारिवारिक-जन से उपहार स्वरूप त्याग प्रत्याख्यान करवाए। संस्कारकों ने तेयुप दिल्ली द्वारा आए बधाई संदेश का वाचन किया। सेठिया परिवार ने सभी संस्कारकों व पधारे परिवारिकजन का आभार ज्ञापित किया।

योगक्षेम — अभातेयुप योगक्षेम योजना

❋ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
❋ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
❋ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
❋ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
❋ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
❋ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
❋ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
❋ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
❋ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
❋ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
❋ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
❋ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
❋ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
❋ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000

अपने संस्कार : अपनी निधि — जैन संस्कार विधि

नामकरण

दिल्ली

धनपत सुराना एवं स्व. अनिता देवी की सुपौत्री व गुलशन-विभा सुराणा की सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से किया गया। संस्कारक हिम्मत राखेचा, कुश जैन एवं अरविंद गोलछा ने पूरे विधि-विधान व मंगल मंत्रोच्चार से मांगलिक कार्यक्रम सानन्द संपादित करवाया। संस्कारकों द्वारा मंगलभावना यंत्र व जैन संस्कार विधि के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। संस्कारकों ने तेयुप दिल्ली द्वारा प्राप्त बधाई संदेश का वाचन करते हुए आभार ज्ञापन किया।

सुराणा परिवार द्वारा संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया गया। उपस्थित सभी पारिवारिकजनों एवं परिजनों ने इस विधि की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा भावना व्यक्त की कि वर्षभर में कम से कम एक कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से हम अपने-अपने घरों में करने का प्रयास करेंगे।

राजाजीनगर

तेरापंथ युवक परिषद् राजाजीनगर द्वारा रोहित-पूजा खांटेड़ के पुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से डॉ. राजकुमार रोड़, राजाजीनगर स्थित निवास स्थान पर संपादित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक रूप से उच्चारण करते हुए संस्कारक राजेश देरासरिया एवं रनीत कोठारी ने जैन संस्कार विधि का महत्व बताया एवं विभिन्न मंगल मंत्रोच्चार के उच्चारण से विधि को संपन्न करवाते हुए नवजात शिशु का नाम दिवित रखने की घोषणा की। तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना ने मंगलकामनाएं संप्रेषित करते हुए जैन संस्कार विधि को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया। मीना बरलोटा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए परिषद् परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर तेयुप से ललित मुणोत एवं जैन संस्कार विधि के संयोजक सुनील सिंघवी की उपस्थिति रही।

भीनासर

गंगाशहर निवासी कलियागंज (बिहार) प्रवासी अजीतमल तातेड़ के सुपुत्र एवं पुत्रवधू आकाश-फेना तातेड़ के नवजात पुत्री रत्न का नामकरण संस्कार कार्यक्रम विमल गोलछा के निवास भीनासर में जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। जैन संस्कारक पीयूष लुणिया, विनीत बोथरा, देवेन्द्र डागा ने विधि-विधान से मांगलिक मंत्रोच्चार सहित नामकरण का कार्यक्रम संपन्न करवाया। पीयूष लुणिया ने मंगल भावना यंत्र की विवेचना की एवं साथ ही धार्मिक गीतिकाओं का संगान भी समवेत स्वरों में किया। देवेन्द्र डागा ने नामकरण पत्रक का वाचन किया। विनीत बोथरा ने तातेड़ एवं गोलछा परिवार को शुभकामनाएं प्रेषित की। कार्यक्रम में दोनों परिवारों की गरिमामय उपस्थिति रही। सभी ने तेयुप गंगाशहर द्वारा आयोजित हुए जैन संस्कार विधि के कार्यक्रम की सराहना की।

साउथ हावड़ा

श्रीडूंगरगढ़ निवासी साउथ हावड़ा प्रवासी अलयचंद-जशोदा पुगलिया की सुपौत्री एवं संजय-ज्योति पुगलिया की सुपुत्री का नामकरण संस्कार कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से तेरापंथ युवक परिषद्, साउथ हावड़ा के अंतर्गत संपादित किया गया। संस्कारक पवन बैंगाणी, नवीन सेठिया एवं सुनीत नाहटा ने विविध मंत्रोच्चार तथा विधि-विधान के अनुसार कार्यक्रम संपादित करवाया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। संस्कारकों ने उपस्थित पारिवारिकजनों के समक्ष मंत्रोच्चार करते हुए जैन संस्कार विधि के महत्व को प्रतिपादित किया एवं कन्या का नाम मानविका रखा। जैन संस्कारक एवं परिषद् के जैन संस्कार विधि के संयोजक नवीन सेठिया ने शुभकामनाएं प्रेषित की। पारिवारिकजनों ने परिषद् के प्रति आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

तप संपूर्ति अनुष्ठान

दिल्ली

भीनासर निवासी दिल्ली प्रवासी समता कोचर धर्मपत्नी संतोष कुमार कोचर के मासखमण (३०) की तपस्या का तप संपूर्ति अनुष्ठान तेयुप दिल्ली द्वारा जैन संस्कार विधि से संपादित करवाया गया। राज्य आयाम सहयोगी संस्कारक प्रकाश सुराणा, संस्कारक अशोक सिंघी एवं संस्कारक राकेश पुगलिया ने पूरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम संपादित करवाया। संस्कारकों ने कोचर परिवार को मंगलभावना यंत्र व जैन संस्कार विधि की महत्वपूर्ण जानकारियां अवगत करवाई। संस्कारकों ने तपस्विनी बहिन के तप की अनुमोदना करते हुए तेयुप दिल्ली की तरफ से बधाई संदेश का वाचन किया व साथ ही जैन संस्कार विधि द्वारा निर्देशित संकल्प तपस्विनी बहिन को दिलवाए एवं प्रतिदिन एक सामायिक करने का भी संकल्प स्वीकार किया। संस्कारकों द्वारा उपस्थित लोगों को तप अनुमोदना स्वरूप त्याग-प्रत्याख्यान की विशेष प्रेरणा दी गई। कोचर परिवार ने पधारे हुए संस्कारकों व परिवारिकजनों का आभार ज्ञापन किया।

पर्युषण का अर्थ है आत्मा में निवास करना

सिकन्दराबाद

साध्वी डॉ॰ मंगलप्रभाजी के सान्निध्य में पर्युषण पर्व का भव्य आध्यात्मिक आयोजन हुआ। साध्वीश्रीजी ने कहा- 'हर सम्प्रदाय भाद्रव माह में उत्सव मनाता है। इस महीने में अध्यात्म के विकिरण स्वतः स्फूर्त होते हैं। भगवान महावीर के समय एक दिन पर्युषासना का उल्लेख मिलता है। हम उन महापुरुष के प्रति कृतज्ञ हैं, जिन्होंने इस पर्युषण महापर्व को आठ दिन मनाने का सुचिंतन दिया। साध्वीश्रीजी ने कहा- 'आठ कर्मों को खपाने का साधन पर्युषण पर्व संकेत रूप में हमारे समक्ष उपस्थित है। पर्युषण का अर्थ है संसार के चारों तरफ से हटकर आत्मा में निवास करना। इन दिनों अध्यात्म भाव जागता है।'

खाद्य संयम दिवस पर प्रेरणा प्रदान करते हुए साध्वीश्रीजी ने कहा कि जैन जीवन शैली स्वस्थता प्रदान करती है, इसे अपनाया जाए। लाडनूं, कालू, छोटी खाटू, फतेहपुर, लूणकरणसर, रामगढ़ और हनुमानगढ़ के हैदराबाद प्रवासित सदस्यों द्वारा मंगलाचरण किया गया। साध्वी सिद्धियशाजी एवं साध्वी चैतन्यप्रभाजी ने पर्युषण महावीर संवाद प्रस्तुत किया। साध्वीवृन्द द्वारा गीत का संगान किया गया। साध्वी चैतन्यप्रभाजी ने नए अंदाज में आहार संयम के टिप्स दिए। संचालन साध्वी राजुलप्रभाजी ने किया।

स्वाध्याय दिवस पर साध्वीश्रीजी ने कहा- 'महापर्व का आह्वान है- अप्पणा सच्च मेसेजा। स्वयं सत्य खोजो, पुरुषार्थ जगाओ, आत्म साक्षात्कार करो। भगवान बुद्ध ने भी आत्मदीप बनने की बात कही। पर्युषण पर्व अध्यात्म दीप जलाने की बात कहता है। मैं कौन हूं, मैं कहा हूं और मैं क्या हूं? ये प्रश्न खुद से पूछो। सफलता के शिखर पर आरोहण होगा।' मंगलाचरण के रूप में सुजानगढ़ टमकोर, छापर, चाड़वास, पड़िहारा, चुरू के भाई बहिनों ने भावपूर्ण संगान किया। साध्वी शोर्यप्रभाजी ने कहा- 'ज्ञान की साधना, आनन्द और मोक्ष प्राप्ति की साधना है।' साध्वीवृन्द ने स्वाध्याय संगान की नव्य-भव्य प्रस्तुति दी। साध्वी राजुलप्रभाजी एवं साध्वी सिद्धियशाजी ने आत्मा और कषाय का संवाद प्रस्तुत किया। मंच संचालन साध्वी सिद्धियशाजी ने किया।

सामायिक दिवस पर साध्वीश्रीजी ने कहा- 'समयिक आत्म दर्शन की साधना है। सामायिक का एक अर्थ है- आत्मा के निकट रहने का अभ्यास और दूसरा- समता का वृद्धिकरण। साधकों को चिन्तन करना है कि ममता से समता खंडित न हो, विषमता की स्थिति न बने। तात्विक दृष्टि से सामायिक करने से व्यक्ति छह काय का रक्षक बनता है। हर व्यक्ति २४ घंटे में से २-२ मिनट निकाल कर सामायिक साधना अवश्य करे।' श्रीडूंगरगढ़, रतनगढ़, राजलदेसर, नोहर, भादरा, फतेहपुर, पंजाब, हरियाणा एवं रूणियावास निवासियों ने मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। साध्वीवृन्द द्वारा- 'आईए कषायों पर करें प्रहार, आत्मा रूप होगा साकार' की प्रेरक प्रस्तुति दी गई। तेरापंथ युवक परिषद् के युवकों व तेरापंथ किशोर मंडल के किशोरों ने 'समता के सागर में नहाएं' का सह संगान किया। तेयुप अध्यक्ष निर्मल दूगड़ ने कहा कि समता की साधना का उपहार हम युवकों के जीवन का शृंगार है। मंच संचालन साध्वी शौर्यप्रभाजी ने किया। तेयुप के अंतर्गत अभिनव सामायिक का प्रयोग साध्वीश्रीजी द्वारा करवाया गया।

वाणी संयम दिवस पर साध्वीश्रीजी ने कहा- 'भगवान महावीर ने हर साधक को भाषा, विवेक का उपदेश दिया। महावीर ने कहा कि शब्दों के संसार में विवेक सभ्यता की सौरभ जरूरी है। एकान्त में रहने वाला मौन रह सकता है पर समूह में एकांगी मौन से व्यवहार नहीं चलता। कैसे बोलें, कब बोलें, कहां बोलें, क्या बोलें और क्यों बोलें- इन पर चिन्तन और अमल आवश्यक है। समझदार वह होता है जो बोलने से पहले सोचता है। प्रमोद भाव जन्मजात शक्ति है। परिवार, समाज, समूह में जीने वाला परस्पर गुणनुवाद करे। वाणी संयम आत्म-दिशा में बदलने का सशक्त माध्यम है।' बीदासर, राजगढ़, तारानगर, सांडवा एवं उड़ीसा निवासियों ने मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। साध्वी सिद्धियशाजी ने कहा- 'हमें इष्ट, मिष्ट और शिष्ट भाषा का प्रयोग करना चाहिए।' साध्वी वृन्द द्वारा 'पत्थर बने प्रतिमा' का जीवन्त चित्रण किया गया। मंच संचालन साध्वी चैतन्यप्रभाजी ने किया।

अणुव्रत चेतना दिवस पर साध्वीश्रीजी ने कहा- 'मर्यादा व्यवस्था व्रत और अनुशासन का अतिक्रमण समाज परिवार में समस्याएं पैदा करता है। अणुव्रत की मानवीय आचार संहिता द्वारा समाज की कुरीतियों को कम किया जा सकता है, खत्म किया जा सकता है। पर्युषण महापर्व संयम चेतना जगाने का पर्व है। आवश्यकता है आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रदत्त अणुव्रत को प्राणवान बनाएं।' गंगाशहर, बीकानेर, उदासर, भीनासर, नोखा, नाल, देशनोक, रासीसर के हैदराबाद प्रवासियों द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। साध्वी सुदर्शनप्रभाजी ने अणुव्रत के संदर्भ में विचार व्यक्त किए। साध्वीवृन्द द्वारा 'सम्यकत्व एयरलाइन्स' कार्यक्रम एवं अणुव्रत गीत प्रस्तुत किया गया। संयोजन साध्वी राजुलप्रभाजी ने किया।

जप दिवस पर साध्वीश्रीजी ने कहा- 'भारत के ऋषि मुनियों ने अध्यात्म जागरण के लिए अनेक विद्याओं का वैभव दिया है। जैन परम्परा को चौदह पूर्वों की अपार सम्पदा प्राप्त हुई। मंत्रों की साधना शक्ति की साधना है। देवाराधना, विघ्न निवारण एवं आत्माराधना के लिए मंत्र साधना की जाती है। हम सौभाग्यशाली है जिन शासन और भैक्षव शासन को पाकर, जहां महान प्रभावक आत्माओं ने मंत्र साधना से शक्तियां प्रदान की। श्रीमद् जयाचार्य द्वारा रचित विघ्नविनाशक गीत और मंत्र हमारे लिए प्रवर आलम्बन है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने अनेक स्थितियों में मंत्र के प्रयोग किए। मंत्र सिद्धता में गुरु दृष्टि, गुरु कृपा सर्वोपरि होती है।' मेवाड़, मारवाड़, निवासी भाग्यनगर प्रवासियों ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। साध्वीवृन्द ने 'परमार्थ पार्लर' कार्यक्रम की प्रेरक-आकर्षक प्रस्तुति दी एवं महाश्रमण वन्दे गीत का सामूहिक संगान कर भक्ति रस की धार बहाई। कार्यक्रम का संचालन साध्वी शौर्यप्रभाजी ने किया।

ध्यान दिवस पर भगवान महावीर के जीवन दर्शन को आगे बढ़ाते हुए साध्वीश्रीजी ने कहा- 'कर्मों की कहानी बड़ी विचित्र होती है, इससे अपवाद महायोगी महाध्यान साधक महावीर भी नहीं रहे। कर्म बन्धनों को तोड़ते-तोड़ते सबके आदर्श बन गए। ध्यान भगवान की साधना का केन्द्रीय तत्व है। आर्त्त और रौद्र ध्यान संसार में भटकाने वाले, धर्म्य और शुक्ल ध्यान आत्मा की ओर ले जाने वाले हैं। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने प्रेक्षाध्यान को मात्र राष्ट्रीय नहीं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित कर दिया। ध्यान शारीरिक मानसिक, बौद्धिक और भावनात्मक विकास के लिए पौष्टिक औषध है, आत्मरूपी घर में निवास करने का श्रेष्ठ आलम्बन है।' साध्वी राजुलप्रभाजी ने कहा- 'जीवन परिवर्तन और आत्म-दर्शन की दिशा ध्यान से संभव है।' सरदारशहर मोमासर, आडसर, गंगानगर और पीलीबंगा निवासियों एवं भाग्यनगर प्रवासियों ने मंगल संगान किया। साध्वीवृन्द ने सामूहिक गीत प्रस्तुत किया। महावीर हॉस्पिटल के चेयरमैन महेन्द्र रांका ने विचार व्यक्त किए। साध्वी सुदर्शन प्रभाजी ने मंच संचालन किया।

संवत्सरी महापर्व पर साध्वीश्रीजी ने कहा- 'संवत्सरी महापर्व भीतरी यात्रा की प्रेरणा देता है। प्राचीन काल में एक दिन यह पर्व मनाया जाता था। आज अतीत का लेखा-जोखा और आत्म- निरीक्षण का दिन है। अपनी खामियों को जान कर कम करने का प्रयास करें। अतीत की गंदगी को हटाकर वर्तमान को सजाएं और शुभ भविष्य के लिए पवित्र संकल्प करें। संवत्सरी महापर्व आनंद-मैत्री का पर्व है। आप चौरासी लाख जीव-योनियों से क्षमायाचना करते हैं पर एक छत के नीचे रहने वालों से क्षमायाचना करना न भूलें।' साध्वीश्रीजी द्वारा महासती चन्दनबाला का आख्यान सुनकर सम्पूर्ण परिषद् भावविभोर हुई। तेरापंथी सभा एवं सभी सहयोगी संस्थाओं द्वारा मंगलाचरण किया गया। साध्वीवृन्द ने 'आत्मोदय का सुन्दर अवसर' गीत प्रस्तुत किया। साध्वीवृन्द द्वारा गणधर जीवन, प्रभावक आचार्य, श्रुतधर परम्परा, तेरापंथ के आचार्य, साध्वीप्रमुखा एवं गौरवशाली साध्वी परिवार पर प्रकाश डाला गया। क्षमापना पर्व पर साध्वीश्रीजी ने कहा कि आज भार मुक्ति का दिन है। जिंदगी के उबड़-खाबड़ कठिन रास्ते पर चलते-चलते फिसलना, गिरना स्वाभाविक है पर गिरकर संभल जाना श्रेयस्कर है। तप, जप, त्याग, ज्ञान, ध्यान और श्रुताराधना का यह महापर्व मात्र जैन समाज ही मनाता है। सभी ने आठ दिन अध्यात्म-आत्मदर्शन की गंगोत्री में स्नान कर शक्ति प्राप्त की, उस शक्ति का सही नियोजन होना चाहिए। हर व्यक्ति को फॉरगेट और फॉरगिव सूत्र अपनाना चाहिए। अतीत पर पर्दा डालकर भविष्य में भूल न करने का संकल्प करें।

राग से विराग की ओर बढ़ने का पर्व है– पर्युषण

पचपदरा

शासनश्री साध्वी सत्यवतीजी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा पचपदरा के तत्वावधान में पर्युषण पर्व का नवान्हिक कार्यक्रम अध्यात्ममय वातावरण में मनाया गया। आत्मा से परमात्मा बनने, राग से विराग की ओर बढ़ने, अंधकार से प्रकाश की ओर जाने का पर्व पर्युषण है।

पर्युषण पर्व का प्रथम दिवस खाद्य संयम दिवस के रूप में मनाया गया, जिसमें साध्वी शशिप्रज्ञाजी ने बताया कि हम खाने में विरोधी पदार्थों के प्रयोग का निषेध कर स्वस्थ जीवन जी सकते हैं। साध्वी संकल्पप्रभाजी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। शासनश्री साध्वी सत्यवतीजी ने पर्युषण पर्व की महत्ता बताते हुए कहा कि पर्युषण पर्व के आठ दिनों में विशेष रूप से धर्माराधना करनी चाहिए। कार्यक्रम का संचालन रूपेन्द्र ढेलड़िया ने किया।

पर्युषण पर्व के द्वितीय दिवस पर साध्वी पुण्यदर्शनाजी ने कहा कि स्वाध्याय के द्वारा हम करणीय व अकरणीय का स्पष्ट ज्ञान करके जीवन को सही दिशा में नियोजित कर सकते हैं। स्वाध्याय कब व कैसे करना चाहिए, इसका बोध साध्वी शशिप्रभाजी ने करवाया। शासनश्री साध्वी सत्यवतीजी ने कहा कि निर्जरा के बारह प्रकार में से स्वाध्याय एक तप है, जिसके द्वारा कर्मों की निर्जरा होती है। मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों ने एवं कार्यक्रम का संचालन कीर्ति चौपड़ा ने किया।

तीसरे दिन पर सामायिक दिवस के बारे में बताते हुए साध्वी शशिप्रज्ञाजी ने सामायिक कैसे करें व समता का विकास कैसे करें, इसके बारे में प्रेरणा दी। शासनश्री साध्वी सत्यवतीजी ने हाजरी का वाचन किया व भगवान महावीर के भवों के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन खुशबू पारख ने किया।

चौथे दिन वाणी संयम दिवस पर साध्वीवृंद ने सामूहिक गीतिका के माध्यम से वाणी का संयम रखने की प्रेरणा दी। शासनश्री साध्वी सत्यवतीजी ने अनावश्यक बोलने से बचने की प्रेरणा दी एवं मौन के महत्व के बारे में बताया।

पंचम् दिवस अणुव्रत चेतना दिवस पर साध्वी पुण्यदर्शनाजी व साध्वी रोशनीप्रभाजी ने अणुव्रत की आचार-संहिता के बारे में बताया। शासनश्री साध्वी सत्यवतीजी ने छोटे-छोटे व्रतों को जीवन में धारण कर संयम की प्रेरणा दी।

पर्युषण के षष्टम् दिवस जप दिवस पर साध्वी रोशनीप्रभाजी ने जप की महिमा बताई। साध्वी जयंतमालाजी ने जप के द्वारा 'अर्हत् बनें' विषय पर प्रस्तुति दी। शासनश्री साध्वी सत्यवतीजी ने विभिन्न मंत्रों का महत्व एवं उनके निरंतर जप के लाभ के बारे में बताया।

ध्यान दिवस पर साध्वी जयंतमालाजी ने गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी शशिप्रज्ञाजी ने भाव क्रिया के बारे में बताया। शासनश्री साध्वी सत्यवतीजी ने ध्यान के महत्व को बताते हुए प्रेक्षाध्यान के बारे में विशद जानकारी प्रदान की।

संवत्सरी महापर्व पर साध्वी जयंतमालाजी की गीतिका से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी रोशनीप्रभाजी ने दुखों के कारण बताए। साध्वी शशिप्रज्ञाजी ने भगवान ऋषभ की वंशावली प्रस्तुत की। साध्वी शशिप्रभाजी ने आरे के प्रभाव के बारे में बताया। साध्वी संकल्पप्रभाजी ने आचार्यों व साध्वी प्रमुखाओं के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। शासनश्री साध्वी सत्यवतीजी ने चंदनबाला की भक्ति के बारे में बताते हुए संवत्सरी महापर्व के महत्व को व्याख्यायित किया।

क्षमापना दिवस कार्यक्रम का संचालन जिनेश चौपड़ा ने किया। सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों ने गुरुदेव, साध्वीश्रीजी एवं पूरे श्रावक समाज से खमत-खामणा किया। शासनश्री साध्वी सत्यवतीजी ने क्षमापना दिवस पर सभी को अपने मन की गांठें खोलकर एकदूसरे से सरल हृदय से खमत-खामणा कर अपने आपको हल्का बनाने की प्रेरणा दी। सभी ने परस्पर खमत-खामणा किए।

पर्युषण पर्वाराधना के विभिन्न आयोजन

बोरावड़

बोथरा बास स्थित तेरापंथ भवन में साध्वी प्रांजलप्रभाजी के सान्निध्य में जैन धर्म के प्रमुख पर्व पर्युषण महापर्व का अष्ट दिवसीय आयोजन हुआ। प्रतिदिन साध्वीश्रीजी के सान्निध्य में व्यवस्थित व्याख्यान का क्रम चला, जिसमें भगवान महावीर के २७ भवों का सरस शैली में वर्णन साध्वीश्रीजी द्वारा किया गया। प्रतिदिन के निर्धारित दिवसों पर साध्वीवृंद द्वारा वक्तव्य व गीत के माध्यम से प्रेरणा दी गई।

क्षमायाचना दिवस के अवसर पर साध्वी प्रांजलप्रभाजी ने सभी धर्मावलंबियों को संबोधित करते हुये फरमाया कि आठ दिवस पूर्व हमने पर्युषण के हिमालय पर आरोहण करना प्रारंभ किया। आठ दिवस को अलग-अलग दिवस के रूप में मनाकर आत्म विकास के विविध आयामों को अपनाकर अध्यात्म की साधना की। जप, ध्यान, स्वाध्याय, सामायिक, पौषध आदि के द्वारा शिखर की ओर निरंतर बढते रहे और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण कर हिमालय के सर्वोच्च शिखर को हासिल कर लिया। अब समय आ गया है, मैत्री की विजय पताका को शिखर पर फहराने का। आज के पर्व को स्वयं की भूलों की क्षमा मांग और दूसरों की गलती को माफ कर मनाया जाता है। साध्वी गौतमप्रभाजी ने आत्मावलोकन करने की प्रेरणा देते सुमधुर गीत से वातावरण को संगीतमय बना दिया। क्षमायाचना पर्व के अवसर पर सामूहिक क्षमायाचना के क्रम में तेरापंथी सभाध्यक्ष रिखबचंद भंडारी, मंत्री रायचंद बोथरा, तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष विकास चौरड़िया, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा हर्षा चौरड़िया ने समस्त श्रावक समाज से क्षमायाचना की।

भिलोड़ा

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी उपसभा, भिलोड़ा द्वारा आयोजित पर्युषण पर्व की आराधना करवाने हेतु आचार्यश्री महाश्रमणजी के निर्देशानुसार उपासक जवेरीलाल संकलेचा (अहमदाबाद) एवं खूबीलाल छत्रावत (सूरत) का आगमन हुआ, जिससे यहां के श्रावक-श्राविकाओं में नया उत्साह व उमंग की लहर छा गई ।

उपासकगण द्वारा प्रतिदिन प्रातः कालीन प्रवचन में भगवान महावीर स्वामी के पूर्व भव, साधना काल, सर्वज्ञता काल, तेरापंथ के आचार्यों का जीवन वृत्त बताते हुए निर्धारित आठ दिवसों के विषयों पर सारगर्भित प्रस्तुति दी गई। दोपहर में पच्चीस बोल एवं श्रावक के बारह व्रतों का सरल विवेचन किया गया। १३ व्यक्तियों द्वारा बारह व्रत स्वीकार किये गए। शरीर और आत्मा की अच्छी क्लास चली। सायंकाल प्रतिक्रमण व अर्हत् वंदना, तत्वज्ञान के पश्चात तनाव प्रबंधन, क्रोध के कारण-निवारण, बुढ़ापा वरदान कैसे बने?, कैसे करें सहन शक्ति का विकास?, कैसे हो स्मरण शक्ति का विकास?, जीवन में सफलता का राज आदि विषयों पर प्रेक्षाध्यान के माध्यम से वर्तमान समस्याओं के समाधान उपासकगण द्वारा प्रस्तुत किए गए। लोगों से प्राप्त जिज्ञासाओं को समाहित किया गया। सुबह प्रार्थना, प्रेक्षाध्यान एवं योगासन की कक्षा नियमित चली । स्थानकवासी समाज, माहेश्वरी समाज के लोगों की भी उपस्थिति रही। अनेक लोगों ने नशा मुक्ति का संकल्प लिया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी उपसभा, तेरापंथ महिला मंडल, कन्याओं, युवकों सभी का विशेष सहयोग रहा। सामायिक पचरंगी एक, मौन पचरंगी एक, जप दिवस पर नमस्कार महामंत्र का अखंड जप का क्रम चला। अभिनव सामायिक का प्रयोग रहा।

शिवाकाशी

उपासिका बहिनें राजश्री पुगलिया और उषा डागा के निर्देशन में आठ दिनों का ये महापर्व बहुत ही हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। उपासिका बहिनों ने तत्वज्ञान के बारे में और भगवान महावीर के सत्ताईस भवों के बारे में बहुत ही सुंदर ढ़ंग से एवं साधारण शब्दों में समझाया। खाद्य संयम दिवस पर शिवाकाशी तेरापंथ महिला मंडल ने मिलकर दस प्रत्याख्यान किए, सामायिक दिवस पर अभिनव सामायिक हुई, जप दिवस पर बारह घंटें का जप हुआ, मौन दिवस पर कन्या मंडल की दीप्ति ने चौबीस घंटे का मौन किया। आठों दिन व्याख्यान का प्रारंभ गीतिका से हुआ और ध्यान का प्रयोग भी करवाया गया। सायं सामूहिक प्रतिक्रमण व अर्हत वंदना में भी सभी ने पूरा लाभ उठाया। संवत्सरी के दिन सात पौषध भी हुए।

क्षमायाचना दिवस पर तेरापंथ महिला मंडल मंत्री बेला कोठारी ने कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से की और संचालन भी किया। कन्या मंडल से दीप्ति बैद ने कविता के माध्यम से बहुत ही सुन्दर भाव व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल पूर्व मंत्री कुसुम बैद ने भी कविता के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति दी। तेरापंथी सभा अध्यक्ष मदन डागा ने अपनी प्रस्तुति से सभी को उत्साहित किया। तेरापंथी सभा के पूर्व अध्यक्ष नवरत्नमल डागा, तेरापंथ महिला मंडल पूर्व अध्यक्ष सम्पत देवी डागा, उपमंत्री प्रेम बैद ने अपने भाव व्यक्त किए। अन्त में उपासिका बहिनों ने भगवान महावीर के पथ का अनुकरण करते हुए आत्म कल्याण करने की प्रेरणा दी।

जलगांव

जैन धर्म में अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाने वाले पर्युषण पर्व की आराधना डॉ॰ मुनि आलोककुमारजी के पावन सान्निध्य में अणुव्रत भवन प्रांगण में संपन्न हुई। मुनि आलोककुमारजी, मुनि हिमकुमारजी, मुनि लक्ष्यकुमारजी ने भगवान महावीर की जीवन गाथा का विवेचन किया। आठ दिवसीय कार्यक्रम में खाद्य संयम दिवस पर खाने-पीने का संयम कर कर्म निर्जरा का मर्म समझाया। स्वाध्याय दिवस पर ज्ञान की ज्योति को समय नियोजन करके वाचना, प्रतिप्रश्ना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा व धर्मचर्चा कर निरंतर प्रज्ज्वलित रखने की प्रेरणा दी। सामायिक दिवस पर सामायिक के अर्थ सहित व्याख्या करते हुए संवर-निर्जरा के लाभ के साथ-साथ मनुष्य को हर परिस्थिति में सम रहकर समता की साधना के विकास की प्रेरणा दी। वाणी संयम पर वाणी के विवेक का मूल्य समझाया। अणुव्रत चेतना दिवस पर अणुव्रत आचार संहिता के नियमों का वाचन किया। अणुव्रत अवदान की जीवन शैली में उपयोगिता को और श्रावक के बारह व्रतों को सरलता से समझाकर बारह व्रती श्रावक बनने के लिए सभी को प्रोत्साहित किया। जप दिवस पर व्याख्या दी कि प्रत्येक अक्षर में मंत्र बनने की क्षमता है और अक्षरों का सम्यक संयोजन ही मंत्र है। साथ ही विशेष मंत्र का जप करने से होने वाले आध्यात्मिक लाभ के बारे में समझाया। ध्यान दिवस पर बताया गया कि विकेंद्रित विचारों को केंद्रित कर निर्विचार अंतर्यात्रा ही ध्यान है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा दिये गये अवदान 'प्रेक्षा-ध्यान' का निरंतर प्रयोग करके मनुष्य अपने जीवन में शांति का विकास कैसे कर सकता है, इसकी प्रेरणा दी।

संवत्सरी महापर्व पर डॉ॰ मुनि आलोककुमारजी ने भगवान महावीर के माताजी के १४ सपनों का वर्णन किया और बताया कि आत्मा ही शत्रु व मित्र है। हम अनादिकाल से कालचक्र में घूम रहे हैं। आज का दिन तप का पर्व है। अपने भीतर के ईर्ष्या भाव को खत्म कर प्रमोद भावना का जागरण करें, सेवा भावना का विकास करें। आगम का ज्ञान करना जरुरी है। अव्रत, कषायों व मिथ्या भाव व किसी के प्रति छल कपट किया हो तो उसका प्रतिक्रमण करना, आज के दिन का उद्देश्य है।

क्षमायाचना दिवस पर विगत वर्ष में मन, वचन, काया द्वारा जाने-अनजाने हुई भूलों की शुद्ध अंतकरण से प्राणी मात्र से क्षमायाचना का मूल्य समझा कर आत्मशुद्धि के महत्व को बताया गया। नन्हें-नन्हें बालकों ने भी उपवास व प्रवचन श्रवण का लाभ लिया। क्षमायाचना दिवस पर श्रद्धेय गुरुदेव एवं समस्त चारित्रात्माओं से क्षमायाचना कर सभी श्रावक-श्राविका समाज ने भी एकदूसरे से खमत-खामणा किया। तेरापंथी सभा अध्यक्ष जितेन्द्र चौरड़िया, तेयुप अध्यक्ष सुदर्शन बैद, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला छाजेड़, टी॰पी॰एफ॰ अध्यक्ष संजय चौरड़िया ने अपने भाव व्यक्त किए। क्षमायाचना कार्यक्रम का संचालन नोरतमल चौरड़िया ने किया।

कार्यक्रम समापन पर जलगांव के विधायक सुरेश दामू भोळे ने मुनिश्री के दर्शन किए एवं क्षमायाचना की।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट

हावड़ा

अणुविभा द्वारा निर्देशित अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट का आयोजन अणुव्रत समिति हावड़ा द्वारा सेंट हेलेन स्कूल में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत गीतिका के सामूहिक संगान से हुआ। अध्यक्ष दीपक नखत ने अणुव्रत के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। यहां लेखन और चित्रकला प्रतियोगिता समूह कक्षा ९-१२ में आयोजित की गई, जिसमें लगभग ३५ बच्चों ने भाग लिया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य नेल्सन मंगलम और हेड मिस्ट्रेस नगमा बानो का सम्मान किया गया।

प्रधानाचार्य ने स्कूल की विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया तथा कार्यक्रम की सराहना करते हुए भविष्य में पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। प्रशिक्षिक उत्कर्ष तिवारी का सभी प्रतियोगिताओं को सफल बनाने में विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति मंत्री बिरेंद्र बोहरा, सहमंत्री प्रथम और प्रभारी सुनीता बैद, सहमंत्री द्वितीय और प्रभारी लीना सिंघी, संगठन मंत्री उमेद राखेचा, प्रचार-प्रसार मंत्री रितेश खटेड़, संयोजिका सुनीता बैद की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का कुशल संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री बिरेंद्र बोहरा ने किया।

तपोभिनन्दन कार्यक्रम का आयोजन

पर्वत पाटिया

साध्वी हिमश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा पर्वत पाटिया द्वारा तपस्वियों के तपोभिनन्दन समारोह का कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीवृंद के मंगलाचरण से हुआ। साध्वी हिमश्रीजी ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा कि तपस्या व्यक्ति की अन्तर्मुखी चेतना का जागरण करती है। तपस्या एक साधना है, जो वृत्तियों का शोधन करती है। शासनश्री साध्वी रमावतीजी ने कहा कि जैन धर्म में त्याग व तपस्या का बहुत महत्व है। साध्वीवृंद द्वारा गीतिका का सामूहिक संगान किया गया। साध्वीप्रमुखाश्रीजी द्वारा प्राप्त संदेश का वाचन साध्वी चैतन्ययशाजी द्वारा किया गया। तेरापंथी सभा मंत्री प्रदीप गंग द्वारा अभिनन्दन पत्र का वाचन किया गया। सभी तपस्वियों के परिवारों द्वारा अभिव्यक्ति दी गई।

तेरापंथी सभाध्यक्ष गौतम जैन, तेयुप अध्यक्ष दिलीप जैन व महिला मंडल से भूतपूर्व अध्यक्षा मनोज देवी गंग द्वारा तपस्वियों के प्रति भावाभिव्यक्ति दी गई। तपस्या के क्रम में हेमराज छाजेड़, सूरजमल पुगलिया, भावना खिवेसरा, ज्योति बाफना, राजेन्द्र सेठिया, विनय जैन, अनोप सेठिया, कृतज्ञ बाफना ने तपस्या का साध्वीश्रीजी से प्रत्याख्यान किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी मुक्तियशाजी ने किया। तपस्वियों की अनुमोदना में अनेक भाई-बहिनों ने तेले की तपस्या का संकल्प किया।

आदमी को इंद्रियों के अनावश्यक उपयोग से और आवश्यक उपयोग में राग-द्वेष से बचना चाहिए।

-आचार्यश्री महाश्रमण

उपासना (भाग-एक)

जैन जीवनशैली

प्रेक्षाध्यान

सम्पूर्ण कायोत्सर्ग

कायोत्सर्ग खड़े रहकर, बैठकर और लेटकर तीनों मुद्राओं में किया जाता है। खड़े रहकर करना उत्तम कायोत्सर्ग, बैठकर करना मध्यम कायोत्सर्ग, लेटकर करना सामान्य कायोत्सर्ग है।

1. खड़े रहकर कायोत्सर्ग करने की मुद्रा- सीधे खड़े रहें। दोनों हाथ साथल से सटे रहें। दोनों पैरों के मध्य आधा फुट का फासला रहे। मेरुदण्ड और गर्दन सीधी रहे। सिर थोड़ा झुका हुआ। ठुड्डी छाती से चार अंगुल ऊपर हो।
2. बैठकर कायोत्सर्ग करने की मुद्रा-सुखासन में बैठें। मेरुदण्ड और गर्दन को सीधा रखें। ठुड्डी छाती से चार अंगुल ऊपर हो। ब्रह्म मुद्रा-बाईं हथेली नाभि के नीचे और दाहिनी हथेली बाईं हथेली के ऊपर स्थापित करें। अंगूठे एक दूसरे से सटे रहेंगे।
3. लेटकर कायोत्सर्ग करने की मुद्रा-पीठ के बल लेटें। दोनों पैरों के मध्य एक फुट का फासला रहे। दोनों हाथ शरीर के समानान्तर आधा फुट दूरी पर रहे। हथेलियां आकाश की तरफ खुली रखें। गर्दन और सिर सीधा रहे। आंखें कोमलता से बन्द रहे। शरीर स्थिर एवं शिथिल रहे।

पहला चरण

कायोत्सर्ग के लिए तैयार हो जाएं। कायोत्सर्ग का प्रारम्भ खड़े-खड़े होगा। लेटने जितने स्थान की व्यवस्था कर, खड़े-खड़े कायोत्सर्ग का संकल्प करें।

'तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउसग्गं।'

'मैं शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तनावों से मुक्त होने के लिए कायोत्सर्ग का संकल्प करता हूं।' (कायोत्सर्ग की अवधि निश्चित करने का निर्देश दें।) (तीन मिनट)

दूसरा चरण

सीधे खड़े रहें। दोनों हाथ साथल से सटे रहें। एड़ियां मिली हुई, पंजे खुले रहें। श्वास भरते हुए हाथों को ऊपर की ओर ले जाएं। पंजों पर खड़े होकर पूरे शरीर को तनाव दें। श्वास को छोड़ते हुए हाथों को साथल के पास ले आएं और शिथिलता का अनुभव करें। (इस प्रकार तीन आवृत्तियों द्वारा क्रमशः तनाव और शिथिलता की स्थिति का अनुभव कराएं।) (तीन मिनट)

तीसरा चरण

पीठ के बल लेटें। दोनों पैर मिले हुए हों। दोनों हाथों को सिर की ओर फैलाएं। जितना तनाव दे सकें, दें। साथ में मूलबन्ध का प्रयोग करें। फिर शरीर को शिथिल छोड़ दें। (इस प्रकार तीन आवृत्तियों द्वारा क्रमशः तनाव और शिथिलता की स्थिति का अनुभव कराएं।)

दोनों पैरों के मध्य में एक फुट का फासला रहे। हाथों को शरीर के समानान्तर आधा फुट की दूरी पर फैलाएं। कायोत्सर्ग की मुद्रा में आ जाएं, आंखें बन्द, श्वास मन्द। शरीर को स्थिर रखें। प्रतिमा की भांति अडोल रहें। पूरे कायोत्सर्ग-काल तक पूरी स्थिरता ।

प्रत्येक अवयव में सीसे की भांति भारीपन का अनुभव करें। (एक मिनट) प्रत्येक अवयव में रुई की भांति हलकेपन का अनुभव करें। (दो मिनट)

चतुर्थ चरण

श्वास मन्द और शांत। दाएं पैर के अंगूठे पर चित्त को केन्द्रित करें। शिथिलता का सुझाव दें-अंगूठे का पूरा भाग शिथिल हो जाए॰॰॰ अंगूठा शिथिल हो रहा है। अनुभव करें-अंगूठा शिथिल हो गया है। इसी प्रकार प्रत्येक अंगुली, पंजा, तलवा, एड़ी, टखना, पिण्डली, घुटना, साथल तथा कटिभाग को क्रमशः शिथिलता का सुझाव दें और उसका अनुभव करें।

इसी प्रकार बाएं पैर के अंगूठे से कटिभाग तक प्रत्येक अवयव पर चित्त को केन्द्रित करें, शिथिलता का सुझाव दें और उसका अनुभव करें। (सात मिनट)

पेडू का पूरा भाग, पेट के भीतरी अवयव-दोनों गुर्दे, बड़ी व छोटी आंत, अग्नाशय, पक्वाशय, आमाशय, तिल्ली, यकृत, तनुपट।

छाती का पूरा भाग-हृदय, दायां फेफड़ा, बायां फेफड़ा, पसलियां, पीठ का पूरा भाग- मेरुदण्ड, सुषुम्ना, गर्दन। दाएं हाथ का अंगूठा, अंगुलियां, हथेली॰॰॰ मणिबन्ध से कोहनी और कोहनी से कन्धा। इसी प्रकार बाएं हाथ के प्रत्येक अवयव पर चित्त को केन्द्रित करें। (तीन मिनट)

कंठ, स्वर-यंत्र, ठुड्डी, मसूड़े, दांत, जीभ, तालु, दायां कपोल, बायां कपोल, नाक, दायीं कनपटी, दायां कान, बायीं कनपटी, बायां कान, दायीं आंख, बायीं आंख, ललाट और सिर-प्रत्येक अवयव पर क्रमशः चित्त को केन्द्रित करें। प्रत्येक को शिथिलता का सुझाव दें और उसका अनुभव करें। (पांच मिनट)

शरीर के प्रत्येक अवयव के प्रति जागरूक रहें। शरीर के चारों और श्वेत रंग के प्रवाह का अनुभव करें। शरीर के कण-कण में शांति का अनुभव करें। (दस मिनट)

श्वेत प्रवाह में शरीर तेज बहता जा रहा है।

जैसे पानी की धारा में तिनका, लकड़ी का टुकड़ा अथवा शव बहता है उसी प्रकार शरीर को श्वेत प्राण के प्रवाह में बहने दें बहने... दें... अनुभव करें-शरीर बहता जा रहा है।

पांचवां चरण

पैर के अंगूठे से सिर तक चित्त और प्राण की यात्रा करें। (तीन बार सुझाव दें)। अनुभव करें- पैर से सिर तक चैतन्य पूरी तरह से जागृत हो गया है... प्रत्येक अवयव में प्राण का अनुभव करें।

तीन दीर्घश्वास के साथ कायोत्सर्ग संपन्न करें। दीर्घश्वास के साथ प्रत्येक अवयव में सक्रियता का अनुभव करें। बैठने की मुद्रा में आएं।

शरण सूत्र का उच्चारण करें। **'वंदे सच्चं'** से कायोत्सर्ग संपन्न करें।

जीवन विज्ञान

खण्ड-खण्ड जीवन समस्या है। अखण्ड जीवन समाधान है। खण्ड-खण्ड चिन्तन समस्या है। अखण्ड चिन्तन समाधान है। खण्ड-खण्ड सत्य समस्या है। अखण्ड सत्य समाधान है। खण्ड-खण्ड आनन्द समस्या है। अखण्ड आनन्द समाधान है। खण्ड-खण्ड व्यक्तित्व समस्या है। अखण्ड व्यक्तित्व समाधान है। इसी प्रकार खण्ड-खण्ड शिक्षा समस्या है और अखण्ड शिक्षा समाधान है।

शिक्षा के दो आयाम हैं- बौद्धिक विकास और भावनात्मक विकास। बौद्धिक विकास शिक्षा का अंग है। उसे ही पूर्ण या अन्तिम लक्ष्य मानना भ्रान्ति है। बौद्धिक विकास आवश्यक है पर वही सबकुछ नहीं है। उसे सबकुछ मानने वाले शिक्षाविदों ने साइंस और टेक्नालॉजी के क्षेत्र में पर्याप्त विकास किया है पर उससे वांछित परिणाम नहीं आया।

देश की शिक्षानीति पर बातचीत के दौरान अनेक व्यक्तियों ने कहा- हमारी शिक्षा पद्धति गलत है। आचार्य तुलसी इस विचार से सहमत नहीं हुए। उन्होंने कहा- 'शिक्षा पद्धति के मूलभूत अंग हैं- शिक्षक, पुस्तकें और स्कूल। आज के शिक्षक प्रशिक्षित हैं। पुस्तकें विद्वानों द्वारा लिखी हुई हैं। स्कूल एवं कॉलेज के भवन पहले से बेहतर हैं। अन्य साधन सामग्री भी उत्तरोत्तर विकसित होती जा रही है। इतना सबकुछ है तब शिक्षा पद्धति गलत कैसे हुई ? मेरे अभिमत से शिक्षा पद्धति गलत नहीं, अधूरी है। यदि वह गलत होती तो अच्छे डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, वकील आदि कैसे निकलते? यदि हमारा इंगित अच्छे मनुष्य के निर्माण की ओर है तो शिक्षा में उसके लिए कोई संकाय ही कहां है? जो आवश्यक तत्त्व शिक्षा में नहीं हैं, उनका वहां समावेश करना है, न कि पूरी शिक्षा पद्धति को गलत ठहराकर देश की एक महत्त्वपूर्ण पीढ़ी को हीन भावना से आक्रान्त करना है।'

हमारी आकांक्षा है कि हमारी आने वाली पीढ़ी अपने देश और समाज की बनावट के अनुरूप अपने व्यक्तित्व का निर्माण करे। वह संस्कारी बने, अनुशासित बने, चरित्र सम्पन्न बने, व्यसनमुक्त बने और अपनी संस्कृति को जीने वाली बने।

इसके लिए अपेक्षा है कि विद्यार्थी के बौद्धिक विकास के साथ उसका भावनात्मक विकास भी हो। मनुष्य में दो प्रकार के भाव होते हैं- विधायक भाव और निषेधात्मक भाव। विधायक भावों से शक्ति का जागरण होता है और निषेधात्मक भावों से आचार एवं व्यवहार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इस दृष्टि से विद्यार्थी में विधायक भावों का विकास आवश्यक है। पर यह काम उपदेश से नहीं हो सकता। इसके लिए अपेक्षा है प्रायोगिक शिक्षा की।

वि.सं. २०३३ (सन् १६७६) सरदारशहर चतुर्मास प्रवास में अध्यापकों से सम्पर्क किया गया। फिर समय-समय पर अनेक शिविर आयोजित हुए। सैकड़ों शिक्षकों ने प्रशिक्षण लिया। विद्यालयों में कार्य प्रारम्भ हुआ। फिर इस प्रशिक्षण एवं प्रायोगिक प्रक्रिया के नाम पर चिन्तन चला। अनेक नाम सामने आए- योग शिक्षा, नैतिक शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा, मूल्यपरक शिक्षा आदि-आदि।

शिक्षण संस्थाओं की शरद्‌कालीन छुट्टियां चल रही थीं। २५ दिसम्बर, १६७८ से ३१ दिसम्बर, १६७८ तक 'अध्यात्म-योग-नैतिक शिक्षा प्राध्यापक प्रशिक्षण शिविर' तुलसी अध्यात्म नीडम् (लाडनूं) में आयोजित किया गया। यह शिविर श्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में हुआ। इस शिविर में नाम के बारे में व्यापक चर्चा चली। २८ दिसम्बर, १९७८ को श्री महाप्रज्ञ ने इस 'अध्यात्म-योग-नैतिक शिक्षा' उपक्रम को 'जीवन-विज्ञान' की संज्ञा दी और कहा- यह नाम समग्र मानव जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। यह व्यापक है॰॰॰ असाम्प्रदायिक है। यह नैतिक शिक्षा, योग- शिक्षा सबको समाहित करता है। यह सम्पूर्ण उपक्रम 'जीवन-विज्ञान' अर्थात् जीवन जीने की कला के विज्ञान के नाम से आगे बढ़ा। जीवन-विज्ञान का उद्देश्य है भाव और व्यवहार में परिवर्तन के माध्यम से व्यक्तित्व का सर्वाङ्गीण विकास करना। इसमें श्वास कैसे लेना, इस बिन्दु से प्रयोग का प्रारम्भ होता है और कैसे जीना, इस बिन्दु पर जाकर उसका समापन होता है।

थोड़े शब्दों में अभिव्यक्ति दी जाए तो जीवन-विज्ञान का अर्थ है- जीने की सम्पूर्ण कला। इसमें मनोविज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान, शरीर रचना विज्ञान, समाज विज्ञान आदि अनेक विषयों का प्रशिक्षण दिया जाता है और आवश्यक प्रयोग कराए जाते हैं। इन प्रयोगों से विद्यार्थी के ग्रंथि तंत्र और नाड़ी तंत्र प्रभावित होते हैं। ग्रंथि तंत्र के स्राव ठीक होते रहें और नाड़ी तंत्र सन्तुलित रहे, यही विकास की सीधी प्रक्रिया है। जीवन-विज्ञान का पाठ्यक्रम इसी दिशा में उठा हुआ एक कदम है। उसे शिक्षा के साथ जोड़ दिया जाए तो शिक्षा जगत की अनेक समस्याओं का सहज समाधान हो सकता है।

पिछले वर्षों में जीवन-विज्ञान का प्रसार हुआ है। भारत के विभिन्न प्रान्तों में विभिन्न विद्यालयों में उसके प्रयोग शुरू हुए। उन प्रयोगों से विद्यार्थी जगत् में परिष्कार की जानकारियां भी प्राप्त हुईं। एतद्विषयक साहित्य भी प्रकाशित हुआ है। जीवन-विज्ञान का स्नातकोत्तर अध्ययन भी जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में चल रहा है। उससे अनेक-अनेक विद्यार्थी जीवन-विज्ञान में स्नातकोत्तर बन गए। इससे एक स्वस्थ, अनुशासित और चरित्र सम्पन्न समाज की संरचना का सपना पूरा हो सकता है।

(क्रमशः)

संबोधि

:: आचार्य महाप्रज्ञ ::

बंध मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

मेघ का कथन ठीक है कि धर्म व्यक्ति के जीवन में बड़ा हस्तक्षेप करता है। लोक-जीवन का भवन झूठ पर खड़ा होता है। धार्मिक होने का अर्थ है- सत्य की दिशा में चलना। धार्मिक व्यक्ति के समस्त व्यवहारों में सत्य का प्रतिबिम्ब झलकने लगता है। अब वह पहले की तरह चल नहीं सकता, बोल नहीं सकता, लेना-देना नहीं कर सकता, बातचीत नहीं कर सकता। उसे कोई भी कार्य करते हुए यह सोचना होगा कि इससे धर्म की हानि होगी या वृद्धि धीरे-धीरे जीवन की असत् प्रवृत्तियां विदा होने लगेंगी। वर्षा से स्नात वनराजि की तरह एक दिन उसका जीवन दीप्तिमान हो उठेगा।

किन्तु पहले ही क्षण में धर्म के इस परिणाम की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। उसके लिए बड़े उत्साह, धैर्य, त्याग और संघर्षों की आवश्यकता होती है। धर्म का जीवन प्रारंभ करते ही घर, परिवार, समाज आदि से संघर्ष का सूत्रपात भी हो जाता है। लोग नहीं चाहते कि आप सबसे उदासीन हो जाएं। आपकी उदासी भी दूसरों को पीड़ाकारक बन जाती है। लोक-भय से ही अनेक व्यक्ति उस मार्ग पर चलना छोड़ देते हैं। धर्म की तेजस्विता में कोई संदेह नहीं है, संदेह है व्यक्ति की क्षमता पर।

धर्म का विकास सम्यग् दर्शन, सम्यग् ज्ञान और सम्यग् आचरण (चारित्र) पर निर्भर है। इनके अभाव में विकास नहीं, ह्रास होता है। धर्म के जीवंत सूत्रों की उपेक्षा कर धर्म के कलेवर को जीवित रखा जा सकता है, किन्तु धर्म की आत्मा को नहीं। जितने भी अर्हत्, बुद्ध और परम प्रज्ञा-प्राप्त साधक हुए हैं, उन्होंने मूल पर बल दिया है, गौण पर नहीं।

आनंद ने बुद्ध से पूछा- 'निर्वाण के बाद आपके शरीर का क्या किया जाए? बुद्ध ने कहा-'आनंद! इसमें सिर मत खपाओ, मैंने जो साधना-धर्म बताया है, उसका अभ्यास करो।'

वक्कलि भिक्षु से बुद्ध कहते हैं- 'जैसे यह तुम्हारा अशुचिमय शरीर है, वैसा ही बुद्ध का है। वक्कलि! मेरे इस शरीर को मत देखो, धर्म-शरीर को देखो। जो मेरे धर्म-शरीर को देखता है वह मुझे देखता है और जो मुझे देखता है वह मेरे धर्म-शरीर को देखता है।'

महावीर गौतम से कहते हैं- गौतम! सत्य की शोध में प्रमाद मत कर। मेरे से स्नेह मत कर। सम्यग् दर्शन, ज्ञान, चारित्र की आराधना कर मुक्त हो।'

जब बाह्य क्रियाएं और चमक-दमक व्यक्ति को प्रभावित करने लगते हैं तब धर्म का मौलिक ध्येय गौण हो जाता है या मौलिक धर्म के प्रति अनुत्साह होने से बाह्य क्रियाओं का महत्त्व बढ़ जाता है। मूल छूट जाता है और बाहरी पकड़ सुदृढ़ हो जाती है। मूल छिप जाता है और गौण ऊपर आ जाता है। जिसकी सुरक्षा के लिए जो होता है, उसकी सुरक्षा प्रमुख हो जाती है और मूल धूमिल हो जाता है।

धर्म की सुरक्षा प्रमुख है। इसी में प्राणिमात्र का हित है। उसके प्रति सजग होना जरूरी है। सम्यग् दर्शन, ज्ञान, चारित्र जितने पुष्ट और सशक्त होंगे, धर्म उतना ही शक्तिशाली होगा। इनके बाहर धर्म नहीं है।

इति आचार्यमहाप्रज्ञविरचिते संबोधिप्रकरणे
आत्ममूलकधर्मप्रतिपादननामा एकादशोऽध्यायः।

(क्रमशः)

मनोनुशासनम्

:: आचार्य तुलसी ::

एकाग्रता

प्रेक्षा से अप्रमाद (जागरूक भाव) आता है। जैसे-जैसे अप्रमाद बढ़ता है। वैसे-वैसे प्रेक्षा की सघनता बढ़ती है। हमारी सफलता एकाग्रता पर निर्भर है। अप्रमाद या जागरूक भाव बहुत महत्त्वपूर्ण है। शुद्ध उपयोग-केवल जानना और देखना बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। किन्तु इनका महत्त्व तभी सिद्ध हो सकता है जब ये लंबे समय तक निरन्तर चलें। देखने और जानने की क्रिया में बार-बार व्यवधान न आए, चित्त उस क्रिया में प्रगाढ़ और निष्प्रकम्प हो जाए। अनुवस्थित अव्यक्त और मृदुचित्त ध्यान की अवस्था का निर्माण नहीं कर सकता। पचास मिनट तक एक आलंबन पर चित्त की प्रगाढ़ स्थिरता का अभ्यास होना चाहिए। यह सफलता का बहुत बड़ा रहस्य है। इस अवधि के बाद ध्यान की धारा रूपान्तरित हो जाती है। लंबे समय तक ध्यान करने वाला अपने प्रयत्न से उस धारा को नये रूप में पकड़कर उसे और प्रलंब बना देता है।

अवबोध

:: मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ::

deZ cks/k

प्रश्न 25- उपशम में जब सर्वथा अनुदय है फिर इसे कर्म की अवस्थाओं में कैसे लिया ?

उत्तर : उपशम में सर्वथा अनुदय है पर मोह कर्म सत्ता रुप में विद्यमान रहता है, इसलिए इसका कर्म की अवस्थाओं में ग्रहण किया गया है।

प्रश्न 26- उपशम कर्म की एक अवस्था है फिर यह शुभ है या अशुभ, सावद्य है या निरवद्य ?

उत्तर : मोह कर्म की उदयमान अवस्था के बीच में अन्तर्मुहुर्त्त तक सर्वथा अनुदय रहना उपशम है, उस समय में प्रकृति के अनुरूप सम्यक्त्व व चारित्र, दोनों की प्राप्ति होती है, इसलिए वह अशुभ नहीं, शुभ है। सावद्य नहीं, निरवद्य है।

प्रश्न 27- उपशम भाव कर्म की अवस्था मात्र है, उसे संवर कैसे माना गया?

उत्तर : उपशम भाव कर्म की वह अवस्था है, जिसका आत्मा पर कोई असर नहीं रहता। इस अवस्था में सम्यक्त्व और चारित्र की प्राप्ति होती है। चारित्र संवर धर्म है, इसलिये उसे संवर कह दिया गया।

प्रश्न 28- निधत्ति किसे कहते हैं?

उत्तर : जिन कर्म प्रकृतियों में उदीरणा व संक्रमण नहीं होता, उनको निधत्ति कहते हैं।

प्रश्न 29- निकाचना किसे कहते हैं?

उत्तर : जिन कर्मों की जितनी स्थिति व विपाक है, उनको उसी रूप में भोगना निकाचना है। उनका आत्मा के साथ गाढ़ सम्बन्ध होता है।

प्रश्न 30- निधत्ति व निकाचित में क्या अंतर है ?

उत्तर : निकाचित में उद्वर्तन, अपवर्तन, उदीरणा, संक्रमण कुछ नहीं होता। निधत्ति में भी उदीरणा व संक्रमण नहीं होता पर उद्वर्तन, अपवर्तन होता है।

प्रश्न 31- क्या तप आदि विशिष्ट धार्मिक उपक्रमों से निकाचित कर्म को तोड़ा जा सकता है ?

उत्तर : इस बारे में दो चिंतन धाराएं हैं। कई आचार्यों का मत है- तप से निकाचित कर्मों का भी क्षय हो सकता है। देवगुप्त सूरी भी इसी अभिमत के पोषक थे। कई आचार्यों का अभिमत है- तपस्या से निकाचित कर्मों का निर्जरण नहीं हो सकता। उन्हें तो यथावत् भोगना ही पड़ता है।

प्रश्न 32- किसी भी परिस्थिति के निर्माण या कार्य की निष्पत्ति में क्या कर्म की ही भूमिका रहती है?,

उत्तर : परिस्थिति के निर्माण या कार्य की निष्पत्ति में केवल कर्म की भूमिका ही नहीं रहती। इसके लिए कर्म सहित पांच कारण माने गए हैं-

1- काल 2- स्वभाव 3- कर्म
4- पुरुषार्थ 5- नियति

इन पांचों को समवाय कहा जाता है।

प्रश्न 33- काल को कारण क्यों कहा गया है?

उत्तर : किसी भी कार्य की निष्पत्ति में काल के परिपाक की महती अपेक्षा है। शुभ, अशुभ कर्मों का फल तुरन्त नहीं मिलता, कालांतर में एक निश्चित समय पर ही मिलता है। तीर्थंकर अतुलबली होते हैं पर जन्म के साथ ही बोलने, चलने आदि की क्रियाएं नहीं कर पाते। दवा लेते ही रोग शांत नहीं होता, बीज-वपन करते ही वह वृक्ष नहीं बनता, वृक्ष बनते ही वह फल नहीं देता। प्रत्येक वस्तु की निष्पत्ति में काल की अहम भूमिका है।

प्रश्न 34- स्वभाव को कारण क्यों कहा गया है?

उत्तर : हर वस्तु अपने स्वभाव के अनुरूप निर्मित होती है। बीज में वृक्ष बनने का स्वभाव है। बबूल कभी आम पैदा नहीं कर सकता।

प्रश्न 35- कर्म को कारण क्यों कहा गया है ?

उत्तर : एक माता के एक समय में दो बच्चे पैदा हुए। उनमें एक सुरूप व दूसरा कुरूप, एक विद्वान् व दूसरा मूर्ख रह जाता है। यह सब कर्म का ही प्रभाव है। शुभाशुभ कर्म के संयोग से ही व्यक्ति को अनुकुलता व प्रतिकूलता मिलती है।

प्रश्न 36- पुरुषार्थ को कारण क्यों कहा गया है?

उत्तर : कर्म और पुरुषार्थ का परस्पर गहरा सम्बंध है। कर्म को बांधने व उन्हें विपाकोदय के रूप में भोगने में पुरुषार्थ की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

(क्रमशः)

अष्टम् आचार्य कालूगणी महाप्रयाण दिवस

कानपुर

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री संगीतश्रीजी के महामंत्रोच्चार से हुआ। सर्वप्रथम पूनम चंद सुराणा ने आचार्य तुलसी द्वारा रचित गीतिका 'भजिए निस दिन कालू गणिन्द' का संगान किया। साध्वी संगीतश्रीजी ने अष्टम् आचार्य की स्मृति में कहा कि वह बड़े प्रभावशाली और पुण्यवान आचार्य थे। उनका प्रभाव इतना तीव्र था कि विरोधीजन भी उनसे अभिभूत हुए बिना नहीं रह सकते थे। उनके युग में समाज की भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही प्रकार की उन्नति हुई। सभाध्यक्ष धनराज सुराणा ने आचार्य कालूगणी के जीवन से संबंधित अनेक रोचक घटनाओं का विवरण प्रस्तुत किया। सभा मंत्री संदीप जम्मड़ ने अपने वक्तव्य में कहा कि तेरापंथ का क्षेत्र विस्तार और संस्कृत भाषा का विकास आचार्य कालूगणी द्वारा हुआ। साध्वी शांतिप्रभाजी ने फरमाया कि आचार्य कालूगणी का सबसे बड़ा अवदान तेरापंथ धर्मसंघ में दो आचार्य- आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के रूप में मिला है। साध्वी कमलविभाजी ने फरमाया कि आचार्य कालूगणी के समय में साधुओं के वस्त्र, पात्र, रजोहरण आदि उपकरणों में कला का विकास हुआ था। तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल और तेरापंथ युवक परिषद् के संयुक्त प्रयास से अष्टम् आचार्य कालूगणी का निर्वाण दिवस साध्वीवृंद की प्रेरणा से मनाया गया।

बोरावड़

मकराना रोड़ स्थित वेदिका फार्म हाऊस में साध्वी प्रांजलप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टम् आचार्यश्री कालूगणी का ८८वां महाप्रयाण दिवस का आयोजन किया गया। तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद् व तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान व बालचंद बैताला के सौजन्य से आयोजित इस कार्यक्रम में मोहनलाल छाजेड़, बालचंद बैताला, सभाध्यक्ष रिखब भंडारी, तेममं अध्यक्षा हर्षा चौरड़िया, तेयुप अध्यक्ष विकास चौरड़िया ने कालूगणी के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। साध्वी मध्यस्थप्रभाजी ने अष्टमाचार्य के प्रति अपने हृदयोद्गार व्यक्त किये। साध्वी प्रांजलप्रभाजी ने सभी धर्मावलंबियों को संबोधित करते हुये फरमाया कि आचार्य कालूगणी समय के पाबंद और संकल्प के धनी थे। अपने संकल्प को पूरा करने के लिये वे भयंकर शारीरिक वेदना होने के बावजूद भी मालव प्रदेश से विहार कर लंबी यात्रा कर गंगापुर पधारे। गंगापुर में ही समाधिमरण कर दिव्यलोक की ओर प्रस्थान किया। कालूगणी एक महान आचार्य हुये और आपने ही इस युग को युगनायक आचार्य तुलसी और महान दार्शनिक आचार्य महाप्रज्ञ जैसे संत दिये। युगों-युगों तक आचार्य कालूगणी के अवदानों को याद किया जायेगा। हम पूज्य कालूगणी के महाप्रयाण दिवस के अवसर पर श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

चंडीगढ़

मुनि विनयकुमारजी आलोक ने अणुव्रत भवन तुलसी सभागार में तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टम् आचार्यश्री कालूगणी के चरम कल्याणक दिवस पर सभा को संबोधित करते हुए फरमाया- 'तेरापंथ के अष्टम् आचार्यश्री कालूगणी के शासनकाल को तेरापंथ का स्वर्णिम काल कहा जा सकता है। इस समय में तेरापंथ धर्मसंघ में शिक्षा, दीक्षा, साहित्य, साधना, कला आदि विभिन्न दिशाओं में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। आचार्य कालूगणी समय और संकल्प के महान धनी थे। अपने संकल्प को पूरा करने, तन में भयंकर वेदना के बावजूद मालव प्रदेश से विहार करके गंगापुर पधारे। आचार्य कालूगणी ने नारी जाग्रति के लिए अतुलनीय प्रयास किए। यहां के कण-कण में उनकी ऊर्जा जिंदा है। संघ को जो दिया वह कोई नहीं दे सकता। उन्होंने ही आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ जैसे महान दार्शनिक संत की सौगात दुनिया को दी। जो जीवन को भर जी लेते हैं उनकी मौत नहीं होती। तेरापंथ जिन बुलंदियों पर है वह आचार्यश्री के कृर्तत्व की देन है।'

मुनिश्री ने आगे फरमाया कि कालूगणी के युग में भी संघ को भयंकर विरोधों का सामना करना पड़ा था, पर वे विरोध अग्नि में तपे हुए स्वर्ण की भांति संघ की गरिमा को और अधिक निखार देने वाले बने। कालूगणी बचपन से ही बहुत संस्कारी थे। धर्म के प्रति उनके मन में विशेष अनुराग था। माता की धार्मिक वृत्ति ने उनके अनुराग को और अधिक वृद्धिगंत किया। मघवागणी के वरद हस्त की छत्रछाया में मुनि कालू की साधना एवं अध्ययन प्रारंभ हुआ। बालक अवस्था में भी कालूगणी बड़े स्थिरयोगी थे। बुद्धि तीक्षण एवं प्रतिभा विलक्षण थी। मघवागणी की सन्निधि में रहने का उन्हें लगभग पांच वर्ष का अवसर प्राप्त हुआ। इस छोटी सी अवधि में उन्होंने अपने को बहुआयामी विकास दिया। मघवागणी के पश्चात लगभग साढ़े चार वर्ष तक माणकगणी तथा बारह वर्ष तक डालगणी का शासनकाल रहा। पूज्य कालूगणी मघवागणी की तरह माणकगणी एवं डालगणी के सामने पूर्ण सर्मपित व जागरूक बने रहे। उनकी अप्रमतता इतनी थी कि उन्हें कभी उल्लाहना के रूप में एक शब्द संभवतः सुनना नहीं पड़ा। माणकगणी के स्वर्गवास होने के पश्चात अन्तरिम शासन व्यवस्था को सुस्थिर बनाये रखने में कालूगणी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। परिणामस्वरूप उन्हें अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति के संबंध में चिंतित होना नहीं पड़ा। कालूगणी के रूप में उनके सामने बना बनाया व्यक्तित्व था। उन्ही को उन्होंने अपना उत्तराधिकारी समर्पित कर दिया। कालूगणी के युग में जहां समण-समणी संपदा का अभूतपूर्व विस्तार हुआ, वहां तेरापंथ को विकास की विविध दिशाएं मिली। संघ का पुस्तक भंडार काफी समृद्ध हुआ।

मुनिश्री ने अंत में फरमाया कि कालूगणी के युग में तेरापंथ का क्षेत्र विस्तार भी बहुत हुआ। मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, आदि सुदूर प्रान्तों में सर्वप्रथम उन्होंने ही साधुओं को भेजा। विद्या के क्षेत्र में विशेषकर संस्कृत विद्या के क्षेत्र में कालूगणी के समय में उल्लेखनीय प्रगति हुई। उन्होंने न केवल संघ में संस्कृत पाठकों को ही तैयार किया अपितु भिक्षु शब्दानुशासनम् के रूप में संस्कृत व्याकरण को तैयार करवाकर संस्कृत विकास का एक द्वार खोल दिया। जब वे दिवंगत हुए तब एक सौ उनतालीस साधु और तीन सौ तैतीस साध्वियां संघ में विद्यमान थी।

सिकन्दराबाद

साध्वी डॉ॰ मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में तेरापंथ के अष्टमाचार्य कालूगणी की पुण्यतिथि मनाई गई। इस अवसर पर अपने श्रद्धास्वर व्यक्त करते हुए साध्वी डॉ॰ मंगलप्रज्ञाजी ने कहा- 'श्रीमद् कालूगणी ने तेरापंथ धर्मसंघ में विकास का बीजारोपण किया। वे तेरापंथ धर्मसंघ के ख्याति प्राप्त महासाहसी आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं। इसका साक्षात् उदाहरण है- २२ वर्षीय मुनि तुलसी को संघ का दायित्व सौंप देना। आचार्य कालूगणी पुण्यशाली प्रतापी आचार्य बने, जिन्होंने संघ को आचार्य तुलसी जैसा तेजस्वी आचार्य दिया। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ दोनों युगप्रधान आचार्य संघ को देकर इतिहास का सृजन किया। उनके दीक्षित संत तेजस्वी, वर्चस्वी और यशस्वी बने यह भी उनके सृजनशील, सुदीर्घ चिन्तन का परिचायक है।'

इतिहास अंकित अनेक घटनाओं का श्रवण कराते हुए साध्वीश्रीजी ने कहा- 'कालूगणी ने अपनी मेघा शक्ति से संघ को विकास के शिखर पर आरोहण करवाया। साध्वी समुदाय की शिक्षा के संदर्भ में उनका युगीन समयज्ञ चिन्तन सम्पूर्ण संघ के लिए प्रणम्य है। संघ हित में उनका मार्गदर्शन संघ के बहुमुखी विकास में प्रबल सहायक बना। यह भैक्षवगण का सौभाग्य हैं।'

साध्वी सुदर्शनप्रभाजी एवं साध्वी राजुलप्रभाजी ने अपने श्रद्धासिक्त भाव गीतिका के द्वारा प्रस्तुत किए। साध्वी सिद्धियशाजी ने कहा कि कालूगणी का अनुशासन लोकप्रिय था। मक्खन की तरह कोमल हृदययुत परम पावन कालूगणी के गुणों को हम प्रणाम करते हैं। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी चैतन्यप्रभाजी ने किया।

ज्ञानशाला दिवस का आयोजन

जसोल

शासनश्री साध्वी कमलप्रभाजी के सान्निध्य में राष्ट्रीय ज्ञानशाला दिवस का आयोजन तेरापंथी सभा, जसोल व ज्ञानशाला परिवार जसोल के तत्वावधान में बड़े उत्साह से मनाया। शासनश्री साध्वी कमलप्रभाजी ने नमस्कार महामंत्र का उच्चारण से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। साध्वी शताब्दीप्रभाजी के प्रेरणा एवं ज्ञानशाला प्रशिक्षकों की मेहनत से ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी गीत, मुक्तक, कथानक दृश्य, नाटक जैसे अनेक प्रेरणादायी बातों-बातों में आध्यात्मिक शिक्षा देने वाले कार्यक्रमों को प्रस्तुति दी गई। शासनश्री साध्वी कमलप्रभाजी ने अपने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि गणधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी की इस अनुपम देन ज्ञानशाला एक संस्कार शाला है। इस अध्यात्मिक स्कूल में बच्चों अपने देव, गुरू, धर्म के प्रति आस्थावान बनने, अपने धर्म के जड़ो से जुड़े रहने की शिक्षा दी जाती है। हमे अत्यंत खुशी होती जब हम छोटे-छोटे बच्चों से पच्चीस बोल, प्रतिक्रमण, पुरानी ढ़ालों को बिना देखे, शुद्ध उच्चारण के सुनते हैं। इस में सबसे बड़ा योगदान यह की प्रशिक्षिकाओं का है। वो अपना समय और श्रम का योगदान देती है। ज्ञानशाला के लिए ऐनीटाइम, ऐनीथींक्स, ऐनीवेयर तैयार रहने वाले सिवांची मालानी अध्यक्ष डूंगरचंद सालेचा, ज्ञानशाला संयोजक सम्पतराज चोपड़ा, सभा के अध्यक्ष उषभराज तातेड़, मुख्य प्रशिक्षक चंदा चौपड़ा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए अभिभावकों से ज्यादा से ज्यादा बच्चों को ज्ञानशाला से जोड़ने की प्रेरणा दी और प्रशिक्षिकाओं के श्रम और सहयोग की सराहना की। वरिष्ठ प्रशिक्षक पुष्पा बुरड़ ने साध्वी शताब्दीप्रभाजी, अभिनंदन सालेचा, दर्शन सालेचा, कुनिका बागमार सहित इन सभी का सहयोग की भूमिका के लिए आभार ज्ञापन किया। साथ ही विशेष सहयोग के लिए प्रशिक्षिका अभयमती डोसी व कार्यकर्ता पीयूष मोदी को तेरापंथी सभा जसोल की ओर से सम्मनित किया गया। इस कार्यक्रम मे करीब ६५ ज्ञानशाला के ज्ञानाथ व १० प्रशिक्षक तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मण्डल, तेरापंथ किशोर मंडल के सदस्य अपनी सहभागिता निभाई। कार्यक्रम का संचालन जयश्री सालेचा ने किया।

नशामुक्ति कार्यशाला एलिवेट का आयोजन

गोरेगांव (मुंबई)

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्वावधान में आचार्यश्री महाश्रमणजी की प्रेरणा से सेंट जोन्स यूनिवर्सल स्कूल में सत्र के प्रशिक्षक सीए मुदित भंसाली और सायरा जैन डिजिटल समन्वयक अवि धाकड़ और हीर कोठारी एवं सत्र समन्वयक अणुविभा गोरेगांव मुंबई संयोजक डिंपल हिरण एवं टीम की सहभागिता से एलिवेट एक्सपीरियंस जीम रियल हाई का सुन्दर आयोजन किया गया। सत्र के पर्यवेक्षक सोनल जैन की सराहनीय उपस्थिति रही। कुल ३२५ छात्रों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में स्कूल के छात्रों ने अपने अनुभव एलिवेट टीम से साझा किए। कुछ छात्र आगे आए और कार्यक्रम के बारे में अपने अनुभव और प्रतिक्रिया बताई। एक छात्र ने बताया कि वह नियमित रूप से वेप्स का सेवन करता है और जिसके कारण वह पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाता है पर आज उसे किसी भी प्रकार के नशे से दूर रहने की प्रेरणा मिली और उसने नशा मुक्त जीवनयापन का संकल्प लिया। कार्यक्रम में पूरी स्कूल की टीम का सराहनीय सहयोग रहा। टीम एलिवेट का स्वयं प्रिंसिपल के साथ पुरे स्टॉफ ने धन्यवाद दिया और कहा कि आप आने वाले भारत के भविष्य के लिए बहुत ही अच्छा कार्य कर रहे हैं। नशा मुक्ति के जागरूकता का कार्यक्रम हर स्कूल में होना चाहिए, जिससे आने वाली भारत की भावी पीढ़ी का भविष्य सुंदर हो।

आसक्ति से अनासक्त चेतना का विकास करने का पर्व है- पर्युषण महापर्व

सिवानी, हरियाणा

शासनश्री साध्वी कुंथुश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, सिवानी के तत्वावधान में तेरापंथ भवन में पर्युषण महापर्व के कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुए। शासनश्री साध्वी कुंथुश्रीजी ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा- 'पर्युषण पर्व महान पर्व है, आलौकिक पर्व है, बाहर से भीतर, वासना से उपासना की ओर जाने एवं आसक्ति से अनासक्त चेतना का विकास करने का पर्व है। इन दिनों विशेष धर्माराधना की जाती है। आगम वाचन, प्रवचन, श्रवण, प्रतिक्रमण, तप, त्याग, प्रत्याख्यान, पौषध, जप आदि करना ही इस पर्व की साधना-आराधना है।'

पर्युषण पर्व के प्रथम दिन खाद्य संयम दिवस पर साध्वीश्रीजी ने कहा- 'भोजन हमारे जीवन का पहला तत्व है, शरीर के साथ भोजन का घनिष्ठ सम्बन्ध है। विकास का पहला द्वार है, हमारे व्यक्तित्व का घटक है, वृत्तियों का निर्माता है पर उद्देश्य आत्महित होना चाहिए। केवल स्वाद के लिए चटपटे गरिष्ट एवं तली हुए वस्तुओं का अधिक प्रयोग नहीं करना चाहिए। साध्वीश्रीजी ने आगे भगवान महावीर के पूर्व भव नयसार के भव का सुन्दर विवेचन किया। साध्वी सुमंगलाजी एवं साध्वी सुलभयशाजी ने सुमधुर गीत का संगान किया। साध्वी सम्बोधयशाजी ने खाद्य संयम पर सारगर्भित विचारों की प्रस्तुति दी।

स्वाध्याय दिवस पर शासनश्री साध्वीश्रीजी ने कहा- 'पर्वाधिराज पर्युषण आत्मावलोकन का पर्व है। आत्मा के विषय में अनुप्रेक्षा चिंतन-मनन करना स्वाध्याय है। शास्त्रों का मर्यादापूर्वक अध्ययन करना स्वाध्याय है। स्वाध्याय से ज्ञानावरणीय कर्म क्षीण होता है। ज्ञान का विकास होता है। मानसिक संबल प्राप्त होता है। स्वाध्याय से हमारा दृष्टिकोण सकारात्मक होता है।' साध्वीश्रीजी ने भगवान महावीर के पूर्वभव मरीचिकुमार के भव का रोचक ढ़ंग से विवेचन किया। साध्वी सुलभयशा ने कहा- 'स्वाध्याय अन्धकार से प्रकाश की ओर प्रस्थान करवाता है। भीतर का कचरा निकालता है।' साध्वीश्रीजी ने मर्यादा पत्र हाजरी का वाचन किया। सभाध्यक्ष रतनलाल जैन ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन श्रावक समाज को करवाया।

सामायिक दिवस पर शासनश्री साध्वीश्रीजी ने कहा- 'भगवान महावीर से पूछा गया- भंते!सामायिक क्या है? सामायिक का अर्थ क्या है? भगवान ने फरमाया कि सामायिक का अर्थ है समता की साधना, आत्मा में रहना, अपनी आत्मा में स्थित होने का अभ्यास करना। सामायिक करना प्रत्येक श्रावक का पुनीत कर्तव्य है। सामायिक से भावशुद्धि, चित्त समाधि, कषाय की मन्दता, मन की एकग्रता एवं तनाव मुक्ति होती है। कर्मजा शक्ति का विकास होता है। पुनिया श्रावक की एक सामायिक जगत प्रसिद्ध है।' साध्वी सुलभयशाजी के मधुर गीत से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ।

वाणी संयम दिवस पर साध्वीश्रीजी ने कहा- 'पर्युषण पर्व अध्यात्म प्रधान, त्याग प्रधान एवं संयम प्रधान पर्व है। इसे तप, जप, त्याग एवं आध्यात्मिक अनुष्ठान से मनाया जाता है। कब बोलें, कितना बोलें, कैसे बोलें- यह विवेक होना चाहिए। किसी के दिल में ठेस पहुंचे, ऐसी भाषा नहीं बोलें। जीवन में कई प्रसंग ऐसे आते हैं, जहां मौन रहना श्रेयस्कर होता है। मौन से ऊर्जा उत्पन्न होती है।' साध्वीश्रीजी ने भगवान महावीर के सौलहवें भव विश्वभूति के भव का विस्तार से विवेचन किया। साध्वी सम्बोधयशाजी ने वाणी संयम पर अपने विचार अभिव्यक्त किये।

अणुव्रत चेतना दिवस पर साध्वीश्रीजी ने कहा- 'आज का दिन अणुव्रत चेतना का दिन है। अणुव्रत क्या है- एक वाक्य में इसका अर्थ हो सकता है कि चरित्र विकास के लिए किए जाने वाले संकल्प का नाम है- अणुव्रत अर्थात छोटे-छोटे व्रत एवं नियम। अणुव्रत का दर्शन क्या है, पौराणिकता क्या है, प्रतीक क्या है, उपासना पद्धति क्या है- इन सबकी जानकारी सभी को होनी चाहिये। अणुव्रत लोकल ट्रेन की तरह सबके लिए है, हर कोई जा सकता है, सर्व-साधारण भी अणुव्रतों को अपना सकता है। साध्वीश्रीजी ने भगवान महावीर के अठारहवें भव का रोचक वर्णन किया। साध्वी सुमंगलाश्रीजी ने भगवान ऋषभ के पूर्व भवों पर प्रकाश डाला।

जप दिवस पर शासनश्री साध्वीश्रीजी ने कहा- 'व्यक्ति बदलना चाहता है। बदलाव का एक सूत्र है- नाद योग। जप में वह शक्ति है कि व्यक्ति चाहे जैसा बन सकता है। तन्मयता, एकग्रता एवं विधि संहिता से जप करने से ऊर्जा प्राप्त होती है। मनवांछित कार्य भी सिद्ध हो सकते हैं। मंत्र जप से अपनी आत्मा को प्रभावित करें। आत्माराधना करें।' साध्वीश्रीजी ने भगवान महावीर के पूर्व भव त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव का विवेचन किया। साध्वी सुमंगलाश्रीजी ने २३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के पूर्व भव का विशद विवरण प्रस्तुत किया। साध्वी सुलभयशाजी ने मधुर गीत से मंगलाचरण किया।

ध्यान दिवस पर शासनश्री साध्वीश्रीजी ने कहा- 'आज का युग टेंशन का युग है, शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक तनावों को दूर करने के लिए आचार्य महाप्रज्ञजी का अनुपम अवदान है- प्रेक्षाध्यान। एक आलम्बन पर अपने आपको स्थित करना, एकाग्र करना ध्यान है। ध्येय में एकाग्र होना, अपने आपको देखना, स्वयं से स्वयं को देखना ही ध्यान है। ध्यान के पांच हेतु हैं- आध्यात्मिक चेतना का विकास, मन की प्रसन्नता, चित्त की निर्मलता, आवेश-आवेग पर नियंत्रण एवं अंतदृष्टि का जागरण। प्रेक्षाध्यान वर्तमान में जीना सिखाता है। तनाव मुक्त जीना सिखाता है।' साध्वीश्री सुलभयशाजी ने प्रारम्भ में प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाये।

संवत्सरी महापर्व पर शासनश्री साध्वी कुंथुश्रीजी ने कहा- 'जैन इतिहास के अनुसार संवत्सरी का दिन अहिंसा की प्रतिष्ठा का दिन है। यह अध्यात्म का शिरोमणि पर्व है। यह साधना-आराधना का पावन पर्व है, कषाय विजय का पर्व है, अतीत के पर्यालोचन का पर्व है एवं राग द्वेष की ग्रन्थियों को खोलने का पर्व है। क्या किया, क्या कर रहे हैं और क्या करणीय है, इन बिन्दुओं पर चिन्तन करें, आत्मनिरीक्षण करें।' साध्वीश्री ने संवत्सरी पर्व का विशद ऐतिहासिक विवेचन किया एवं भगवान महावीर की साधना का रोमाचंक वर्णन करते हुए महासती चन्दनबाला के जीवन प्रसंग को संगीत की स्वर लहरियों के साथ प्रभावी ढ़ंग से प्रस्तुत किया। तेरापंथ की गौरवशाली आचार्य परम्परा आचार्य भिक्षु से आचार्य महाश्रमणजी तक का गौरवपूर्ण सफरनामा प्रस्तुत किया। साध्वी सुमंगलाश्रीजी ने भगवान महावीर के जन्म से लेकर दीक्षा तक जीवन चरित्र का वाचन किया एवं जैन धर्म के प्रभावक आचार्यों का वर्णन किया। साध्वी सुलभयशाजी ने गीत का संगान किया। तोषाम से समागत महासभा सदस्य पवन जैन, तोषाम सभाध्यक्ष नरेन्द्र जैन, राजेन्द्र जैन तीन भाईयों ने भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया। सभी विषयों पर साध्वीवृंद के प्रासंगिक गीत एवं व्यक्तव्य हुए। रात्रि में प्रतिदिन सामूहिक प्रतिक्रमण का क्रम चला।

क्षमायाचना दिवस पर शासनश्री साध्वी कुंथुश्रीजी ने धर्म परिषद् को सम्बोधित करते हुए कहा- 'क्षमा वीरों का भूषण है, कायर व्यक्ति क्षमा की गरिमा से मंडित नहीं हो सकता, क्षमा वही कर सकता है, जिसका हृदय विशाल हो, जिसमें सहज-सरलता हो। क्षमा वीरत्व की अलंकृति है। मानव गलती का पुतला है, चाहे-अनचाहे, ज्ञात-अज्ञात में त्रुटियां हो जाती हैं, उसके प्रतिकार के लिए अनुपम अवदान है खमत-खामणा। आज के दिन सभी प्रणियों के प्रति हार्दिक अन्तकरण से खमत-खामणा करें। जिसके प्रति मनमुटाव हो उससे विशेष क्षमायाचना करें।' साध्वीश्रीजी ने समस्त श्रावक समाज से साध्वियों की तरफ से खमत-खामणा किया।

तेरापंथी सभाध्यक्ष रतनलाल जैन ने साध्वीवृंद तथा समस्त श्रावक समाज से खमत-खामणा किया। तेरापंथी महासभा सदस्य पवन जैन, तोषाम ने अपने विचार प्रस्तुत किये। पर्युषण पर्व के आठों ही दिन तप-जप, स्वाध्याय-ध्यान का नियमित क्रम चला। छोटे से क्षेत्र में ५१ पौषध १०० से अधिक उपवास हुए। चातुर्मासकाल में १० अठाई हो चुकी है।

ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव 2023

गंगाशहर

तेरापंथी सभा गंगाशहर द्वारा ज्ञानशाला का संचालन किया जाता है, जिसमें तेरापंथ महिला मंडल व तेरापंथ युवक परिषद् का सहयोग रहता है। ज्ञानशाला गंगाशहर का वार्षिकोत्सव २०२३ मुनि श्रेयांसकुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुनि श्रेयांशकुमारजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि ज्ञानार्थियों के विकास के लिए आचार्यश्री तुलसी ने ज्ञानशाला का अवदान हमें दिया। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी भी की ज्ञानशाला उपक्रम पर विशिष्ट कृपा है। प्रशिक्षिकाएं अध्यापन के साथ बच्चों को विनय, विवेक व अनुशासन का पाठ पढ़ाती है। बच्चों की प्रस्तुतियां सराहनीय है। ऐसी प्रस्तुतियों से बच्चों के व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास होता है। उन्होंने आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा रचित गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सरदारशहर से समागत थाली क्षेत्र की आंचलिक संयोजिका कांता चिण्डालिया ने कहा कि ज्ञानशाला का कार्य हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रशिक्षिकाएं अपना समय, श्रम नियोजित कर वर्ष भर नियमित रूप से समाज के बच्चों के लिए कार्य करती है। उन्हें संस्कारवान बनाने में लगी रहती है। कार्यकर्ता अपना पूरा श्रम व्यवस्थाओं को सुचारु करने हेतु लगाते हैं तथा सभा उनके लिए कुशल व्यवस्था करती है। इस तरह से ज्ञानशाला तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद् का संयुक्त उपक्रम है। उन्होंने बच्चों की प्रस्तुतियों की मुक्तकंठ से प्रशंसा करते हुए गंगाशहर की ज्ञानशाला को परिपूर्ण एवं विशिष्ट ज्ञानशाला बताया। कार्यक्रम का शुभारंभ २५१ ज्ञानार्थियों द्वारा भव्य परेड से किया गया। मुनि श्रेयांशकुमारजी के श्रीमुख से नमस्कार महामंत्र का पाठ किया गया। तेरापंथ सभा मंत्री व ज्ञानशाला क्षेत्रीय प्रभारी रतनलाल छलाणी ने स्वागत वक्तव्य दिया। छोटे-छोटे ज्ञानार्थियों ने तुलसी अष्टकम् का संगान किया। प्रशिक्षिकाओं के निर्देशन में छोटे-छोटे ज्ञानार्थियों ने ज्ञानशाला गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में कॉमेडी किड्स, करें योग रहे निरोग, एजुकेशन थीम डांस, परेशान पड़ोसी कॉमेडी, क्वालिटी ऑफ ज्ञानशाला, एक्सपेक्टेशन वर्सेस रियलिटी की प्रस्तुति की गई। बच्चों ने सामायिक का महत्व नाटिका का मंचन भी किया। इसके साथ ही कई सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम में वार्षिक प्रतिवेदन प्रभारी चैतन्य रांका द्वारा प्रस्तुत किया गया। मीडिया रिपोर्ट मीडिया प्रभारी संदीप रांका ने प्रस्तुत की। मुख्य अतिथियों एवं संस्कार बोध भाग १ से ५ में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों का सम्मान तेरापंथी महासभा संरक्षक जैन लूणकरण छाजेड़ तथा सभाध्यक्ष अमरचंद सोनी, उपाध्यक्ष नवरतन बोथरा, सहमंत्री पवन छाजेड़, संगठन मंत्री मांगीलाल लूणिया, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष संजू लालाणी, उपमंत्री बिंदु छाजेड़, संयोजिका सुनीता पुगलिया, तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष अरुण नाहटा, मंत्री भरत गोलछा, सहमंत्री ऋषभ लालाणी द्वारा किया गया। प्रशिक्षिकाओं का सम्मान आंचलिक संयोजिका कांता चिंडालिया ने किया। आभार ज्ञापन जयश्री भूरा द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुख्य प्रशिक्षिका प्रेम बोथरा तथा देवेंद्र डागा ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद, कन्या मंडल, किशोर मंडल के कार्यकर्ताओं का श्रम नियोजित हुआ।

तेरापंथ महिला मंडल के आयोजन

द पावर ऑफ सबकॉन्शियस माइंड कार्यशाला

मदुरै

तेरापंथ भवन में तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में द पावर ऑफ सबकॉन्शियस माइंड की कार्यशाला रखी गई। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल की बहिनों ने प्रेरणा गीत से की। मुंबई से पधारे प्रवक्ता उपासक सुरेश ओसवाल एवं उपासक अशोक चौधरी ने बताया कि सबकॉन्शियस माइंड का मतलब होता है- अवचेतन मन। हमारा मन दो भागों में विभक्त है। पहला कॉन्शियस माइंड और दूसरा सबकॉन्शियस माइंड। जब हम किसी भी चीज को ज्यादा दिन तक याद रखते हैं तो वह हमारे सबकॉन्शियस माइंड में याद होता है। सबकॉन्शियस माइंड का पावर बहुत ही अधिक और अद्‌भुत होता है। अगर हम कोई भी कार्य करना चाहते हैं तो बस अपने अवचेतन मन को बता देना है और चेतन मन उस कार्य को अपने आप कर देता है। यह हमारे सबकॉन्शियस माइंड की पावर है और कहानी के माध्यम से बताया कि आलवेस थिंक पॉजीटिव एंड ट्रेन योर माइंड एंड सॉल। तेरापंथी सभा अध्यक्ष अशोक जीरावला, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा लता कोठारी, तेरापंथ युवक परिषद् मंत्री राजकुमार नाहटा आदि उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन ते॰म॰म॰ मंत्री सुनिता कोठारी ने किया।

कोयंबटूर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार कोयंबटूर तेरापंथ महिला मंडल ने द पावर ऑफ सबकॉन्शियस माइंड कार्यशाला का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में किया। कार्यक्रम का शुभारंभ कनकप्रभा बुच्चा व शोभा बुच्चा ने मंगलाचरण से किया। मंडल की बहिन बबीता गुनेचा व रुपकला भंडारी ने प्रेरणा गीत का संगान किया। अध्यक्ष मंजू सेठिया ने सभी का स्वागत व अभिनंदन किया। उपासक श्रेणी के प्रचेता सुरेंद्र सेठिया ने बहुत ही सरल वह सुंदर तरीके से समझाया कि चेतन और अवचेतन मन क्या है और कैसे काम करते हैं। हमारा अवचेतन मन इतना शक्तिशाली है कि अगर हम अपने अंदर अपने दिल-दिमाग में बैठा लें कि मुझे दुनिया का सबसे अमीर और सफल आदमी बनना है तो हमारा अवचेतन मन हमारे लिए रास्ता बनाना शुरू कर देता है। अवचेतन मन शरीर की हर क्रियाओं को कंट्रोल करता है। कार्यशाला में लगभग ६० भाई-बहिनों की उपस्थिति रही। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री सुमन सुराणा ने किया। कार्यशाला का संचालन दीपिका बोथरा ने किया।

टापरा

तेरापंथ महिला मंडल टापरा ने मुनि जयकुमारजी के सान्निध्य में द पावर ऑफ सबकॉन्शियस माइंड कार्यशाला का आयोजन किया। मुनि जयकुमारजी के द्वारा नमस्कार महामन्त्र से कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। उसके बाद महिला मंडल के सदस्यों ने प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया। तत्पश्चात सोनम बाफना ने कहा कि द पावर ऑफ सबकॉन्शियस माइंड (अवचेतन मन की शक्ति) अवचेतन मन हमारे भीतर में बहुत से खजाना लिए हुआ है। हमें जरूरत है, उसे सक्रिय करने की। मुनि जयकुमारजी ने फरमाया कि बिना ध्यान के व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता है। चिंतन-मनन करना चेतन का काम है। मुनिश्री ने अवचेतन मन से संबंधित एक घटना सुनाई। योग की भाषा में अवचेतन मन को कुंडली भी कहा गया है। मुनिश्री ने १० मिनट ध्यान-कायोत्सर्ग करवाया। आभार ज्ञापन तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष मंजु देवी गोलेच्छा ने किया।

इरोड

तेरापंथ महिला मंडल इरोड द्वारा आज द पावर ऑफ सबकॉन्शियस माइंड कार्यशाला में मोटिवेशनल स्पीकर पिंकी भंसाली ने कहा कि पांच इंद्रियों की वजह से जो कोई भी सूचना हमारे मन में जाती है तो पहले वह चेतन मन तक जाती है। हर कोई बात अवचेतन तक नहीं जाती मगर जब कोई यूनिक बाद देखते हैं, सुनते हैं, करते हैं या कोई हमारे भावों के साथ जुड़कर जो हमारे मन तक सूचना पहुंचती है और या जिसको हम बार-बार रिपीट करके हमारे मस्तिष्क तक सूचना पहुंचाते हैं, वह सबकॉन्शियस माइंड के अंदर स्टोर हो जाती है। इसके अलावा हम और तीन प्रकार से भी अवचेतन मन को फीड कर सकते हैं- १॰ रात्रि में सोने से जस्ट पहले, २॰ सुबह उठते ही व ३॰ मेडिटेशन के बाद। जो बात पूरी शिद्दत के साथ, दृढ़ निश्चय के साथ जो बात मन में ठान ली जाती है, अपने अवचेतन मन तक पहुंचाई जाती है, फिर वही अवचेतन मन आपके सपनों को अवश्यमेव पूर्ण करता है। कार्यशाला का कुशल संचालन तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष पिंकी भंसाली ने किया। कार्यशाला में उद्‌बोधन देते हुए प्रवक्ता उपासक अर्जुन मेड़तवाल ने कहा- अवचेतन मन में अनेक प्रकार के विचार भरे रहते हैं। उसमें सकारात्मक विचार भी होते हैं, नकारात्मकता विचार भी होते हैं। आदमी राग और द्वेष को त्यागे, नकारात्मक चिंतन को त्याग कर अपनी सोच को सकारात्मक बनाए, यह जरूरी है। उन्होंने आत्मिक विकास के लिए ज्ञाता-दृष्टा भाव का विकास करने की प्रेरणा दी।

श्रीमद् जयाचार्य का 143वां महाप्रयाण दिवस

चंडीगढ़

मुनि विनयकुमारजी आलोक ने अणुव्रत भवन के तुलसी सभागार में तेरापंथ के चतुर्थ जयाचार्य के १४३वें निर्वाण दिवस पर सभा को संबोधित करते हुए कहा कि तेरापंथ के चतुर्थ आचार्यश्री जीतमलजी जैन परम्परा में एक महान प्रतिभाशाली आचार्य हुए हैं। उन्होंने अपनी कृतियों में अपना उपनाम जय रखा। इसलिए वे जयाचार्य के नाम से ही अधिक विख्यात हैं।

जयाचार्य प्रारम्भ से ही स्थिर योगी एवं महान मेधावी थे। चौदह वर्ष की बालवय में उनकी स्थित प्रज्ञा को देखकर एक अन्यमतावलंबी विरोधी भाई के मुख से निकल पड़ा- जिस संघ में ऐसे निष्ठावान स्थिर योगी मुनि विद्यमान है, उस संघ की नींव को कम से कम १०० वर्ष तक तो कोई हिला नहीं सकता। जयाचार्य की विकासशील क्षमताओं को देखकर ऋषिराय ने वि॰स॰ १८६४ में उन्हें युवाचार्य पद पर नियुक्त किया। ऋषिराय के स्वर्गवास के वि॰स॰ १६०८ माघ शुक्ला पूर्णिमा को उन्होंने तेरपंथ धर्मसंघ का दायित्व संभाला। जयाचार्य के शासनकाल में तेरापंथ धर्मसंघ एक शताब्दी को पार कर दूसरी शताब्दी में चरणन्यास कर रहा था। वह युग विचारों के संक्रमण का युग था। तेरापंथ की आन्तरिक व्यवस्थाएं परिवर्तन मांग रही थी। जयाचार्य ने धर्मसंघ में अनेक व्यवस्थाओं को जन्म दिया। वर्तमान युग में समाजवाद की चर्चा हो रही है। जयाचार्य ने आज से एक शताब्दी पूर्व संघ में संविभाग की व्यवस्था स्थापित कर समाजवाद को मूर्त रूप दे दिया था। जयाचार्य ने न केवल संघीय पुस्तकों धर्मोपकरणों एवं श्रम का ही संविभाग किया। अपितु साधु-सावियों के वर्गों का भी समीकरण किया। उस समय तक साधु-साध्वियों के वर्गों में सहयोगियों की संख्या समान नहीं थी। जयाचार्य ने मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से सबके मानस को तैयार कर व्यवस्था को सुचारू रूप प्रदान किया। इस व्यवस्थागत परिवर्तन को आज की भाषा में जयाचार्य की क्रांति कहा जा सकता है। संघ को समृद्ध एवं सुसंगठित रखने के लिए उन्होंने नयी मर्यादाओं का निर्माण किया।

मुनिश्री ने अंत में फरमाया कि जयाचार्य के साहित्य का बहुत बड़ा भाग आचार्य भिक्षु के विचारों को गुम्फित करने में कृतार्थ हुआ है। आचार्य भिक्षु के प्रति वे सर्वात्मना समर्पित थे। उन्हें आचार्य भिक्षु का महान भाष्यकार कहा जा सकता है। वे आचार्य भिक्षु के जीवन में इस तरह समा गये की उनकी पहचान द्वितीय भिक्षु के रूप में होने लगी। जयाचार्य महान स्वाध्याय प्रेमी थे। अनेक आगमनों की हजारों गाथाएं उन्हें कण्ठस्थ थी। मुनि मघराजजी को अपना उतराधिकार सौंपने के पश्चात वे अपना अधिकार्य समय आगम स्वाध्याय, ध्यान, आत्मचिंतन एवं साहित्य सृजन में लगाते।

भीलवाड़ा

शासनश्री मुनि हर्षलालजी के पावन सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ के चतुर्थ आचार्य श्रीमद् जयाचार्य का १४३वां महाप्रयाण दिवस मनाया गया। मुनिप्रवर के नवकार महामंत्र उच्चारण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। शासनश्री मुनि हर्षलालजी ने जयाचार्य को समर्पित 'गण में थारों उज्ज्वल इतिहास' गीतिका का संगान किया एवं उनका व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व कहानी के माध्यम से बताया। मुनि यशवन्तकुमारजी ने संक्षिप्त शब्दों में जयाचार्य का जीवन वृत्त बताया कि रोयट ग्राम में जन्म, माता कल्लूजी, पिता आईदानजी थे। आपका आचार्यकाल ३० वर्ष एवं जीवनकाल ७८ वर्ष का रहा। राजस्थान की राजधानी जयपुर में आपका महाप्रयाण हुआ। तेरापंथ धर्मसंघ को जयाचार्य ने अनेकों अवदान दिए जो आज भी संघ में उपयोगी है। अनेक विशेषताओं के समवाय आचार्य जिनका पूरा जीवन अनुशासन एवं मर्यादा की अनूठी मिसाल था। अध्यात्मवेता, तत्ववेता एवं विधिवेता जैसे गुणों का आप में समवेश था। ज्ञान का अथक भंडार व उनकी प्रतिभा बेजोड़ थी। जयाचार्य के साहित्य ग्रंथ एवं चौबीसी से अध्यात्म के अनेक सूत्र हमें प्राप्त हो सकते हैं। ऐसे आचार्य का स्मरण करते हुए आपने श्रद्धा स्वर व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल से विनीता भानावत एवं बहिनों ने जयाचार्य के प्रति श्रद्धासिक्त भावों से गीतिका की प्रस्तुति दी। रोशनलाल चिपड़, मदनलाल टोडरवाल, संगीता चोरड़िया, पुष्पा पामेचा, सुमन लोढ़ा, नीलम लोढ़ा इन सभी ने जयाचार्य के प्रति श्रद्धा भावों की अभिव्यक्ति दी।

उड़ान ज्ञान गगन में कार्यशाला

नंदनवन, मुंबई

तेरापंथ महिला मंडल मुंबई द्वारा कार्यशाला 'उड़ान ज्ञान गगन में' का आयोजन आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य एवं साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी की प्रेरणा से नंदनवन में किया गया।

मुख्यवक्ता साध्वी प्रबुद्धयशाजी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला की शुरुआत की। विषय 'क्या आपके पास तेरापंथ का आधार कार्ड है' को प्रतिपादित करते हुए फरमाया कि स्वयं के व्यक्तित्व की पहचान के लिए क्या आपके पास तेरापंथ का आधार कार्ड है। गुरुधारणा, सम्यकत्व दीक्षा के पांच नियमों की जानकारी दी। देव, गुरु, धर्म पर श्रद्धा रहना आवश्यक है। ऐसी दुर्लभ श्रद्धा हमें विरासत में प्राप्त है। आधुनिकता अच्छी है पर उसके साथ मौलिकता नहीं जानी चाहिए। अनुशासन, सेवा और समर्पण देखना है तो तेरापंथ में देखना चाहिए। क्या आपके जीवन व्यवहार में, आपके संस्कार में तेरापंथ बोलता है। अपना मूल्यांकन स्वयं करें। यह आधार कार्ड आपके जीवन के लिए कल्याणकारी बनेगा।

मुंबई तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष विमला कोठारी, मंत्री संगीता चपलोत, अभातेमम ट्रस्टी प्रकाशदेवी तातेड़, तरूणा बोहरा, पूर्वाध्यक्ष मीना सुराणा, प्रेमलता सिसोदिया, भारती सेठिया, रचना हिरण आदि की उपस्थिति रही। सीमा बाफना ने संचालन और आभार ज्ञापन किया। लगभग ६०० बहनों की सराहनीय उपस्थिति रही।

आध्यात्मिक विकास का पर्व है पर्युषण

कोटा

शासनश्री साध्वी धनश्रीजी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व का आयोजन हुआ। शासनश्री साध्वीश्रीजी ने कहा कि पर्युषण पर्व सब पर्वों में महान पर्व है। इस पर्व पर व्यक्ति बाहर से भीतर की ओर लौटता है। उन्होंने इस अवसर पर अधिक से अधिक त्याग, तप, ध्यान, स्वाध्याय आदि के द्वारा आत्मा को निर्मल बनाने की प्रेरणा दी।

खाद्य संयम दिवस- उत्तराध्ययन सूत्र के २२वें अध्याय का वाचन हुआ। आचार्य तुलसी द्वारा रचित समता रो समंदर आख्यान का वाचन हुआ। देवकी के छह पुत्रों का वर्णन बहुत ही मार्मिक तरीके से प्रस्तुत किया गया। साध्वी शीलयशाजी, साध्वी सलिलयशाजी, साध्वी विदितप्रभाजी ने खाद्य संयम पर प्रस्तुति दी। **स्वाध्याय दिवस-** स्वाध्याय का महत्व बताया गया। भगवान महावीर की अंतिम देशना उत्तराध्ययन और विपाक सूत्र में से संबंधित विषय का वाचन किया गया। साध्वीश्री द्वारा हाजरी का वाचन किया गया। संघीय मर्यादा एवं अनुशासन की जानकारी दी। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं के द्वारा मंगलाचरण किया गया। रात्रिकालीन कार्यक्रम संगीत संध्या का रहा।

सामायिक दिवस- महावीर के भवों का वर्णन साध्वी शीलयशाजी द्वारा बताया गया। अभिनव सामायिक का क्रम रहा, जिसमें सामायिक के अंतर्गत ध्यान, जप, स्वाध्याय आदि का क्रम रहा। मंगलाचरण तेयुप सदस्यों द्वारा किया गया। शासनश्री साध्वी धनश्रीजी द्वारा २२वें अध्ययन के अंतर्गत आगे का वर्णन बताया गया। समता रो समंदर आख्यान का वाचन हुआ। रात्रिकालीन कार्यक्रम 'आचार्य महाश्रमण के पुरुषार्थ की कहानी सुनाएं' विषय पर अनेक भाई-बहिनों ने गीत, वक्तव्य आदि के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी। संचालन साध्वी सलिलयशाजी ने किया। साध्वी शीलयशाजी ने मोहन से मुदित और मुदित से महाश्रमण तक का जीवन वृतांत बताया। साध्वी विदितप्रभाजी ने कविता के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी। **वाणी संयम दिवस-** साध्वी शीलयशाजी द्वारा भगवान महावीर के भवों का वर्णन बहुत ही रोमांचक तरीके से प्रस्तुत किया गया। शासनश्री साध्वी धनश्रीजी ने उत्तराध्ययन के आगे के क्रम को बढ़ाया। चंदन की चुटकी आख्यान का वाचन हुआ। मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों द्वारा किया गया। रात्रिकालीन कार्यक्रम का विषय 'जानें-पहचानें तीर्थंकरों का जीवन दर्शन' विषय पर अनेक भाई-बहिनों ने अपनी प्रस्तुति दी।

अणुव्रत चेतना दिवस- शासनश्री साध्वी धनश्रीजी ने उत्तराध्ययन के २२वें अध्ययन के अंतर्गत अरिष्ठनेमी की वैराग्य भावना और वीरता का वर्णन किया। चंदन की चुटकी के आख्यान क्रम को आगे बढ़ाया गया। मंगलाचरण अणुव्रत समिति के सदस्यों द्वारा किया गया। शासनश्रीजी द्वारा अणुव्रत के ११ नियमों का उच्चारण सहित संकल्प करवाया गया। रात्रिकालीन कार्यक्रम 'विविध भारती' विषय पर अनेक भाई बहिनों ने गीत, कविता, कहानी आदि की प्रस्तुतियां दी। संचालन धर्मचंद जैन ने किया। **जप दिवस-** साध्वी शीलयशाजी ने भगवान के आगे के भवों का वर्णन विस्तार से बताया। शासनश्रीजी ने उत्तराध्ययन के २२वें अध्याय एवं चंदन की चुटकी आख्यान क्रम को आगे बढ़ाया। शासनश्रीजी ने जप की महत्ता का वर्णन किया। अधिक से अधिक जप करने की प्रेरणा दी। मंगलाचरण कन्या मंडल द्वारा किया गया। रात्रिकालीन कार्यक्रम 'तेरापंथ की यशस्वी साध्वी परंपरा' विषय पर साध्वियों द्वारा अनेक साध्वियों का जीवन वृतांत सुनाया गया।

ध्यान दिवस- भगवान महावीर के भवों का वर्णन किया गया। साध्वीश्रीजी ने अधिक से अधिक ध्यान करने की प्रेरणा दी। मंगलाचरण प्रेक्षा वाहिनी की बहनों द्वारा किया गया। चंदन की चुटकी आख्यान क्रम को आगे बढ़ाया गया। रात्रिकालीन कार्यक्रम अंताक्षरी के अंतर्गत अनेक भाई-बहिनों ने भाग लिया।

संवतसरी महापर्व- शासनश्री साध्वी धनश्रीजी ने कहा कि यह पर्व आध्यात्मिक विकास का पर्व है। संवत्सरी पर्व का महत्व बताते हुए उन्होंने कहा कि कमजोर व्यक्ति न क्षमा मांग सकता है न क्षमा कर सकता है। यह पर्व मन की चिकित्सा का पर्व है।

क्षमापना दिवस- श्रावक समाज ने आचार्य प्रवर से क्षमायाचना की। तत्पश्चात साध्वी प्रमुखाश्रीजी, मुख्य मुनिश्री, साध्वीवर्याजी, विराजित साध्वीवृंद एवं समस्त चारित्रात्माओं से क्षमायाचना करते हुए परस्पर एक दूसरे से क्षमायाचना की। शासनश्री साध्वी धनश्रीजी ने क्षमापना दिवस के महत्व को उजागर करते हुए इस दिन के संदेश को आत्मसात करने की प्रेरणा दी। तेरापंथी महासभा से गजराज बोथरा, तेरापंथी सभा अध्यक्ष संजय बोथरा, मंत्री धरमचंद जैन, पूर्व अध्यक्ष रतनलाल जैन, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष मंजू सुराणा, मंत्री सुप्रिया हीरावत, अणुव्रत समिति अध्यक्ष रविप्रकाश बुच्चा, मंत्री भूपेंद्र बरड़िया, तेयुप अध्यक्ष आशीष सुराणा, मंत्री कमलेश जैन ने क्षमायाचना के स्वर प्रस्तुत किए।

अणुव्रत समिति द्वारा चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन

लाडनूं

अणुव्रत समिति के तत्वावधान में अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के अन्तर्गत स्थानीय ज्ञानशाला के बच्चों के बीच वृद्ध साध्वी सेवा केंद्र में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन साध्वी लक्ष्यप्रभाजी के सान्निध्य में किया गया। साध्वीश्री ने पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि अणुव्रत समिति द्वारा समय-समय पर विविध कार्यक्रम आयोजित कर रचनात्मक चिंतन को बढ़ावा दिया जा रहा है। अणुव्रत समिति के संरक्षक शांतिलाल बैद की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जयपुर प्रवासी समाजसेवी विनोद पटावरी व विशिष्ट अतिथि श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के मंत्री महेंद्र बाफना थे। समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ. वीरेंद्र भाटी मंगल ने समिति की गतिविधियों को रेखांकित करते हुए अणुव्रत क्रिएटिविटी प्रतियोगिता की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर चित्रकला प्रतियोगिता में कुल ३६ विद्यार्थियों ने सहभागिता की। प्रतियोगिता में कनिष्ठ वर्ग में प्रथम स्थान पर हिमांशु बेगवानी, द्वितीय स्थान पर आस्था कठोतिया व तृतीय स्थान पर पार्थ बैद रहे। इसी प्रकार वरिष्ठ वर्ग में प्रथम स्थान पर वान्या जैन, द्वितीय स्थान पर भावना चौपड़ा व तृतीय स्थान पर हार्दिक भंसाली रहे। सभी विजेता प्रतियोगियों को अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया। सभी प्रतिभागियों को अणुव्रत समिति की ओर से प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया।

प्रतियोगिता में सभी बच्चों की उत्साहपूर्ण सहभागिता रही। सभी बच्चों ने अपनी कल्पना से पर्यावरण पर रंगों से एक से बढ़कर एक शानदार चित्र उकेरे। प्रतियोगिता के निर्णायक शिक्षाविद् मधु नाहटा व शिक्षिका निकिता सोनी थे। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए शांतिलाल बैद ने सभी का आभार प्रकट किया। संगठन मंत्री नवीन नाहटा ने गीत प्रस्तुत किया। मंत्री अब्दुल हमीद मोयल ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर समिति उपाध्यक्ष सपना जैन भंसाली, कोषाध्यक्ष प्रेम बैद, रामसिंह, राजेश नाहटा, विनित बोथरा, अनिता चौरड़िया, मंजू बैद, मीनाक्षी दूगड़ आदि उपस्थित थे।

अनुशासनप्रिय और सिद्धांतवादी थे आचार्य कालूगणी

साउथ कोलकाता

मुनि जिनेशकुमारजी के सान्निध्य एवं तेरापंथी सभा साउथ कोलकाता के तत्वावधान में आचार्यश्री कालूगणी की पुण्यतिथि तेरापंथ भवन में मनाई गई। इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमारजी ने कहा कि आचार्यश्री कालूगणी तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टम् अधिशास्ता व डालगणी के सक्षम पट्टधर थे। उनका बहुआयामी व्यक्तित्व था। वे ज्ञानी, व्याख्यानी, कुशल प्रशासक, निस्पृह साधक, सिद्धान्तवादी, आचार कुशल, विनीत, पापभीरू आत्मार्थी दयाल थे। उनका जन्म राजस्थान के छापर शहर में हुआ। उनके पिता का नाम मूलचंदजी कोठारी व मातुश्री साध्वी छोगांजी था। केवल दस वर्ष की उम्र में पंचम् आचार्य मघवागणी के कर-कमलों से संयम धन प्राप्त किया। जैन आगमों का तल-स्पर्श अध्ययन किया। आचार्यश्री बनने के बाद संस्कृत व्याकरण का भी अध्ययन किया। वे प्रभावशाली व असीम पुण्यशाली आचार्य थे। उनके शासनकाल में अनेकों दीक्षाएं हुई।

मुनिश्री ने आगे कहा कि आचार्य कालूगणी द्वारा दीक्षित दो मुनि तुलसीरामजी, मुनि नथमलजी तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य बने। मुनिश्री ने आगे कहा कि आचार्यश्री कालूगणी ने साधु-साध्वियों को देशाटन भी कराया, जिसमें धर्मसंघ की अत्यधिक प्रभावना हुई। वे जन-जन के रखवारे थे। निर्भीक चेतना के धनी थे। वे सिद्धान्त के साथ कभी समझौता नहीं करते थे। वे अनुशासन प्रिय थे। भाद्रव सुदी षष्ठी के दिन राजस्थान के भीलवाड़ा जिले के गंगापुर में अनशन में महाप्रयाण हुआ।

मुनि परमानंदजी ने विचार रखे। मुनि कुणालकुमारजी ने गीत की प्रस्तुति दी। तेरापंथी सभा अध्यक्ष विनोद चोरड़िया ने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंदजी ने किया।

ज्ञानशाला दिवस का आयोजन

चेन्नई

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, चेन्नई के तत्वावधान में ज्ञानशाला दिवस साहूकारपेट भवन में साध्वी लावण्यश्रीजी के पावन सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ। साध्वीश्रीजी ने मंगल उद्‌बोधन में ज्ञानार्थियों को अनेक प्रकार की प्रेरणा प्रदान करते हुए कहानी के माध्यम से स्वयं से संबंधित कार्य स्वयं ही करने की सीख दी। उपाध्यक्ष मनोहरलाल हिरण ने स्वागत वक्तव्य में ज्ञानशाला परिवार को बधाई संप्रेषित करते हुए कार्यक्रम के प्रति शुभकामना व्यक्त की। निवर्तमान सभाध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया ने ज्ञानशाला परिवार की प्रशंसा करते हुए अपने विचारों की अभिव्यक्ति में ज्ञानशाला के और अधिक विकास पर बल दिए जाने की बात कही। ज्ञानशाला आंचलिक सहसंयोजक कविता रायसोनी तथा ज्ञानशाला प्रभारी सुरेश तातेड़ ने वक्तव्य दिया।

मंचीय प्रस्तुति में ज्ञानार्थियों ने ५ गीतों पर नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति दी। चंद्रयान नाटिका की अभिनव प्रस्तुति के माध्यम से मोक्ष की यात्रा का काल्पनिक स्वरूप प्रस्तुत किया, जिसे उपस्थित जन समुदाय की अत्यंत सराहना प्राप्त हुई। प्रशिक्षिकाओं ने सामूहिक गीत तथा हमारी ज्ञानशाला हमारी पहचान विषय पर सुंदर प्रस्तुति दी। इस अवसर पर प्रशिक्षिकाओं ने संकल्प ग्रहण किये तथा ज्ञानार्थियों की रैली भी आयोजित की गई। साध्वीश्रीजी ने ज्ञानार्थियों से अनेक प्रश्नोत्तर किये। उत्तर देने वाले ज्ञानार्थियों को सभा द्वारा पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन दमयंती बाफना, अमिता रांका, सपना सेठिया व पिंकी सालेचा ने किया। कार्यक्रम के व्यवस्था पक्ष में ज्ञानशाला के कर्मठ कार्यकर्ता कमल श्यामसुखा, पवन मांडोत, देवेंद्र सुराणा, पुखराज पारख, भरत मरलेचा आदि का पूर्ण सहयोग रहा। धन्यवाद ज्ञापन सभा सहमंत्री देवीलाल हिरण ने किया। कार्यक्रम में श्रावक समाज की गरिमामय उपस्थिति के मध्य १६ ज्ञानशाला शाखाओं से २५५ ज्ञानार्थी व ८५ प्रशिक्षकों की सहभागिता रही।

साधना रूपी शरीर को ठीक करने के लिए प्रायश्चित रूपी चिकित्सा की आवश्यकता होती है। प्रायश्चित का अर्थ है अपने दोषों का स्मरण करना उसका शुद्धिकरण करना।

-आचार्यश्री महाश्रमण

धर्माराधना का सर्वोत्कृष्ट पर्व है- पर्युषण

छापर

भिक्षु साधना केन्द्र के सभागार में शासनश्री मुनि विजयकुमारजी के सान्निध्य में पर्युषण पर्व मनाया गया।

खाद्य संयम दिवस के रूप में प्रथम दिन की आराधना की गई। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के बाद तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों ने मंगल गीत का संगान किया। तदनन्तर शासनश्री ने विषय का प्रतिपादन करते हुए कहा- 'पर्युषण पर्व विभाव से स्वभाव में आने की प्रेरणा देता है। भागदौड़ की जिंदगी में व्यक्ति अपने स्वभाव को भूलता जा रहा है। पर्युषण पर्व की नवाह्निक आराधना में यह विविध प्रयोग करके अपने आत्मभाव के निकट आने का प्रयास करता है। पर्युषण पर्व के प्रथम दिन की प्रेरणा है कि व्यक्ति खाने-पीने के पदार्थों का संयम करें। जो खाद्य संयम रखता है वह बहुत सारी बीमारियों से अपने आपको बचा लेता है।' पर्युषण पर्व की महत्ता पर मुनिश्री ने प्रेरक गीत प्रस्तुत किया।

स्वाध्याय दिवस पर मुनिश्री ने प्रारंभ में गीत का संगान किया। फिर विषय का प्रतिपादन करते हुए उन्होंने कहा- 'स्वाध्याय को आभ्यन्तर तप में लिया गया है। व्यक्ति जैसे-जैसे सद्ग्रंथों का अध्ययन करता है, वह अपने भीतर झांकने लगता है। अपने कर्त्तव्य, अकर्त्तव्य, हेय और उपादेय का उसे बोध होने लगता है। उसकी जीवन शैली प्रशस्त बन जाती है। आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ और आचार्य महाश्रमण का विपुल साहित्य आज उपलब्ध है, उसका सतत अध्ययन व्यक्ति के जीवन को स्वस्थ और समाधिस्थ बना सकता है।'

सामायिक दिवस के उपलक्ष्य में शासनश्री मुनिवर ने कहा- 'सामायिक अंतर्मुखता की साधना है। गृही जीवन जीने वाला व्यक्ति सामान्यतया बहिर्मुखी जीवन जीता है। उसी का परिणाम है कि अनेक प्रकार की परिस्थितियों का उसे आए दिन सामना पड़ता है। सामायिक ४८ मिनट की साधना है। विधिपूर्वक व्यक्ति उसकी आराधना कर लेता है तो वह एक सामायिक भी उसके लिए बड़ी उपलब्धिपूर्ण हो जाती है। संभव हो सके तो प्रतिदिन श्रावक एक सामायिक का लक्ष्य रखे अन्यथा परम पूज्य आचार्य महाश्रमणजी द्वारा निर्दिष्ट हर शनिवार को अवश्यमेव सामायिक करने का संकल्प ले।'

वाणी संयम दिवस पर गीत का संगान करके मुनिश्री ने फरमाया- 'एक इन्द्रिय धारी जीवों के अलावा सभी जीवों को भाषा का योग सुलभ है किंतु जो व्यक्त भाषा मनुष्य को प्राप्त है, वह किसी अन्य प्राणी को नहीं है। भाषा एक वरदान है जिसका सम्यक् प्रयोग करके व्यक्ति सबका प्रिय बन सकता है। जो भाषा का सही प्रयोग करना नहीं जानते वे दूसरों के लिए अप्रिय बन जाते हैं, भाषा उनके लिए अभिशाप तुल्य बन जाती है। भगवान महावीर ने भाषा का विवेक देते हुए कहा कि 'नापुठ्ठो वागरे किंचि', बिना पूछे नहीं बोलें, जो अनावश्यक बोलता है, वह अपना सम्मान स्वयं खो देता है। आवश्यक होने पर भी संयत और सत्य भाषा का प्रयोग कर, कटुता पैदा करने वाली फूहड़ भाषा से व्यक्ति बचा रहे।'

अणुव्रत चेतना दिवस का प्रारंभ अणुव्रत गीत से हुआ। मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में अणुव्रत की महत्ता पर प्रकाश डालते हुआ बताया कि अणुव्रत नैतिक और चारित्रिक बल को उजागर करने वाला आचार्यश्री तुलसी का एक अनुपम अवदान है। सदियों की गुलामी के बाद जब देश आजाद हुआ, नए भारत के निर्माण की ओर हमारे नेताओं का ध्यान गया तब निर्माणमूलक अनेक योजनाएं सामने आई। गुरुदेव श्री तुलसी को एक अभाव खटकने लगा, वह था नैतिक निष्ठा का। उस महापुरुष ने अनुभव किया, बिना नैतिक निष्ठा के इन योजनाओं की सफलता संदिग्ध है। उन्होंने अणुव्रत की परिकल्पना प्रस्तुत की। पदयात्राएं की और लाखों-लाखों व्यक्तियों तक अणुव्रत का संदेश पहुंचाया। राष्ट्र के कर्णधारों ने उनकी इस योजना को पसंद किया। सामान्य से लेकर विशिष्ट श्रेणी के अनेकानेक व्यक्तियों ने अणुव्रत की आचार संहिता को अपने जीवन में उतारने का प्रयास किया, व्यसन मुक्त और स्वस्थ जीवन जीने का संकल्प लिया।

जप दिवस पर बोलते हुए मुनिश्री ने कहा- 'जप मंत्र शक्ति का प्रयोग है। मंत्र सशक्त होना जरूरी है। साथ ही प्रयोक्ता की उस मंत्र के प्रति आस्था, चित्त की निर्मलता, निरंतरता भी जरूरी है। संस्कृत भाषा में एक सूक्त है-'जपतो नास्कि पातकं' जप करने वाला व्यक्ति बहुत सारे पापों से अपने आपको बचा लेता है। इसके लिए आवश्यक है- मंत्र सात्त्विक हो, प्रयोक्ता के मन में किसी के प्रति दुर्भावना न हो।'

ध्यान दिवस पर बोलते हुए शासनश्री ने कहा- 'हमारे मन का स्वभाव है- भटकना। वह एक जगह टिककर नहीं रहता। ध्यान का प्रयोग करते समय साधक उसे एक आलंबन स्थिर होकर रहने का निर्देश देता है। आचार्य महाप्रज्ञजी ने प्रेक्षाध्यान के अंतर्गत अनेक आलम्बन सुझाए हैं, जैसे- रंग, केन्द्र, मंत्र, श्वास आदि। ध्यान की प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति धीरे-धीरे अपने मन को साध लेता है। साधा हुआ मन व्यक्ति को परेशान नहीं करता। वह मित्र तुल्य बन जाता है। ध्यान निरालंबन भी होता है किंतु वह हर एक के लिए संभव नहीं है। प्रारंभिक भूमिका में सालम्बन ध्यान ज्यादा उपयोगी होता है।'

संवत्सरी महापर्व के संदर्भ में बोलते हुए शासनश्री ने कहा- 'धर्माराधना का यह सर्वोत्कृष्ट पर्व है। यह दुनिया के पर्वों में अपनी विलक्षण पहचान बनाए हुए है। अन्य पर्वों में खान-पान, मनोरंजन आदि प्रवृत्तियों पर कोई प्रतिबंध नहीं होता है किंतु संवत्सरी महापर्व पर इन सब प्रवृत्तियों पर रोक लग जाती है। छोटे-छोटे बच्चे भी आज के दिन उपवास रखते हैं। ग्रंथिमुक्त होकर इस पर्व की सम्यक् आराधना की जा सकती है। व्यक्ति किसी के साथ वैर-विरोध नहीं रखे, यह इस पर्व की प्रेरणा है। सबके साथ मैत्री भाव का विकास करके ही व्यक्ति अपनी सम्यक्त्व को सुरक्षित रख सकता है।' संवत्सरी महापर्व पर मुनिश्री ने भगवान महावीर के जीवन प्रसंग व उत्तरवर्ती आचार्यों के जीवन चरित्र का प्रतिपादन किया।

क्षमापना दिवस पर बोलते हुए मुनिश्री ने कहा- 'क्षमापना मन को हल्का करने की प्रक्रिया है। स्वस्थ रहने के लिए शरीर से हल्का होना जरूरी है किंतु इतना ही पर्याप्त नहीं है। व्यक्ति का मन अगर भारी रहता है तो शरीर से हल्का होकर भी वह बीमारियों को बुला लेता है। व्यक्ति समूह में जीता है, सबके मन का चाहा हो, यह जरूरी नहीं। जो समता से हर स्थिति को सहना सीख जाता है, उस व्यक्ति का जीवन सुखी बन जाता है। अगर किसी बात को लेकर तनाव की स्थिति बन जाए तो संवत्सरी का प्रतिक्रमण करके क्षमा याचना कर लेनी चाहिए। सामने वाला व्यक्ति क्षमा न करे तो भी व्यक्ति अपना आत्मधर्म समझ करके शुद्ध हृदय से क्षमा करके अपने को हल्का बना लें।'

संवत्सरी व क्षमापना दिवस पर मुनि दिनकरजी, मुनि आत्मानंदजी, मुनि रमणीयकुमारजी ने अलग-अलग विषयों पर अपनी प्रस्तुति दी। स्थानीय तेरापंथी सभा मंत्री चमन दुधोड़िया, तेरापंथी सभा प्रवक्ता प्रदीप सुराणा, तेरापंथ महिला मंडल, दीक्षार्थिनी सुमन बैद, शोभा, हेमा, सपना, सरोज देवी भंसाली, सुनीता, सुमन भूतोड़िया, नरेन्द्र दुधोड़िया, मास्टर हुक्माराम, गजराज दुधोड़िया सुजानगढ़-दिल्ली से विनोद भंसाली, सूरजमल नाहटा, प्रिया दुधोड़िया, राजु नाहटा, सरोज दुधोड़िया ने पर्युषण के दिनों में गीत व भाषण के द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। रात्रिकालीन प्रतिक्रमण व सप्तदिवसीय जप का क्रम नियमित रूप से चला। क्षमापना दिवस पर भाई छतर नाहटा ने १३ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

कृष्णानगर, दिल्ली

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी के पावन सान्निध्य में पर्युषण महापर्व की आराधना की गई। पर्युषण महापर्व के **प्रथम दिवस** खाद्य संयम दिवस पर मुनिश्री ने भगवान महावीर के जीवनी पर व्याख्यान आरम्भ करते हुए फरमाया कि पर्युषण आत्मा के समीप रहने का समय है। श्रावक इस समय अधिक से अधिक जप-तप-संयम की आराधना का लक्ष्य बनाये। तेरापंथ युवक परिषद् ने गीतिका का संगान किया, रात्रिकालीन कार्यक्रम में मुनिश्री के सान्निध्य में खाद्य संयम पर विशेष वक्तव्य रखा गया, जिसका संचालन अरिहंत सुराणा ने किया।

द्वितीय दिवस स्वाध्याय दिवस पर पूर्वी दिल्ली तेरापंथ महिला मंडल द्वारा गीतिका का संगान किया गया एवं रात्रि में स्वाध्याय पर विशेष वक्तव्य रखा गया, जिसका संचालन हितेश दुगड़ ने किया। **तृतीय दिवस** सामायिक दिवस के अवसर पर मुनिश्री ने अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया एवं श्रावक के जीवन में सामायिक की महत्ता से अवगत करवाया। तेरापंथ युवक परिषद् की आयोजना में सामायिक हुई। तेयुप द्वारा सामायिक गीतिका का संगान किया गया। साथ ही साथ तपस्वी मुनि नमिकुमारजी की ३७ की तपस्या का तप-अनुमोदन का कार्यक्रम भी आयोजित हुआ। रात्रि के समय सामायिक पर विशेष वक्तव्य रखा गया, जिसका संचालन अनिल बोथरा ने किया।

चतुर्थ दिवस वाणी संयम दिवस के अवसर पर ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा सुमधुर गीतिका का संगान हुआ। रात्रि के समय सामायिक पर विशेष वक्तव्य रखा गया, जिसका संचालन बजरंग कुण्डलिया ने किया। **पंचम दिवस** अणुव्रत चेतना दिवस पर विकास मंच के द्वारा गीतिका का संगान हुआ। रात्रि के समय अणुव्रत पर विशेष वक्तव्य रखा गया, जिसका संचालन पवन जैन ने किया।

पर्युषण के **षष्ठम दिवस** जप दिवस पर मुनिश्री ने सुमधुर गीतिका का संगान करते हुए जप की जीवन में महत्ता के बारे में बताया। रात्रि के समय जप पर विशेष वक्तव्य रखा गया, जिसका संचालन राकेश बैद ने किया। **सप्तम दिवस** ध्यान दिवस पर मुनिश्री ने फरमाया कि ध्यान के महत्व को बताते हुए कहा कि ध्यान करने से व्यक्ति अपने जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

अष्टम दिवस संवत्सरी महापर्व पर मुनिश्री ने अपने अथक प्रवचन में भगवान महावीर के जीवन, दिगम्बर, मूर्तिपूजक, स्थानकवासी परम्पराओं का बोध देते हुए, तेरापंथ धर्मसंघ के यशस्वी आचार्यों की जीवन गाथाओं की क्रमशः जानकारी करवायी। साध्वी प्रमुखाओं एवं विशिष्ट साधु-साध्वियों की जीवन व घटनाओं के श्रवण से श्रावक समाज लाभान्वित हुआ।

क्षमापना दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुनिश्री ने आचार्य प्रवर, साध्वी प्रमुखाश्रीजी, मुख्यमुनिश्री, साध्वीवर्याजी एवं समस्त चारित्रात्माओं सहित श्रावक समाज से खमत खामणा किया। सभी श्रावकों ने मुनिश्री एवं सहवर्ती संतों से खमत-खामण किया। इस अवसर पर विकास मंच अध्यक्ष दीपचंद सुराणा एवं गाँधीनगर सभाध्यक्ष कमल गांधी द्वारा सभी संस्थाओं की तरफ से सभी को खमत-खामणा किया गया। मुनिश्री के बहुमूल्य श्रम एवं पावन प्रेरणा एवं कार्यकर्ताओं के निष्काम सहयोग से पर्युषण महापर्व की आराधना में श्रावकों ने बढ़-चढ़ कर सहभागिता की।

१४३वां जयाचार्य निर्वाण दिवस मनाया गया

बीदासर

समाधि केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी रचनाश्रीजी के सान्निध्य में १४३वां जयाचार्य निर्वाण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर साध्वीश्रीजी ने फरमाया कि तेरापंथ के चतुर्थ आचार्य श्रीमद्जयाचार्य अध्यात्म वेत्ता थे, तत्व वेत्ता थे। वे एक चमत्कारिक पुरुष थे। जयाचार्य की शरीर संरचना में अग्नितत्व की प्रधानता थी। जयाचार्य का पदारोहण कार्यक्रम दो बार मनाया गया। अग्नितत्व-अनुशासन का प्रतीक है। दो बार पदारोहण मनाने के पीछे कारण था अनुशासन का प्रयोग और दोनों ही कार्यक्रम बीदासर में मनाये गये।

साध्वी जयन्तयशाजी और शासनश्री साध्वी किरणमालाजी ने गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी सन्मतिश्रीजी, साध्वी लब्धियशाजी और साध्वी ऋजुप्रभाजी ने विचार प्रस्तुत किए। साध्वीवृंद ने सुमधुर गीत का संगान किया। मंगलाचरण शासनश्री साध्वी विमलप्रभाजी ने किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कौशलप्रभाजी ने किया।

धार्मिक आराधना से करें आत्मा का कल्याण : आचार्यश्री महाश्रमण

२२ सितम्बर २०२३

तेरापंथ टाइम्स ऑनलाइन पढ़ने के लिए terapanthtime.com

नन्दनवन, मुम्बई

महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र के सोलहवें शतक के छठे उद्देशक में बताया गया है कि आदमी सोता है, नींद लेता है, कई बार स्वप्न भी आते हैं। प्रश्न किया गया है कि भंते! जीव स्वप्न सुप्त अवस्था में देखता है, जागृत अवस्था में देखता है या सुप्त- जागृत अवस्था में देखता है? उत्तर दिया गया गौतम! सुप्त अवस्था में स्वप्न नहीं देखा जा सकता और जागृत अवस्था में भी स्वप्न नहीं देखा जा सकता। मध्यम अवस्था सुप्त-जागृत अवस्था में जीव को स्वप्न का दर्शन हो सकता है। आदमी पूरी तरह जगा हो अथवा गाढ़ी निद्रा में हो तो स्वप्न नहीं देख सकता।

प्रश्न किया गया स्वप्न दर्शन कितने प्रकार का होता है? स्वप्न दर्शन पांच प्रकार का होता है- १ यथातथ्य, २ प्रतान, ३ चिन्ता, ४ तद्‌विपरीत, ५ अव्यक्त दर्शन। यथातथ्य कोटि का जो स्वप्न होता है, वह यथार्थ होता है, उसका फल मिल सकता है। प्रतान में आदमी विस्तार से स्वप्न देखता है। चिन्ता स्वप्न में जागृत अवस्था में जो विचार किया, सुन लिया, देख लिया, पढ़ लिया, वे बाते स्वप्न में दिखने लगती है। तद्-विपरीत में जो स्वप्न में देखता है, उसका उल्टा फल मिलेगा। अव्यक्त दर्शन अस्पष्ट सा होता है, पूरा साफ नहीं दिखाई देता है। इसके अतिरिक्त और भी अनेक स्वप्न के प्रकार हो सकते हैं, अनेक दृश्य हो सकते हैं।

सारे स्वप्न सही होंगे, यह जरूरी नहीं है। स्वप्न तो निद्रा से जुड़ी बात है। ज्यादा स्वप्न परेशान करे तो सात लोगस्स का पाठ कर लें। स्वप्न आधार ले लें। स्वप्न से डरकर जाग गये तो भी उस समय भी लोगस्स का पाठ कर लें। स्वप्न को ज्यादा महत्व न दें। समता और शान्ति का प्रयोग करना चाहिये। स्वप्न दर्शन हमारे जीवन के साथ जुड़ा हुआ है। पित्त-विकार से भी स्वप्न आ सकते हैं। नवकार मंत्र का पाठ कर सकते हैं। स्वप्न दर्शन से आदमी आर्तध्यान में न जाये, धार्मिक आराधना करे, जिससे आत्मा का कल्याण भी हो सकता है।

अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने अभातेयुप द्वारा दिए जाने वाले पुरस्कार/अलंकरणों की घोषणा की। उन्होंने वर्ष २०२३ के युवा गौरव अलंकरण हेतु अभातेयुप कोषाध्यक्ष चेन्नई प्रवासी भरत मरलेचा, वर्ष २०२३ के आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार हेतु लाडनूं निवासी अमेरिका प्रवासी अजय भूतोड़िया एवं वर्ष २०२३ के आचार्य महाश्रमण युवा व्यक्तित्व पुरस्कार हेतु अहमदाबाद प्रवासी डॉ. धवल दोशी के नाम की घोषणा की।

पूज्यवर से तपस्वियों ने अपने धारणानुसार तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। चेम्बूर के आमदार प्रकाश वैकुंठ फातर्पेकर ने अपनी भावना अभिव्यक्ति की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमारजी ने किया।

खमत-खामणा विद्वेष की ग्रन्थि को . . .

पृष्ठ १६ का शेष ...

हमें सब जीवों के साथ मैत्री का भाव रखना है, सहिष्णुता को बढ़ाना है।

मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी ने फरमाया कि हम हर बात को पकड़े नहीं, अग्रहण की साधना करें। सार की बात ही ग्रहण करें। क्षमापना के दिवस पर हम औरों की भूलों को क्षमा करें। जिनको हमारे द्वारा ठेस पहुंची है, उनसे क्षमायाचना कर अपने आप को शुद्ध बनायें। परम पूज्य गुरुदेव से भी हम क्षमा की प्रेरणा लें।

पूज्यवर के मंगल उद्‌बोधन के पश्चात साध्वी समाज की ओर से साध्वी जिनप्रभाजी आदि सभी साध्वियों ने पूज्यवर, मुख्यमुनि प्रवर एवं साधुओं से खमत-खामणा किया। साधुओं की ओर से मुनि दिनेशकुमारजी एवं सभी सन्तों ने पूज्यवर एवं साध्वी प्रमुखाश्रीजी एवं सभी साध्वियों से खमत-खामणा किया। श्रावक समाज की ओर से किशनलाल डागलिया आदि सम्पूर्ण श्रावक समाज ने पूज्यवर एवं समस्त चारित्रात्माओं से खमत-खामणा किया। सभी श्रावक-श्राविका समाज ने एक दूसरे से खमत-खामणा किया। पूज्यवर ने श्रावक समाज को एक वर्ष में व्रतों में लगे दोष की आलोचना के रूप में तीन उपवास और इक्कीस नमस्कार मंत्र की माला की आलोयणा फरमाई।

आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति, मुंबई की ओर से अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, भोजनशाला व्यवस्था संयोजक महेन्द्र तातेड़, आवास व्यवस्था संयोजक संदीप कोठारी, जैन विश्व भारती की ओर से अध्यक्ष अमरचंद लूंकड़, पारमार्थिक शिक्षण संस्थान की ओर से बजरंग जैन, अमृतवाणी की ओर से अध्यक्ष रूपचंद दुगड़, प्रेक्षा इंटरनेशनल की ओर से गौरव कोठारी, तेरापंथी सभा-मुम्बई की ओर से नवरतनमल गन्ना, तेरापंथ महिला मण्डल-मुम्बई की ओर से विमला कोठारी, अणुव्रत समिति-मुंबई की ओर से रोशनलाल मेहता, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम-मुंबई की ओर से राज सिंघवी ने परम पूज्य आचार्य प्रवर एवं समस्त चारित्रात्माओं से खमत-खामणा किया।

पूज्यवर द्वारा उद्‌घोषित भगवती संवत्सरी के बैनर का अनावरण चातुर्मास व्यवस्था समिति एवं श्रावक समाज की ओर से पूज्यवर की सन्निधि में किया गया। पूज्यवर ने आशीर्वचन प्रदान कराते हुए फरमाया कि यह भगवती संवत्सरी वर्ष में एक बार आने वाला कार्यक्रम है। कितनी धर्माराधना से जुड़ा यह दिन है। नौ दिन तक एक अच्छी आध्यात्मिक खुराक भी प्राप्त हो सकती है। व्यवहार, व्यापार, समाज या परिवार में कोई बात हो सकती है पर आज इस क्षमापना दिवस पर सभी का आपस में खमत-खामणा हो जाये। किसी पर झूठा आरोप न लगाया जाये। कटु बोलने का किसी से भी काम न पड़े। परिवार में भी समरसता रहे।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

जैन धर्म में नहीं होता संवत्सरी . . .

पृष्ठ १ का शेष ...

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को शिशु का जन्म हो जाता है। १२ दिन होने पर नामकरण किया जाता है। नाम रखा जाता है- वर्धमान। वर्धमान को शिक्षा के लिए भेजा गया। शादी भी हो जाती है। पुत्री के रूप में एक सन्तान भी हुई। नाना भी बन गये थे। दोहित्री का नाम शेषवती रखा गया था। वर्धमान के माता-पिता ने अनशन स्वीकार कर आयुष्य को पूर्ण किया। उसके बाद वर्धमान दीक्षा स्वीकार कर आत्म साधना में लग गये। विभिन्न रूपों में साधना कर आत्म कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। साढ़े बारह वर्ष की साधना के पश्चात केवल्य प्राप्त कर तीर्थ की स्थापना की। जगह-जगह विचरण कर लोक कल्याण का कार्य करते रहे। लगभग ७२ वर्ष की अवस्था में १६ प्रहर के अनशन में कार्तिक कृष्णा अमावस्या को प्रभु निर्वाण को प्राप्त हो गये। हम भगवान महावीर से जुड़े धर्मसंघ में साधना कर रहे हैं। हमारे धर्मसंघ का विकास होता रहे, हम सभी आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ते रहें।

तेरापंथ की यशस्वी आचार्य परंपरा को वर्णित करते हुए तेरापंथ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि जैन शासन में अनेक प्रभावक आचार्य हुए हैं। आचार्य सुधर्मा से लेकर अनेक आचार्य हुए हैं। आज से दो सौ साढ़े तिरेसठ वर्ष पूर्व जैन सम्प्रदाय में एक और शासन उभरा, जिसका नाम था- श्वेताम्बर परंपरा का तेरापंथ। पूज्यवर ने अपने पूर्व के दस आचार्यों के गौरवशाली और संघ प्रभावक व्यक्तित्व व कृतत्व को उजागर करते हुए उनके जीवन के गौरवशाली प्रसंगों को वर्णित किया।

साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने धर्मसंघ के ग्यारहवें आचार्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के समुज्ज्वल जीवन चरित्र एवं जीवन प्रसंगों को विस्तार से व्याख्यायित किया। मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी ने पाथेय प्रदान करवाया। साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने गीत का संगान किया। प्रवचन के मध्य निर्धारित समय पर छह प्रहरी पौषध करने वालों को इसका प्रत्याख्यान एवं तपस्वियों को उनकी धारणानुसार तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये गये।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

धर्म के क्षेत्र में उत्तम पुरुष होते हैं तीर्थंकर : आचार्यश्री महाश्रमण

२३ सितम्बर २०२३

तेरापंथ टाइम्स ऑनलाइन पढ़ने के लिए terapanthtime.com

नन्दनवन, मुम्बई

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भगवती सूत्र की विवेचना कराते हुए फरमाया कि प्रश्न किया गया है- 'भन्ते! सारे स्वप्न कितने प्रज्ञप्त हैं। कितने होते हैं?' उत्तर दिया गया- 'गौतम! कुल ७२ स्वप्न बताये गये हैं। इन ७२ स्वप्नों के भी दो विभाग हैं- महास्वप्न और सामान्य स्वप्न। महास्वप्न संख्या में ३० हैं, सामान्य स्वप्न ४२ बताये गये हैं। कई स्वप्न महत्वपूर्ण प्रतिष्ठित होते हैं। जैसे गजराज, मृगराज सिंह, वृषभ, अग्नि के स्वप्न को देखना। दुनिया में कुछ विशिष्ट पुरुष होते हैं। जैसे तिरेसठ श्लाका पुरुष। आगम में ५४ उत्तर पुरुष बताये गये हैं- २४ तीर्थंकर, १२ चक्रवर्ती, ९ वासुदेव और ९ बलदेव। धर्म के क्षेत्र में तीर्थंकर उत्तम पुरुष होते हैं। भौतिकता के क्षेत्र में ऐश्वर्य आदि भौतिक पदार्थ होते हैं। तीर्थंकरों का कुछ अतिशय, बाह्य विशिष्टता भी होती है। केवली तो सिर्फ धर्म के क्षेत्र में ही विशिष्ट होते हैं। वासुदेव बलदेव भाई-भाई होते हैं।

तीर्थंकर की माताएं जब तीर्थंकर गर्भ में प्रवेश करते हैं, तब १४ महास्वप्न देखकर जागृत होती हैं। चक्रवर्ती की माताएं भी १४ महास्वप्न देखती हैं। तीर्थंकर के समान ही भौतिक जगत के उच्च पुरुष चक्रवर्ती होते हैं। तीर्थंकर और चक्रवर्ती की माताओं के स्वप्न में कुछ अन्तर होता है। वासुदेव की माता ७ महास्वप्न देखती है। बड़ा आदमी दो प्रकार से हो सकता है- राजा बनना या तीर्थंकर बनना।

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु की मां दीपांजी ने भी सिंह का स्वप्न देखा था। जब आचार्य भिक्षु की दीक्षा की बात आई तो उनकी माता ने दीक्षा देने से यह कहकर मना कर दिया कि मैंने सिंह का स्वप्न देखा है तो मेरा पुत्र तो राजा बनेगा। बाद में उनके गुरु ने समझाया कि यह संत बनकर भी सिंह की तरह दहाड़ेगा, तब माता ने दीक्षा अनुमति दी। दीक्षा के पश्चात आगे चलकर किस प्रकार महामना आचार्यश्री भिक्षु ने धर्म क्रांति कर तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना की और हमारे आद्य प्रणेता, अनुशास्ता बन गए।

पूज्यवर से तपस्वियों ने अपनी-अपनी धारणा के अनुसार तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। तेरापंथ कन्या मंडल की कन्याओं द्वारा प्रस्तुति दी गई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमारजी ने किया।

क्षमापना दिवस

क्षमामूर्ति तीर्थंकर भगवान महावीर के प्रतिनिधि ने चतुर्विध धर्मसंघ से किया खमत-खामणा

क्षमापना के द्वारा खोलें मन की गांठें : आचार्य महाश्रमण

२० सितम्बर २०२३
नन्दनवन, मुम्बई

ऑनलाईन पढ़ने के लिए terapanthtime.com

क्षमा की प्रतिमूर्ति करूणा के महासागर परम् पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी ने क्षमापना दिवस पर प्रातः वृहद् मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। परम् प्रभु श्रमण महावीर एवं तेरापंथ के आद्यप्रवर्तक व उत्तरवर्ती आचार्य परम्परा को वन्दन करते हुए आचार्यवर ने फरमाया कि आगम वाणी में कहा गया है- क्षमा वीरस्य भूषणम्। क्षमा वीरों का भूषण है। वर्ष भर में किसी भी जीव के साथ कलुष व्यवहार हो गया हो तो संवत्सरी प्रतिक्रमण कर सभी से सरल हृदय से खमत-खामणा कर लेना चाहिये। आगम वाणी में कहा गया है कि जीव क्षमापना से क्या प्राप्त करता है? उत्तर दिया गया कि क्षमापना से आह्लाद भाव को जीव पैदा करता है। किसी के साथ कटु व्यवहार हो गया हो तो अंतर्मन से क्षमापना हो जाये। आह्लाद भाव को प्राप्त हुआ जीव सभी के साथ मैत्री भाव को उत्पन्न कर लेता है। उससे वह भाव विशोद्धि करके निर्भय बन जाता है। क्षमापना से लेकर निर्भयता की यह महत्वपूर्ण यात्रा है।

हमने पर्युषण की अष्टान्हिक आराधना की। कल तो शिखर दिवस भगवती संवत्सरी की आराधना हमने की। हमने इन आठ दिनों में धर्माराधना, आत्माराधना का प्रयास किया है। सब प्राणियों के प्रति मेरा मैत्री भाव है। खमत-खामणा विद्वेष की ग्रन्थि को खोलने का प्रयास है। बढ़िया तो यह है कि गांठ पड़े ही नहीं। खमत-खामणा जैन शासन का एक महत्वपूर्ण उपक्रम है। हम व्यवहार में संघबद्ध और समाज में जीने वाले हैं। साथ में रहते हैं, तो बात हो सकती है पर भगवती संवत्सरी पर सारा कलुष भाव दूर हो जाये। साधु-साध्वियों, समणियों, श्रावक-श्राविकाओं, अन्य धर्म के साधु-साध्वियों, राजनेताओं आदि अनेक लोगों से काम पड़ता है। कल प्रतिक्रमण कर लगभग सभी से खमत-खामणा कर लिया था।

सरलता के सुमेरु आचार्यश्री महाश्रमणजी ने साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी, मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी, साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी का नामोल्लेख करते हुए उनसे खमत-खामणा किया। पूज्यवर ने गुरुकुलवास के साधु-साध्वियों, बर्हिविहारी साधु-साध्वियों, समणी वर्ग से खमत- खामणा किया। मुमुक्षु बहिनों, मुमुक्षु भाईयों, उपासक श्रेणी, अन्य सम्प्रदाय के साधु-साध्वियों, चातुर्मास व्यवस्था समिति, धर्मसंघ की सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों, श्रावक-श्राविकाओं, गणमुक्त व्यक्तियों आदि सहित चतुर्विध धर्मसंघ से खमत-खामणा करते हुए पूज्यवर ने क्षमा की अमृतवर्षा की तो चतुर्विध धर्मसंघ ने भी अपने आराध्य को अत्यंत विनत भाव से वंदन करते हुए कृतज्ञता के स्वरों में खमत-खामणा किया। पूज्यवर ने औरंगाबाद की श्राविका तेजीबाई सुराणा की दिवंगत आत्मा से खमत-खामणा करते हुए उनकी आत्मा की आध्यात्मिक उन्नति की कामना की एवं उनके सुपुत्र सुरेन्द्र सुराणा से भी नामोल्लेख के साथ खमत-खामणा किया।

साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने फरमाया कि क्षमा परम शक्ति है, परम तप है, धर्म का मूल भी क्षमा ही है। कल्याण का रास्ता भी क्षमा है। तेरापंथ की आचार्य परम्परा क्षमा का मूर्त रूप है। आगे बढ़ने के लिए हम वैमनस्य को छोड़ें। हमें बाहर की गांठ के साथ भीतरी गांठ को भी खोलना है। क्षमापना का यही संदेश है कि हम वैमनस्य की ग्रन्थियों को खोलें।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने फरमाया कि जो मान का क्षय करता है, वही क्षमा कर सकता है। हमें अहंकार-ममकार को छोड़कर सरल हृदय से क्षमा याचना करनी है।

शेष पृष्ठ १५ पर...

नंदनवन मुम्बई, चातुर्मास

झलकियां...

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मैं. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक -**दिनेश मरोठी**